सम्पादक :—
श्री० रामरखसिंह सहगल

'भविष्य' का चन्दा

वार्षिक चन्दा ... ... ६) रु०
छः माही चन्दा ... ५) रु०
तिमाही चन्दा ... ... ३) रु०
एक प्रति का मूल्य ... ≡)
Annas Three Per Copy

सचित्र राष्ट्रीय साप्ताहिक

आध्यात्मिक स्वराज्य हमारा ध्येय, सत्य हमारा साधन और प्रेम हमारी प्रणाली है। जब तक इस पावन अनुष्ठान में हम अविचल हैं, तब तक हमें इसका भय नहीं, कि हमारे विरोधियों की संख्या और शक्ति कितनी है।

तार का पता :—
'भविष्य' इलाहाबाद

एक प्रार्थना

वार्षिक चन्दे अथवा फ़ी कॉपी के मूल्य में कुछ भी नुक़ताचीनी करने में पहिले मित्रों को 'भविष्य' में प्रकाशित अलभ्य सामग्री और उसके प्राप्त करने के असाधारण व्यय पर भी दृष्टिपात करना चाहिए !

वर्ष १, खण्ड २ | इलाहाबाद—बृहस्पतिवार; १ जनवरी, १९३१ | संख्या २, पूर्ण संख्या १४

यूरोपियन रमणी का भारतीय स्वतन्त्रता के लिए त्याग

बङ्गाल के सुप्रसिद्ध नेता श्री० सेन गुप्ता की धर्मपत्नी

श्रीमती नेली सेन गुप्ता

जो ३० अक्तूबर को दिल्ली में गिरफ़्तार हुई थीं

(आपका सविस्तर परिचय अन्दर देखिए)

वर्ष १, खण्ड २ | इलाहाबाद—वृहस्पतिवार—१ जनवरी, १९३१ | संख्या २, पूर्ण संख्या १४

दमन एवं स्वेच्छाचारिता का तांडव

क्या कर-बन्दी आन्दोलन भयङ्कर रूप धारण कर रहा है ?

'भविष्य' की ओर से सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट को नोटिस !

जेल में कई नेताओं की दशा चिन्ताजनक !

(३१ दिसम्बर की रात तक आए हुए 'भविष्य' के ख़ास तार)

—कहा जाता है कि इलाहाबाद ज़िले के सोराँव तहसील में जो करबन्दी का आन्दोलन चल रहा है, उसके सम्बन्ध में कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ता श्रीयुत मेवालाल जी गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—लगान न देने के कारण सूरत ज़िले के कई गाँवों में जो खेत ज़ब्त कर लिए गए हैं, उनमें लगी हुई फ़सल की रक्षा के लिए अतिरिक्त-पुलिस नियुक्त की गई है। सरकार को गुजरात में इतने अधिक खेतों की रक्षा करनी पड़ रही है, कि सरकारी रखवालों की कमी पड़ गई है। इसलिए सरकार अछूत जातियों के लोगों को इस काम के लिए नियुक्त कर रही है। तलाटियों को पहरेदार नियुक्त करने का अधिकार दिया गया है। टिम्बरवारा में इसी तरह के रखवाले फ़सल की रखवाली कर रहे हैं।

—कलकत्ते से ख़बर आई है कि २री अक्टूबर को दमदम जेल के राजनैतिक क़ैदियों ने महात्मा गाँधी का जन्म-दिवस मनाया था। इस सम्बन्ध में उन्होंने चरख़ा-प्रदर्शन भी किया था, जिसमें १ लाख गज़ सूत काता गया। यह सूत बाँकुरा में काता गया और इससे बनाया हुआ कपड़ा महात्मा जी के पास यरवदा जेल में भेजा गया। इस उपहार के उत्तर में महात्मा जी ने यह लिखा है—"आपके भेजे हुए खद्दर के थान मिले, इनको मैं बहुत ख़ुशी के साथ काम में लाऊँगा। मेरी ओर से मेरे सब सहयोगियों को धन्यवाद दीजिए। इन कपड़ों के मोटे होने के सम्बन्ध में आपको माफ़ी माँगने की कोई भी आवश्यकता नहीं है। हृदय की सरलता तथा कोमलता में ही कार्य का सौन्दर्य है। फिर मैं तो हरदम मोटे खद्दर ही को काम में लाता हूँ और मैं समझता हूँ कि चिकने और महीन कपड़े पहिनने में मुझे कुछ उलझन-सी मालूम होगी।"

—गत रविवार, ता० २८ दिसम्बर को स्थानीय जवाहर पार्क में श्रीमती उमा नेहरू ने राष्ट्रीय झण्डा फहराया और झण्डे के सम्बन्ध में जनता की ज़िम्मेदारी पर एक व्याख्यान भी दिया गया।

—पञ्जाब गवर्नर की हत्या करने की असफल चेष्टा में जो लोग गिरफ़्तार हुए थे, उनमें श्री० वीरेन्द्र और अहसान इलाही को १५ दिन तक हिरासत में रखने की अवधि बढ़ा दी गई है। श्री० वीरेन्द्र को 'जूडिशल लॉक अप' में रक्खा गया है।

श्री० अमरसिंह, जो 'क्रिमिनल एमेण्डमेण्ट' की रू से देहली में व्याख्यानादि देने के कारण गिरफ़्तार हुए थे, ८ रोज़ तक हिरासत में रखने के बाद छोड़ दिए गए हैं।

—'भविष्य' का ख़ास तार है, कि आज बम्बई में 'स्वतन्त्रता-दिवस' के उपलक्ष में जो वृहत् सभा हुई थी, उसका कार्य-क्रम हज़ारों की संख्या में अनेक भिन्न-भिन्न भाषाओं में मोटर द्वारा बाँटा गया था। बाँटने वाले लोग मोटर-द्वारा कहीं बाहर से आए थे। ये सारे ही पर्चे ज़ब्त कर लिए गए हैं। पुलिस के बहुत पीछा करने पर कहा जाता है, कि अब तक इस सम्बन्ध में बोरी-बन्दर पर ८ गिरफ़्तारियाँ हुई हैं। इन पर क्रिमिनल एमेण्डमेण्ट की दफ़ा १७ वीं के अनुसार अभियोग चलाया जायगा।

—बम्बई के विदेशी वस्त्र के व्यापारी श्रीयुत नगीनदास फूलचन्द ने ३१ दिसम्बर को विदेशी वस्त्र हटाने की कोशिश की। चार लॉरियों में विदेशी वस्त्र भरे गए थे, कि इसकी ख़बर लगते ही २ बजे रात में भी सत्याग्रही घटनास्थल पर जा पहुँचे और उन्होंने लॉरियों को रोकने का प्रयत्न किया। परन्तु मसजिद-बन्दर के स्टेशन मास्टर की सहायता से उस व्यापारी ने एक लॉरी स्टेशन के अन्दर कर ली। जब से यह घटना घटी है, ४ स्वयंसेवक इस व्यापारी के मकान पर माण्डवी में धरना दे रहे हैं और अनशन कर रहे हैं।

—'भविष्य' के सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक श्री० सहगल जी के वकील ने २७ दिसम्बर को स्थानीय कलक्टर की मार्फ़त सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट को इस मज़मून का नोटिस दिया है, कि 'भविष्य' के प्रथमाङ्क की लगभग २२,००० प्रतियाँ, जो बिना किसी कारण के जनरल पोस्ट ऑफ़िस में रोक ली गई थीं, उससे सहगल जी को अपार हानि हुई है, फिर भी वे नाम-मात्र का हर्जाना लेकर सन्तुष्ट हो सकते हैं, अतएव या तो आज से २ मास के भीतर आप १,०००) रु० हर्जाना-स्वरूप देने की कृपा करें, नहीं तो भविष्य में बिना दूसरा नोटिस दिए आप पर हर्जाने की नालिश दायर कर दी जायगी।

—आगामी रविवार ४थी जनवरी को स्थानीय मनमोहन पार्क (कटरा) में प्रातःकाल ८ बजे राष्ट्रीय झण्डा फहराया जायगा।

—श्री० सेन गुप्ता की रक्त-परीक्षा देहली के सिविल अस्पताल में हुई थी। मेजर एस्पिनल ने स्वयं आपकी परीक्षा की थी। कहा जाता है आपका रक्त-प्रवाह १६४ डिग्री है, जो चिन्ताजनक बतलाया जाता है! मेजर एस्पिनल का कहना है, कि इस बीमारी का कारण उनके दाँतों की शिकायत है। एक्स-रे द्वारा उनके दाँतों के कई चित्र भी लिए गए हैं।

—'भविष्य' का ख़ास तार है कि 'मोतिहारी षड्यन्त्र केस' की पेशी, जिसमें श्री० रामविनोदसिंह तथा श्री० जोगेन शुक्ल आदि सम्मिलित हैं, ५वीं जनवरी को जेल में ही होगी। कहा जाता है कि इस मामले के सम्बन्ध में लाहौर-षड्यन्त्र केस की वह सारी मिसलें तलब की गई हैं, जिनसे सरदार भगत-सिंह आदि का सम्बन्ध था!

—बम्बई में अभी बराबर पिकेटिङ्ग जारी है। ३० दिसम्बर को जो ३ महिलाएँ तथा १ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किया गया था, ३१ दिसम्बर को उनका मुक़दमा हुआ। दो स्त्रियों को ४ महीने की सादी सज़ा और एक लड़की को ३ मास की सादी सज़ा दी गई है। स्वयंसेवक को ६ महीने की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई है। एक और स्वयंसेवक को एक दिन की सज़ा हुई है। यह २९ दिसम्बर को कॉङ्ग्रेस बुलेटीन बेचने के अपराध में गिरफ़्तार किया गया था।

—कलकत्ते का २९ वीं दिसम्बर का समाचार है कि २८ वीं तारीख़ की रात्रि को पण्डित मोतीलाल जी को फिर १०० डिग्री बुख़ार चढ़ आया।

—ख़बर है कि बरार में पूँजिपतियों के विरुद्ध एक खुली बग़ावत खड़ी हो गई है। मुसलमान, अछूत और मराठा क़ौम के कुछ लोगों ने एक गरोह बना कर दिन दहाड़े खड़ी फ़सलों को लूट लिया। मज़दूर और नौकर लोग इस गिरोह में शामिल हो रहे हैं। पुलिस लाचार है।

—ख़बर है कि गुजरानवाला ज़िले के जाम नामक एक गाँव में एक स्त्री ने अपनी ग़रीबी के कारण और सरकारी यमदूतों के लगान के सम्बन्ध में तङ्ग करने के कारण अपने बच्चों को गिरवी रख दिया। कहा जाता है कि बहुत तङ्ग आकर उसने अपनी लड़की को केवल ६) में बेच डाला है। पूर्वी बङ्गाल से भी ऐसी ही ख़बरें सुनने में आती हैं।

—कानपुर का २१वीं दिसम्बर का समाचार है कि झण्डा-सत्याग्रह के सम्बन्ध में वहाँ, श्री० विश्वनाथ और श्री० रामगुलाम नाम के दो स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए हैं।

—करवार का २२वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ के सत्याग्रह-डिक्टेटर श्रीयुत बी० बी० गोकरण, तथा अन्य दो स्वयंसेवकों को, जिन्हें ज़िला पुलिस-एक्ट की १६वीं धारा के अनुसार शहर छोड़ देने की आज्ञा दी गई थी, आज्ञा-भङ्ग के अपराध में १५-१५ दिन की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

—धारवार का २२वीं दिसम्बर का समाचार है कि, मनागल के एक कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ता श्री० अनन्त भट्ट को ६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—अलीपुर के मैजिस्ट्रेट ने गत २२वीं दिसम्बर को, नौका के अभियुक्त श्रीयुत शारदाप्रसाद हलदार वकील, श्रीयुत अमरनाथ विश्वास, तथा चौदह अन्य कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ताओं के मामले का फ़ैसला सुना दिया।

उक्त दोनों महानुभावों के प्रति अभियोग यह था, कि उनके नेतृत्व में कुछ लोगों ने पुलिस तथा आबकारी-अफ़सरों के दल पर हमला किया था, जिससे लाचार होकर पुलिस को गोली चलानी पड़ी थी। मैजिस्ट्रेट ने अपने फ़ैसले में कहा है कि "यह हो नहीं सकता कि पुलिस, बिना किसी कारण के गोली चलावे"

श्रीयुत शारदाप्रसाद हलदार, श्रीयुत अमरनाथ विश्वास आदि ७ अभियुक्तों को भारतीय दण्ड-विधान की १४७वीं धारा के अनुसार ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। श्री० शारदाप्रसाद हलदार तथा श्री० अमरनाथ विश्वास को, ११७वीं धारा के अनुसार ६ मास की अतिरिक्त कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। ६ व्यक्ति छोड़ दिए गए।

—बारीसाल का गत २२वीं दिसम्बर का समाचार है कि श्रीयुत दिनेश सेन गुप्त बङ्गाल क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—ख़बर है कि धारवार के हुनागुण्ड नामक स्थान में दमन-चक्र ज़ोरों से चल रहा है। दो स्वयंसेवकों को, जो हाल ही में वहाँ गए थे, कहा जाता है, पुलिस ने बुरी तरह से पीटा तथा गालियाँ दीं, और फिर गिरफ़्तार कर लिया। इन्हें ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—कराची का २३वीं दिसम्बर का समाचार है कि भद्र अवज्ञा-आन्दोलन के सम्बन्ध में वहाँ अनेक गिरफ़्तारियाँ की गई हैं। १२वीं दिसम्बर को जो १३ स्वयंसेवक, शिकारपुरी क्लॉथ मार्केट, तथा रेलवे बुकिङ्ग ऑफ़िस के फाटक पर, विदेशी वस्त्र की गाँठों पर धरना देने के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए थे, उन्हें १४३वीं धारा के अनुसार ४-४ माह की कड़ी क़ैद तथा १ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

४ अन्य स्वयंसेवक भी, जिनमें एक मुसलमान है, नमक-क़ानून के अनुसार गिरफ़्तार किए गए हैं।

—नोआखाली का २३वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ की ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के भूतपूर्व डिक्टेटर श्री० हारानचन्द्र घोष चौधरी को ज़िला मैजिस्ट्रेट ने १८ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी है। 'कॉङ्ग्रेस सङ्कल्प' नामक एक पर्चा बाँटने के सम्बन्ध में आप पर राजद्रोह का अभियोग लगाया गया था।

—धारवार २५ दिसम्बर—रत्नबेन्नूर ताल्लुक़े की कॉङ्ग्रेस कमिटी के अध्यक्ष श्रीयुत पाण्डुरङ्ग को ४ माह की सख़्त क़ैद तथा १५०) रु० जुर्माने अथवा २ माह की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी श्री० हम्पसागर को भी १००) रु० जुर्माने अथवा ३ माह की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई है।

—नागपुर का २४वीं दिसम्बर का समाचार है कि मध्य प्रान्तीय मराठी युद्ध-समिति के सेक्रेटरी श्रीयुत के० अमाविस्दार तथा उसके सदस्य श्री० यादवराव देशमुख बी० ए० युद्ध-समिति के दफ़्तर में, १०८ वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए।

—सागर का २३वीं दिसम्बर का एक समाचार है कि वहाँ की कॉङ्ग्रेस कमिटी के पाँचवें डिक्टेटर श्रीयुत भावे को १०७ वीं धारा के अनुसार १ साल की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है। उन्होंने अदालत की कार्यवाही में भाग लेने से इन्कार किया। उनके स्थान पर श्री० प्रभाशङ्कर वैद्य निर्वाचित किए गए हैं।

बम्बई की कॉङ्ग्रेस कमिटी पर पुलिस का धावा

दग़ाबाज़ी का सन्देह

बम्बई का २५वीं दिसम्बर का समाचार है, कि पुलिस ने सुबह एक ही समय में, शहर के भिन्न-भिन्न भागों में कॉङ्ग्रेस से सम्बन्ध रखने वाले स्थानों की तलाशियाँ लीं। वहाँ की कॉङ्ग्रेस कमिटी के श्री० मूलराज करसनदास, श्री० दीक्षित मेनन, श्री० मेहर अली जौहरी तथा श्री० दोस्त मुहम्मद गिरफ़्तार किए गए। स्वयंसेवक दल के नायक श्रीयुत पेयर तथा २० स्वयंसेवक भी गिरफ़्तार किए गए हैं।

यह धर-पकड़ २ बजे दिन तक जारी रही और इस बीच में क़रीब १० मुख्य कॉङ्ग्रेस के कार्यकर्त्ता गिरफ़्तार किए गए। पुलिस को कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ताओं के वासस्थान से, कुछ ऐसे काग़ज़-पत्र मिले हैं जिनके बल पर वह १७ (१) और १७ (२) धारा का अभियोग खड़ा कर सकती है। पुलिस के इस आकस्मिक धावा से, कुछ कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ताओं को यह विश्वास हो गया है, कि उनके कुछ असन्तुष्ट सहयोगियों ने ही कॉङ्ग्रेस की कुछ गुप्त कार्यवाहियों का भण्डाफोड़ पुलिस में किया है।

इसी सन्देह पर स्वयंसेवक-दल के एक भूतपूर्व कप्तान को लोगों ने पीटा भी है।

जाँच करने पर पता चला है कि गिरफ़्तारियाँ अभी पूरी नहीं हुई हैं। कुछ और लोग गिरफ़्तार किए जायँगे। पीछे का एक समाचार है कि इस सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए २४ कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ता तथा कुछ प्रमुख कार्यकर्त्ता, ८ जनवरी तक जेल में बन्द रक्खे जायँगे। उसके बाद उनके मामले की सुनवाई होगी।

—अमृतसर का २२वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ के हकीम अब्दुल नामक एक अन्धे कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ता तथा एक और दूसरे कार्यकर्त्ता चिराग़उद्दीन से मैजिस्ट्रेट ने राजविद्रोहात्मक भाषण देने के अपराध में १०००) रु० की ज़मानत माँगी थी। आप लोगों के ज़मानत देने से इन्कार करने पर ८-८ मास की सज़ा दी गई है।

—कलकत्ते का २५वीं दिसम्बर का समाचार है कि 'लोकमान्य' के सम्पादक श्री० रमाशङ्कर त्रिपाठी १२४-ए धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए थे। आप २५०) की ज़मानत पर छोड़ दिए गए हैं। आप ६ जनवरी को प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट के सामने उपस्थित होंगे।

—अलीबाग़ का २४वीं दिसम्बर का समाचार है कि पुलिस की आज्ञा न मानने के अपराध में वहाँ के कार्यकर्त्ता श्री० विष्णुगणेश चौबे को १ मास का दण्ड दिया गया है।

—कानपुर का समाचार है कि गत २२वीं दिसम्बर को वहाँ झण्डा-सत्याग्रह के सम्बन्ध में श्री० गणेशदत्त, श्री० सीताराम, श्री० गयाप्रसाद और श्री० जयनारायण गुप्त, गिरफ़्तार किए गए।

—दिल्ली का २३वीं दिसम्बर का समाचार है कि श्रीमती सावित्री देवी को सिटी मैजिस्ट्रेट ने, उनके ८ दिसम्बर के भाषण के अपराध में ६ मास की क़ैद की सज़ा दी है। आप 'बी' श्रेणी में रक्खी गई हैं।

महिलाओं की गिरफ़्तारी

बम्बई का एक समाचार है कि वहाँ नागदेवी स्ट्रीट पर धरना देते समय श्रीमती चन्द्राबाई बालकृष्ण और श्रीमती चम्पाबाई पुरुषोत्तम गिरफ़्तार कर ली गईं। ये अभी हिरासत में रक्खी गई हैं।

बम्बई युद्ध-समिति के सदस्यों को जेल

बम्बई का २६वीं दिसम्बर का समाचार है कि युद्ध-समिति की अध्यक्षा श्रीमती स्नेहलता हज़रत, और ४ अन्य सदस्य, जो २८ दिसम्बर को झण्डे की सलामी के सम्बन्ध में आज़ाद मैदान में गिरफ़्तार किए गए थे, उन्हें वहाँ के चौथे प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने सज़ाएँ दे दीं।

श्रीमती स्नेहलता तथा एक अन्य महिला सदस्य को ६-६ महीने की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है। तीन अन्य सदस्यों को ६-६ माह की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

९ वर्ष के लड़के की गिरफ़्तारी

बरधा का २४वीं दिसम्बर का समाचार है कि श्री० जमनालाल बजाज के भतीजे, तथा अन्य दो बालकों को मर्दुमशुमारी के नम्बर बिगाड़ने के अपराध में गिरफ़्तार किया गया है। उनमें से एक की अवस्था ९ वर्ष की है, शेष की अवस्था क्रमशः १६ और १२ वर्ष की है।

भागलपुर में गिरफ़्तारी

भागलपुर का २७वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ के ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के अध्यक्ष मौलवी नज़ीर अहमद तथा शहर कॉङ्ग्रेस कमिटी के अध्यक्ष श्रीयुत कैलाश बिहारीलाल १७-ए धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए। इस सम्बन्ध में शहर में पूर्ण हड़ताल भी मनाई गई।

—पालघाट का एक समाचार है कि वहाँ के स्टेशनरी मैजिस्ट्रेट ने ६ सत्याग्रहियों को ४-४ मास की कड़ी क़ैद की सज़ा दी है।

—कलकत्ते का २७वीं दिसम्बर का समाचार है, बड़े बाज़ार में, राष्ट्रीय गीत गाने के अभियोग में चार गुजराती महिलाओं को ५०)-५०) जुर्माने या एक माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई। देवियों ने जेल ही जाना स्वीकार किया।

—कोयम्बटूर का २६वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ ६ स्वयंसेवक झण्डे की सलामी के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए हैं।

—बम्बई का २५वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ के 'बॉम्बे क्रॉनिकल' के सहकारी सम्पादक जो हाल ही में जेल से छूटे हैं, फिर गिरफ़्तार कर लिए गए। आप थाने में अपने एक गिरफ़्तार मित्र को देखने गए थे, वहीं गिरफ़्तार कर लिए गए।

(शेष मैटर ८वें पृष्ठ के तीसरे कॉलम पर देखिए)

हिन्सात्मक क्रान्ति की लहर

सिम्पसन हत्याकाण्ड की गवाही

कलकत्ते का २३ दिसम्बर का समाचार है कि इन्स्पेक्टर जनरल सिम्पसन की हत्या के विषय में गवाही देते हुए मि० नेलसन ने कहा है कि घटना के दिन साढ़े बारह बजे के क़रीब, उन्हें गोली की आवाज़ सुनाई दी, बाद में ही उन्होंने देखा कि एक बङ्गाली युवक यूरोपियन पोशाक में, हाथ में रिवॉल्वर लिए आ रहा है। उसे देख कर वे अपने कमरे में चले आए, किन्तु उस युवक ने उन पर गोली चलाई, जो उनकी जाँघ में लगी। वह युवक उनके कमरे में चला आया और वे उससे हाथा-पाई करने लगे। इसी समय उस युवक ने अपने साथियों को पुकारा, जिन्होंने आकर उनके सिर में पिस्तौल के दस्ते से मारा। डॉक्टरी जाँच से पता चला है कि कर्नल सिम्पसन के नौ घाव लगे थे। किन्तु उनकी मृत्यु गले वाले घाव से हुई है।

पुलिस ने अपने बयान में कहा है कि श्री० दिनेशचन्द्र गुप्त को फिर चीरा लगा, जिससे उनकी दूसरी गोली भी निकल आई।

दिल्ली स्टेशन पर बम

दिल्ली का २६ वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ के सेण्ट्रल रेलवे स्टेशन में दोपहर के समय बम का एक धड़ाका हुआ, जिससे तीन व्यक्तियों को सख़्त चोटें आई थीं। कहा जाता है, कि दूसरे दर्जे के वेटिङ्ग रूम में एक स्वेटर और बिछौने की एक गठरी को लावारिस माल की तरह पड़ा देख कर, वहाँ के नौकर ने उन्हें हटाना चाहा; वह ज्योंही उन वस्तुओं को उठा कर लिफ़्ट द्वारा नीचे आ रहा था, उसमें से एक सिगरेट केस तथा बम नीचे गिर पड़ा और एक भयानक धड़ाका हुआ। लिफ़्ट चलाने वाले की दोनों बाहें उड़ गईं। वहाँ पर दो और नौकर थे, उन्हें भी सख़्त चोट आई है। वेटिङ्ग रूम के २ सज्जन सन्देह पर गिरफ़्तार कर लिए गए थे जो बाद में छोड़ दिए गए। बाद का समाचार है कि उस लिफ़्टमैन की, जिसके दोनों हाथ बम द्वारा उड़ गए थे, हस्पताल में मृत्यु हो गई!

रङ्गून में १ रिवॉल्वर और २४ गोलियाँ बरामद हुई हैं!

रङ्गून का २६वीं दिसम्बर का समाचार है कि शेर मुहम्मद और मानिकराम नाम के दो व्यक्ति वहाँ गिरफ़्तार किए गए हैं। दोनों व्यक्ति सेक्रेटेरियट के कम्पाउण्ड में घूम रहे थे। पुलिस ने शक पर उन्हें गिरफ़्तार किया। तलाशी लेने पर शेर मुहम्मद के पास १ रिवॉल्वर और २४ गोलियाँ मिलीं।

सक्खर में बम-दुर्घटना

हैदराबाद (सिन्ध) का २०वीं दिसम्बर का एक समाचार है कि सक्खर में, बम का धड़ाका होने से, पास ही खड़े दो व्यक्ति घायल हो गए।

पञ्जाब गवर्नर पर गोली चलाने के सम्बन्ध में गिरफ़्तारी

लाहौर का २६वीं दिसम्बर का समाचार है कि दैनिक 'मिलाप' के व्यवस्थापक श्री० ख़ुशहालचन्द ख़ुरसन्द के पुत्र श्री० रणवीर सिंह वीर, गवर्नर पर आक्रमण करने के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए हैं। वह क़िले में रक्खे गए हैं, जहाँ कि अन्य दो सज्जन, हरिकिशन और गिरधारीलाल भी रक्खे गए थे।

बङ्गाली युवकों पर इन्स्पेक्टर की हत्या का अभियोग

कलकत्ता का २६वीं दिसम्बर का समाचार है कि, एक असाधारण गज़ट द्वारा, श्रीयुत रामकृष्ण विश्वास और कालिदेव चक्रवर्ती के मामले की जाँच के लिए एक 'स्पेशल ट्रिब्यूनल' के नियुक्त किए जाने की घोषणा की गई है।

दोनों अभियुक्त चाँदपुर रेलवे स्टेशन पर इन्स्पेक्टर तारणी मुकर्जी की हत्या करने के अभियोग में गिरफ़्तार किए गए हैं। कहा जाता है, अभियुक्तों के पास तीन भरे हुए रिवॉल्वर, एक बम और कुछ गोलियाँ पाई गई थीं।

गाँव में बम फटा

पेशावर का २८वीं दिसम्बर का एक समाचार है कि रज्जर नामक एक गाँव में बम फटने से एक व्यक्ति सख़्त घायल हुआ है।

अहमदाबाद में बम

'पायोनियर' से सम्वाददाता का कहना है कि गत शनिवार की रात को अहमदाबाद में जो बम का धड़ाका हुआ था, उसके विषय में जाँच करने पर पुलिस को पता लगा है कि वहाँ के पुलिस के डिपुटी सुपरिण्टेण्डेण्ट, तथा कुछ अन्य अफ़सरों को मारने के लिए एक षड्यन्त्र रचा गया था। कहा जाता है कि कॉङ्ग्रेस के ४ स्वयंसेवकों ने जिनमें एक दर्ज़ी भी था, बम बनाने का षड्यन्त्र रचा था। कहा जाता है कि बम बनाने के सामान भी उस दर्ज़ी के घर में इकट्ठे किए गए, किन्तु उस दर्ज़ी की स्त्री के विरोध करने पर, बम बनाने का काम रुका रहा। गत बृहस्पतिवार को उस स्त्री के अन्यत्र चले जाने पर ३ व्यक्ति उस दर्ज़ी के मकान में शनिवार की रात्रि को बम बनाने का प्रयत्न करने लगे। इसी समय धड़ाका हुआ, जिससे वह दर्ज़ी तथा अन्य दो मनुष्य घायल हुए हैं। पुलिस अभी जाँच कर रही है।

ख़बर है कि गुजरात प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी का केशवलाल बायलाल नामक एक मोटर-ड्राइवर भी उक्त बम के धड़ाके के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किया गया है। कहा जाता है कि उसके मकान की तलाशी लेने पर पुलिस को सन्देहजनक कुछ काग़ज़-पत्र मिले, जिन्हें वह उठा ले गई है।

स्कूल के अहाते में बम

सियालकोट का २७वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ के सरकारी स्कूल के अहाते में, टिफ़िन के समय, अली मुहम्मद नामक एक विद्यार्थी को एक बन्द टीन मिला। उसने उसे लात से ठुकरा दिया, जिससे बड़ा भयङ्कर धड़ाका हुआ। उस लड़के को सख़्त चोट आई है। कहा जाता है कि स्कूल की लाइब्रेरी के पास भी एक ऐसा ही टीन मिला, जिसमें बारूद था। पुलिस बड़े ज़ोरों से जाँच कर रही है।

क्रान्तिकारियों की धमकी

कानपुर का एक समाचार है कि गाँधी रोड पर विलायती शराब के दुकानदार जमशेद जी के यहाँ क्रान्तिकारी-दल का एक पर्चा चिपका मिला, जिसमें लिखा था "तुम्हारे कारण १६ बहिनें जेल भोग चुकी हैं, लेकिन तुम अभी तक नहीं चेते, इसलिए तुम्हारा परिवार ख़तरे में है।"

बनारस थाने के पास बम

सहयोगी 'लोकमान्य' को उसके एक विशेष सम्वाददाता से मालूम हुआ है, कि गत २८वीं दिसम्बर को बनारस-चौक के थाने के पास एक बम पड़ा मिला। बम के ऊपर लाल कपड़ा लपेटा था। लाल कपड़े सहित बम लोहे के बारीक तारों से कसा हुआ था। कुछ कॉन्स्टेबिलों ने उसे गेंद समझ कर डण्डे से ठुकराया, जिससे धड़ाका हुआ, किन्तु किसी को चोट नहीं आई।

माण्डला-मेल का षड्यन्त्र

गत अक्टूबर महीने में माण्डला-मेल को उलटने की चेष्टा करने के अभियोग में श्रीयुत डी० एम० दास गुप्त को मुचलका देने की आज्ञा हुई थी। मुचलका न देने के कारण, आपको २१ दिसम्बर को १ साल की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

पञ्जाब गवर्नर पर गोली चलाने के अभियोग में ११ गिरफ़्तारियाँ

लाहौर का ३०वीं दिसम्बर का समाचार है कि पञ्जाब गवर्नर पर गोली चलाने के सम्बन्ध में अब तक ११ गिरफ़्तारियाँ हो चुकी हैं।

श्री० हरकिशन और गिरधारीलाल तो घटनास्थल पर ही गिरफ़्तार किए गए थे। रणवीरसिंह २४ दिसम्बर को गिरफ़्तार किए गए। चमनलाल की गिरफ़्तारी मर्दान में हुई। बाद को ये ७ मनुष्य गिरफ़्तार किए गए—श्री० वीरेन्द्र, अहसान इलाही, दुर्गादास, दलीपाराम, मुहम्मद तुफ़ैल, प्रेमदत्त, जयदयाल।

दिल्ली में २९ महिलाएँ गिरफ़्तार

जुर्माना देने की अपेक्षा जेल जाना स्वीकार

दिल्ली का २०वीं दिसम्बर का समाचार है कि शराब के व्यापारी भोलाराम की दूकान पर धरना देने के अभियोग में गिरफ़्तार की गईं। महिलाओं के मामले का फ़ैसला वहाँ के एडिशनल ज़िला मैजिस्ट्रेट ने कर दिया। सभी अभियुक्तों ने मामले में भाग लेने से इन्कार किया। केवल श्रीमती विशननारायण और श्रीमती रूपरानी ने अपने ऊपर लगाए गए, अभियोग को स्वीकार किया।

सब-इन्स्पेक्टर ने अपनी गवाही में कहा कि उक्त महिलाओं ने भोलाराम और उसके लड़के की नक़ली अरथी निकाली थी, और सियापा मनाया था। पुलिस ने उन लोगों से जुलूस भङ्ग करने के लिए कहा, किन्तु उन लोगों ने पुलिस की आज्ञा नहीं मानी।

अभियुक्तों में कुछ कम उम्र की लड़कियाँ थीं। मदन नाम का १० वर्ष का एक बालक भी था। मैजिस्ट्रेट ने १० लड़कियों को तथा मदन को चेतावनी देकर छोड़ दिया।

शेष को भिन्न-भिन्न अवधि की सज़ाएँ दी गईं।

—कलकत्ते का २६वीं दिसम्बर का समाचार है कि बड़ा बाज़ार में विदेशी वस्त्रों की दूकानों पर धरना देने के सम्बन्ध में ११ स्वयंसेवक गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। ३० महिलाओं ने पिकेटिङ्ग का काम जारी रक्खा है।

—कलकत्ते का ३०वीं दिसम्बर का समाचार है कि तीन गुजराती महिलाएँ और एक १० वर्ष की बालिका गिरफ़्तार कर ली गई है। कहा जाता है कि उनकी गिरफ़्तारी प्रभात फेरी के सम्बन्ध में हुई है।

उक्त तीनों महिलाओं को १-१ मास की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है। बालिका को चेतावनी देकर छोड़ दिया गया।

* * *

१४४वीं धारा जारी की गई

लुधियाना का २२वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ के म्युनिसिपल-कमिश्नर तथा वकील पं० मुनिलाल कालिया, कॉङ्ग्रेस कमिटी के डिक्टेटर लाला कृपाराम आर्य, कॉङ्ग्रेस कमिटी के भूतपूर्व सभापति लाला कुरुदास राम, तथा भूतपूर्व सेक्रेटरी स्वामी रामलाल पर १४४ वीं धारा के अनुसार आज्ञा-पत्र निकाला गया है, जिसके अनुसार उन्हें सभाएँ करने, और जुलूस निकालने की मनाही की गई है।

'ए' श्रेणी के क़ैदी तीसरे दर्जे की गाड़ी में !

अमृतसर का २३वीं दिसम्बर का समाचार है कि डॉक्टर चुन्नीलाल भाटिया, जिन्हें दो मास की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है, और जो 'ए' श्रेणी में रक्खे गए हैं, लाहौर से ३रे दर्जे के खाने में गुजरात जेल ले जाए गए।

१०० ताड़ के वृक्ष काट डाले गए

बेलगाँव का एक समाचार है कि किट्टूर में गत सप्ताह में लगभग १०० ताड़ के वृक्ष काट डाले गए हैं। ताड़ी के ठेकेदार ने पुलिस में इस बात की शिकायत की, कि काटने वालों ने उसके नौकर को, जो वहाँ पहरा देने के लिए रक्खा गया था, पीटा है और उससे एक दुनली बन्दूक़ छीन ली है। पुलिस ने गाँव में आकर जाँच की तथा तलाशियाँ लीं। अभी तक कोई गिरफ़्तार नहीं हुआ है।

धारवाड़ में गेनू तथा झण्डा-दिवस

धारवाड़ का २१ वीं दिसम्बर का समाचार है कि बाबू "गेनू दिवस" के उपलक्ष में वहाँ की महिलाओं ने एक जुलूस निकाला। २२ वीं दिसम्बर को वहाँ के नागरिकों ने भी एक झण्डा-जुलूस निकाला। जुलूस ख़तम होने के बाद झण्डा ४० फ़ीट के एक पोल पर फहराया गया। वहाँ के कुछ नेताओं पर दो महीने तक धारवाड़ में भाषण न देने का आज्ञा-पत्र सरकार ने निकाला है।

करबन्दी का प्रस्ताव

दोहाद का २० दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ के ३०० खातेदारों ने हलाल तालुक़े के 'बान' नामक स्थान पर इकट्ठा होकर उन पुलिस पटेलों को बधाइयाँ दी हैं, जिन्होंने अपने पद से इस्तीफ़ा दे दिया है। उन्होंने उन पुलिस-पटेलों के बहिष्कार का भी प्रस्ताव पास किया है, जो अभी तक नौकरी कर रहे हैं।

एक यह प्रस्ताव भी उन लोगों ने पास किया है कि जब तक महात्मा जी तथा श्री० सरदार पटेल, बिना किसी शर्त के छोड़ न दिए जायँ, तब तक भूमि-कर न दिया जाय।

उनका तीसरा प्रस्ताव यह है कि, सभी सरकारी नौकरियों का सामाजिक बहिष्कार किया जाय।

—धारवाड़ का २२वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ के सिरसी तालुक़ा की कॉङ्ग्रेस-कमिटी तथा उसकी शाखाओं के प्रति जो विज्ञप्ति निकाली गई थी, उसके अनुसार पुलिस ने सिरसी तालुक़ा कॉङ्ग्रेस-कमिटी के भवन को अपने क़ब्ज़े में कर लिया है। वहाँ की चल-सम्पत्ति भी ज़ब्त कर ली गई है। अभी तक कोई गिरफ़्तारी नहीं हुई है।

बर्मा में भीषण उपद्रव

रङ्गून का २४वीं दिसम्बर का समाचार है कि, गत २२ दिसम्बर की रात को थारावाड्डी के पास के गाँवों में जो दङ्गा हो गया था, उसका सूत्रपात, थारावाड्डी-इनसीन ज़िले की सीमा पर स्थित, पेगू-योमास गाँवों के पास से हुआ था।

गत २२ दिसम्बर की रात को दङ्गाइयों ने दो या तीन गाँवों पर धावा किया, उन गाँवों के दो मुखियों को मार डाला, और एक फ़ारेस्ट-रेञ्जर को घायल किया। २३ दिसम्बर को सवेरे सब-डिविज़नल अफ़सर के अधीन एक पुलिस का दल भेजा गया। दङ्गाइयों ने पुलिस पर गोलियाँ चलाईं, जिससे पुलिस के ५ जवान घायल हुए।

बाद का समाचार है कि उदकविन नामक स्थान पर कुछ दङ्गाइयों ने पञ्जाबी मिलिटरी पर आक्रमण किया। ४० विद्रोही मारे गए और ५० के लगभग घायल हुए। गत २६वीं दिसम्बर को सैनिक अफ़सरों ने रात में दङ्गाइयों पर छापा मारना चाहा था, किन्तु दङ्गाइयों को यह बात मालूम हो गई और उन्होंने सेना पर धावा कर दिया। किन्तु वे हटा दिए गए।

अब सैनिक अफ़सर उन्हें घेर कर हथियार रख देने के लिए विवश करना चाहते हैं। इसी उद्देश्य से प्रधान-प्रधान रास्ते बन्द किए जा रहे हैं।

ख़बर है कि घटनास्थल के समीप की रेलवे लाइनों पर कड़ा पहरा है।

अफ़वाह है कि विद्रोही दल के कुछ आदमी उस गाँव में गए, जहाँ मि० फ़ील्ड्स क्लार्क की हत्या की गई थी, और इस आशय का एक पत्र उन्होंने वहाँ रख दिया कि गाँव के उन लोगों को कड़ी सज़ा दी जायगी, जिन्होंने कि अफ़सरों को विद्रोहियों की ख़बरें पहुँचाई हैं।

—ख़बर है कि पं० नीलकान्त दास, जिन्होंने कॉङ्ग्रेस की आज्ञानुसार, एसेम्बली से इस्तीफ़ा दे दिया था, और जिन्हें नमक-क़ानून के अनुसार १६वीं जून को ७ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई थी, गत २२वीं दिसम्बर को हज़ारीबाग़ जेल से छोड़ दिए गए।

—मद्रास का २६वीं दिसम्बर का समाचार है कि श्रीयुत आर० के० शण्मुखम चेट्टी ने दो बिलों के विषय में विज्ञप्ति निकाली है, जो एसेम्बली के अगले अधिवेशन में पेश किए जायँगे। इनमें पहला अछूतों के सम्बन्ध में है। कहा जाता है कि इस बिल के पास हो जाने से अछूतों की वर्त्तमान दशा में परिवर्त्तन होने की आशा है।

दूसरा बिल देवदासियों की बढ़ती रोकने के विषय में है।

आजकल देहली का सारा आन्दोलन शराब-फ़रोश रायसाहब भोलाराम एण्ड सन्स की दूकान पर सीमित है। नित्य स्त्री-पुरुषों के नए-नए अनेक जत्थे पिकेटिङ्ग के अपराध में पकड़े जा रहे हैं। दूकान पर पाठक देखेंगे, गवर्नमेण्ट ने लठबन्द सिपाहियों की ख़ास व्यवस्था कर दी है।

पुलिस ने भी फ़ायरें कीं, जिससे उनका कहना है कि अनेक दङ्गाई मरे और घायल हुए। किन्तु गोलियाँ समाप्त हो जाने के कारण पुलिस लौट आई। इसी सम्बन्ध का २६वीं दिसम्बर का समाचार है कि दङ्गाई अभी तक जङ्गलों में छिपे हुए हैं। दङ्गाइयों के एक दल २४ दिसम्बर की रात को पेगू योमास के समीप 'वेवा बङ्गले' पर धावा किया, उसे जला डाला और जङ्गल विभाग के इञ्जीनियर को, जो वहाँ रात भर के लिए ठहरे थे, मार डाला। कहा जाता है कि पुलिस का एक दल उसी समय वहाँ पहुँच गया और उसने दङ्गाइयों का मुक़ाबला किया। चार दङ्गाई मारे गए, और दो पकड़ लिए गए। दो बन्दूक़ें भी छीन ली गईं। पुलिस के कप्तान को थोड़ी चोट आई।

यदाईक के समीप एक पुलिस-पोस्ट पर भी दङ्गाइयों ने धावा किया, जिससे पुलिस को थारावाड्डी जाकर शरण लेनी पड़ी। ख़बर है कि सब-डिविज़नल पुलिस अफ़सर तथा एक दूसरे अफ़सर का पता नहीं है।

पुलिस और मिलिटरी दङ्गाइयों का पीछा कर रही हैं। कहा जाता है, कुछ दङ्गाई पकड़े भी गए हैं।

—लाहौर का २३वीं दिसम्बर का समाचार है कि 'सर्वेण्ट्स ऑफ़ दी पिपुल सोसायटी' के सदस्य लाला जगन्नाथ के क़ैद की अवधि पूरी हो जाने पर वे गुजरात जेल से छोड़ दिए गए। वे लाहौर पहुँच गए हैं।

—अमृतसर की २४वीं दिसम्बर की ख़बर है कि, श्रीयुत अब्दुर्रहीम पर, जिन पर कि १०८ वीं धारा के अनुसार, कुछ क्रान्तिकारी कविताएँ गाने का अभियोग चल रहा था, एक दूसरा अभियोग पुलिस एक्ट की ३री धारा के अनुसार लगाया गया है। अदालत के पूछने पर उन्होंने कहा कि "मुझे याद नहीं, कि मैंने कभी उन कविताओं को गाया हो।" मामला २री जनवरी के लिए स्थगित कर दिया गया।

—पूना का २४वीं दिसम्बर का समाचार है कि महाराष्ट्र हिन्दू-सभा की एक्ज़ेक्यूटिव कमिटी ने डॉ० मुञ्जे तथा अन्य हिन्दू प्रतिनिधियों के पास इस आशय का तार दिया है कि कमिटी को डॉ० मुञ्जे तथा मि० जयकर पर पूरा विश्वास है और उन्हें अपनी पहली माँगों पर डटे रहना चाहिए। कमिटी ने मुसलमानों की आपत्तिजनक माँगों की निन्दा की है।

—वर्द्धवान का गत २१वीं दिसम्बर का समाचार है कि पटुली के निवासी बाबू हीरालाल राय तथा नारायणपुर के बाबू कुमारीशचन्द्र राय के मकान की तलाशियाँ ली गईं। कहा जाता है कि तलाशियाँ कॉङ्ग्रेस के सम्बन्ध में हुई थीं। पुलिस बहुत-सा काग़ज़-पत्र उठा कर ले गई है।

—ख़बर है कि गत २०वीं दिसम्बर को ख़ुफ़िया पुलिस के कुछ अफ़सरों ने, कलकत्ते के 'प्रवासी' कार्यालय की तलाशी ली। यह तलाशी सरकार द्वारा ज़ब्त '१९३० में मिदनापुर में अमन और क़ानून' नामक पुस्तक के विषय में ली गई थी। कहा जाता है कि तलाशी करने पर, उक्त पुस्तक की एक प्रति वहाँ मिली।
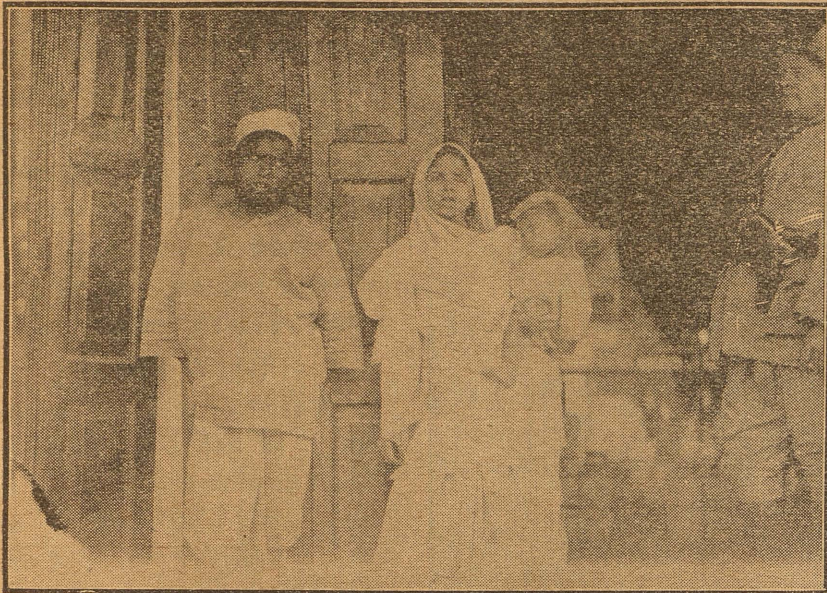
इस चित्र में पाठक देखेंगे, शराब-फ़रोश रायसाहब की दूकान पर एक ओर गोद में नन्हा-सा बच्चा लिए एक महिला और नवयुवक धरना दे रहे हैं, दूसरी ओर सिपाही उन्हें भीड़ न इकट्ठी करने की धमकी दे रहा है।

—अलीबाग़ का २१वीं दिसम्बर का समाचार है, कि श्रीयुत देवधर और श्रीयुत जनार्दन जोशी को ज़िला पुलिस एक्ट की ४६ वीं धारा के अनुसार २४ घण्टे के अन्दर शहर छोड़ देने का आदेश दिया गया है।

—ख़बर है कि अलीपुर के प्रेज़िडेन्सी जेल में जो राजनैतिक क़ैदी गत १९ दिसम्बर से अनशन कर रहे थे, वे अभी तक अनशन कर ही रहे हैं।

—सूरी का २१ वीं दिसम्बर का समाचार है कि लबपुर (बीरभूमि) के हाई-स्कूल के विद्यार्थी श्री० सरोजनाथ मुकर्जी, अलीपुर जेल में २ महीने की सख़्त सज़ा भुगतने के बाद छोड़ दिए गए हैं। स्कूल के अधिकारियों ने इन्हें पुनः स्कूल में पढ़ने की अनुमति नहीं दी।

—बम्बई का २५वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ पं० मदनमोहन मालवीय की ७०वीं वर्ष-गाँठ बड़े धूमधाम से मनाई गई। पुरुषों और महिलाओं ने हज़ारों की संख्या में, चौपाटी में एकत्रित होकर, पण्डित जी के स्वास्थ्य और दीर्घजीवन के लिए प्रार्थनाएँ कीं।

श्रीयुक्त पटेल की दशा चिन्ताजनक

कोयम्बटूर का २२वीं दिसम्बर का समाचार है कि श्रीयुत वी० जे० पटेल की डॉक्टरी जाँच नित्य हो रही है। उन्हें हार्निया और अर्श का रोग है। जलवायु बदल देने पर भी इन रोगों की मात्रा कम नहीं हुई है। आशा की जाती है कि अपने घर पर यदि वे भेज दिए जायँ तो वहाँ शीघ्र अच्छे हो सकेंगे।

सरकारी सहायता रोक दी गई

अहमदाबाद का २४वीं दिसम्बर का समाचार है कि बम्बई की सरकार ने, अहमदाबाद के म्युनिसिपल बोर्ड के अधीनस्थ स्कूलों की सहायता, इसलिए बन्द कर दी है, कि उक्त स्कूल स्थानीय राजनैतिक नेताओं के गिरफ़्तार किए जाने पर तथा बहिष्कार सप्ताहों के उपलक्ष में बन्द रक्खे गए थे!

कॉङ्ग्रेस को दबाने के लिए नई अङ्गरेज़ी फ़ौज!

ख़बर है कि इङ्गलैण्ड से एक नई अङ्गरेज़ी फ़ौज आई है। यह बड़े-बड़े शहरों में रक्खी जायगी। कहा जाता है कि कॉङ्ग्रेस को दबाने के लिए ही यह फ़ौज बुलाई गई है!

—बम्बई, २६ दिसम्बर—ख़बर है कि सरदार पटेल का मामला ६ जनवरी तक के लिए स्थगित कर दिया गया है। यह पूछे जाने पर, कि उन्हें इस विषय पर कोई आपत्ति है या नहीं, सरदार पटेल ने कहा कि वे अदालत की कार्यवाही में भाग लेना नहीं चाहते, किन्तु इस विषय में उन्हें आपत्ति है। चूँकि वे अदालत की किसी कार्यवाही में भाग नहीं लेना चाहते, अतः उनके मामले का फ़ैसला शीघ्र हो जाना चाहिए था। मैजिस्ट्रेट ने उनकी आपत्ति दर्ज कर ली है।

—पटने के वकील श्रीयुत गोकुलदास दे, को नमक-क़ानून भङ्ग करने के अपराध में ६ मास की सज़ा दी गई थी। हाईकोर्ट ने आपसे पूछा है, कि वकीलों की सूची से आपका नाम क्यों नहीं काट दिया जाय?

बोरसद के किसानों की कारुणिक दशा

हाल ही में, पूना के क्राईस्ट सेवा-सङ्घ के रेवरेण्ड फ़ादर इक्यान, बम्बई सरकार के भूतपूर्व मन्त्री दीवान बहादुर हीरालाल देसाई, गुजरात विद्यापीठ के अध्यापक जे० सी० कुमारप्पा, और श्रीयुत ए०बी० ठक्कर ने बोरसद की यात्रा की थी, उन्होंने किसानों के जले हुए मकानों को अपनी आँखों से देखा। एक दुमञ्ज़िला मकान जल कर ख़ाक हो गया था। उन्होंने किसानों के ही साथ झोपड़ियों में रात बिताई। किसानों ने अपने दुःखों का वर्णन उनके सामने किया। पुलिस उन किसानों के मकानों के ताले तोड़ कर सब चीज़ें उठा ले गई थी। खेत भी कटवा लिए गए थे। पग-पग पर उन्हें किसानों की दुर्दशा दिखाई दी।

पुलिस-अफ़सरों को पीटा गया!

सलेम, २४ दिसम्बर—नमकल ताल्लुक़े का एक समाचार है कि आबकारी और पुलिस के दो सब-इन्स्पेक्टर कुछ कॉन्स्टेबिलों के साथ, शराब बनाने की ग़ैर-क़ानूनी कार्रवाई के सम्बन्ध में एक मकान की तलाशी लेने गए। कहा जाता है, उसी समय एक भीड़ ने उन पर आक्रमण किया, दोनों सब-इन्स्पेक्टरों को कॉन्स्टेबिलों से अलग कर पीटा और एक कमरे में बन्द कर दिया। किन्तु दूसरे दिन वे छोड़ दिए गए।

शराब-फ़रोश रायसाहब की दूकान पर सफलतापूर्वक धरना देने के उपलक्ष में स्त्री-पुरुष तालियाँ बजा-बजा कर स्वयंसेवकों को उनकी सफलता पर बधाई दे रहे हैं। कहा जाता है, स्वयंसेवक एक भी ग्राहक दूकान में नहीं घुसने देते।

जनरल अवारी पागलख़ाने में

कहा जाता है कि मध्य-प्रान्त के जनरल अवारी पागलख़ाने में रक्खे गए हैं। आपने मध्य प्रान्तीय सरकार को सूचना दी है, कि यदि उन्हें पागलख़ाने से न हटाया जायगा, तो वे अनशन शुरू करेंगे।

जेल में मृत्यु

बेलारी (बङ्गाल) का २२वीं दिसम्बर का एक समाचार है कि अलीपुर जेल में प्रवाला सुब्बराव नामक एक सत्याग्रही क़ैदी की मृत्यु हृदय-रोग से हो गई है। वह गत १० दिनों से अनशन कर रहा था।

राज-बन्दी गिडवानी जेल में सख़्त बीमार

कराची का २६वीं दिसम्बर का समाचार है, कि सिन्ध प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के अध्यक्ष, डॉ० चौइथ राम पी० गिडवानी वहाँ के जेल में सख़्त बीमार हैं। सिविल सर्जन ने आपके छोड़ दिए जाने की सिफ़ारिश की है। इस समय आप २ वर्ष की सख़्त क़ैद की सज़ा भुगत रहे हैं।

बोर्स्टल जेल में अनशन

लाहौर का २२वीं दिसम्बर का समाचार है, कि श्री० टहलसिंह, जो ३०७ वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार किए गए हैं, जेल के अधिकारियों के बुरे व्यवहार के विरोध में अनशन कर रहे हैं। कहा जाता है कि आपको हथ-कड़ी-बेड़ी डाल दी गई है, और आप काल-कोठरी में बन्द कर दिए गए हैं।

स्वयंसेवकों पर लाठियाँ चलाई गईं

पटना का २९वीं दिसम्बर का समाचार है कि कुछ कॉङ्ग्रेस के स्वयंसेवक, पूर्णिया में होने वाली गुलाबबाग़ मेला में जुलूस बना कर जा रहे थे। पुलिस ने उन्हें रोका, उनके न मानने पर लाठियाँ चलाई गईं। सर-कारी रिपोर्ट का कहना है कि किसी को सख़्त चोट नहीं आई है।

मि० स्प्रैट जेल में सख़्त बीमार

मेरठ की एक ख़बर है कि मेरठ षड्यन्त्र केस के अङ्गरेज़ क़ैदी मि० वी० स्प्रैट बहुत दिनों से बीमार हैं। इस समय आपकी दशा अधिक चिन्ताजनक है। आप जेल के अस्पताल में रक्खे गए हैं। मेरठ-षड्यन्त्र के अन्य बन्दियों तक से आपको नहीं मिलने दिया जाता है।
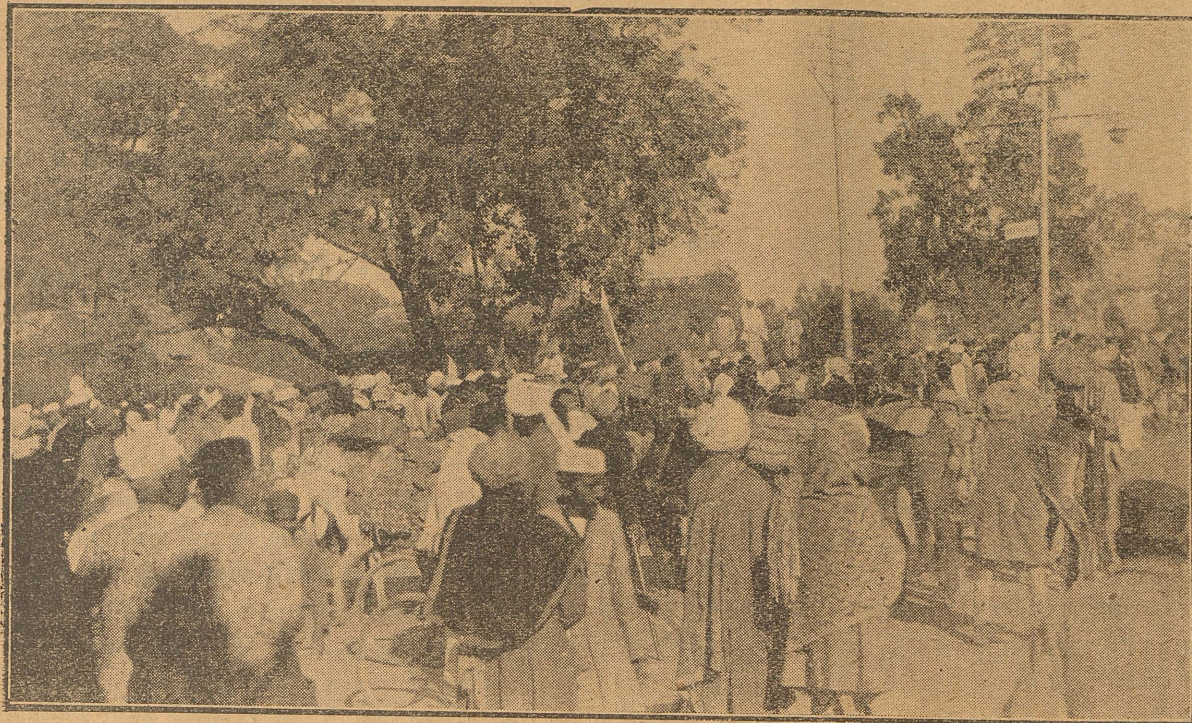
शराब-फ़रोश राय साहब के दूकान की दूसरी ओर जनता की अपार भीड़। ऐसी भीड़ प्रायः सुबह से शाम तक दूकान के चारों ओर बनी रहती है और एक भी ग्राहक दूकान में घुसने का साहस नहीं करता।

बाँदा में जेल-कष्ट

बाँदा का २१ वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ के जेल में राजनैतिक क़ैदियों को अधिक ठण्ढ के कारण बड़ा कष्ट हो रहा है। कहा जाता है, उन्हें केवल दो कम्बल दिए जाते हैं, जो ओढ़ने और बिछाने दोनों काम के लिए काफ़ी नहीं हैं। इसके फल-स्वरूप, कुछ राज-नैतिक क़ैदी अस्वस्थ हो गए हैं। सरदार प्रेमसिंह अभी तक अच्छे नहीं हुए हैं।

—लाहौर का २७वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ के 'असाधारण गज़ट' में, इन्स्टिगेशन ऑर्डिनेन्स सारे पञ्जाब के लिए लागू किए जाने की घोषणा की गई है।

—कलकत्ते का २७वीं दिसम्बर का समाचार है, कि वहाँ के ऑर्डिनेन्स-क़ैदियों ने, जेल के अधिकारियों के समझौता कर लेने पर अनशन त्याग दिया है। कहा जाता है कि अलग-अलग वार्डों में रक्खे जाने के कारण उन्होंने अनशन किया था।

—ख़बर है कि गत २४वीं दिसम्बर को पुलिस ने लखनऊ की कॉङ्ग्रेस कमिटी पर धावा किया। कॉङ्ग्रेस कमिटी के अध्यक्ष बाबू मोहनलाल सक्सेना के मकान की तलाशी भी ली गई। पुलिस कुछ काग़ज़ उठा कर ले गई। अभी तक कोई गिरफ़्तारी नहीं हुई है।

—मद्रास का २८वीं दिसम्बर का समाचार है कि तामिल नायडू युद्ध-समिति के अध्यक्ष श्रीयुक्त सत्यमूर्ति झण्डा-उत्सव के अवसर पर १४४वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए। किन्तु बाद को ज़मानत पर छोड़ दिए गए हैं।

गुजरात के मज़दूरों में त्याग का भाव

बारडोली इलाक़े में सरकार ने किसानों के लगे हुए खेत ज़ब्त तो कर लिए हैं, किन्तु अब उसकी समझ में नहीं आता कि उन खेतों की फ़सलों का क्या किया जाय। ख़बर है कि बारडोली के बाजीपुरा नामक एक गाँव में, एक अफ़-सर गया और वहाँ के मज़दूरों को केवल ५) बीघे के दर से उन खेतों की फ़सलों को दे देने का लोभ दिखाया। किन्तु वे मज़दूर, जिन्होंने उन किसानों की दुर्दशा अपनी आँखों से देखी थी, उन फ़सलों को लेने से साफ़ इन्कार कर दिया। अफ़सर ने ख़ाली हाथ लौटना उचित न समझ कर, कहा जाता है, एक मकान के ताले तोड़ कुछ चारपाइयाँ ज़ब्त कर लीं।

—शिकोहाबाद (आगरा) का एक समाचार है कि वहाँ राष्ट्रीय आन्दोलन ज़ोरों से चल रहा है। हाल में ही वहाँ एक सैनिक-सम्मेलन हुआ था, जिसमें देहातों से आए हुए ६०० सैनिकों को अनेक आवश्यक बातें बताई गईं। करबन्दी आन्दोलन के लिए भी सङ्गठन हो रहा है। मर्दुमशुमारी के लिए मकानों पर लगाए हुए नम्बर भी मिटा दिए गए हैं!

शराब-फ़रोश राय साहब की दूकान पर पिकेटिङ्ग का दृश्य देखने के लिए उत्सुक नागरिकों की भीड़; इन निरपराध दर्शकों पर भी प्रायः लाठियों की वर्षा भी हुआ करती है।

—लाहौर का २७वीं दिसम्बर का समाचार है कि सपरिषद् गवर्नर ने, 'स्वराज्य-संग्राम' नामक एक चित्र की ज़ब्ती की सूचना दी है, जो श्री० नारायन दत्त सहगल ने प्रकाशित की थी।

—लाहौर का २७वीं दिसम्बर का समाचार है कि पुलिस ने 'मिलाप' कार्यालय तथा उसके व्यवस्थापक श्री० ख़ुशहालचन्द के मकान की तलाशियाँ लीं। वह कुछ काग़ज़-पत्र उठा ले गई है।

युक्त प्रान्त में ऑर्डिनेन्सों का शासन !

कानपुर का सेवा-दल भी ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दिया गया

लखनऊ का २६वीं दिसम्बर का समाचार है, कि एक असाधारण गज़ट के द्वारा, 'अनलॉफ़ुल इन्स्टीगेशन ऑर्डिनेन्स' जो अपने ढङ्ग का दूसरा ऑर्डिनेन्स है, युक्त प्रान्त के तीसों ज़िले के लिए लागू कर दिया गया है। अब लखनऊ, कानपुर, इलाहाबाद, आगरा और मेरठ भी इसके शिकञ्जे में आ गए हैं। एक दूसरे गज़ट के द्वारा कानपुर का 'हिन्दुस्तानी सेवा-दल' भी ग़ैर-क़ानूनी क़रार दिया गया है।

आगरे में कर-बन्दी का आन्दोलन

लाठियाँ चलीं :: ३०० घायल

आगरा, २३ दिसम्बर—गत २१वीं दिसम्बर को क़रीब एक हज़ार आदमी बरोद नामक गाँव गए जहाँ लगानबन्दी आरम्भ होने वाली थी। कहा जाता है, कि पुलिस ने १६ सत्याग्रहियों को बरोद-सत्याग्रह-शिविर से हटा दिया, और वह गाँव के चारों ओर घेरा बना कर खड़ी हो गई। जब लोगों ने अन्दर घुसना चाहा तो, पुलिस ने बेत और लाठियों की वर्षा की। ख़बर है कि क़रीब १०० मनुष्य इससे आहत हुए, इनमें कुछ की दशा चिन्ताजनक है। एक ८ वर्ष के लड़के को भी सख़्त चोट आई है। पं० द्वारका प्रसाद रावत, श्री० जयन्तीप्रसाद तथा चार अन्य कार्यकर्त्ता गिरफ़्तार कर लिए गए। पीछे क़रीब २५० सत्याग्रही गिरफ़्तार घोषित किए गए, जिनमें ८६ लॉरियों में बिठा कर ले जाए गए। क़रीब २० महिलाएँ एक लॉरी पर बिठा कर फ़तेहपुर सिकरी ले जाई गईं, और वहाँ छोड़ दी गईं। ख़बर है कि वे आगरे लौट आई हैं।

इसके बाद क़रीब ८०० स्वयंसेवक घटनास्थल पर पहुँच गए। उन्होंने दल बना कर पुलिस के घेरे तोड़ कर गाँव में घुसने की कोशिश की। कुछ को सफलता भी मिली। कहा जाता है, क़रीब ३०० स्वयंसेवकों को चोटें लगी हैं, जिनमें ५ और १० वर्ष से नीचे के लड़के भी शामिल हैं। १६ को सख़्त चोटें आई हैं।

साधारण क़ैदियों की रिहाई

ख़बर है कि सरकार ने जो 'सन्टेन्स सस्पेन्शन स्कीम' पेश की है, उसके अनुसार ३,२०० मोपला क़ैदी छोड़ दिए गए हैं। मार्च, १९२८ से दिसम्बर, १९३० तक अण्डमन द्वीप से भी ४८५ क़ैदी छोड़े जा चुके हैं। आगामी जनवरी से जून तक २५० भारतीय जेलों के तथा २५ अण्डमन के क़ैदियों को भी छोड़े जाने की अफ़वाह है।

लाठी की चोट से स्वयंसेवक की मृत्यु

बनारस का २५वीं दिसम्बर का समाचार है कि श्रीयुत सरयूराम की मृत्यु कॉङ्ग्रेस अस्पताल में हो गई। एक मास पहले आप राजघाट और फिर ब्रह्मनाल में पुलिस की लाठी से सख़्त घायल हुए थे। आप कॉङ्ग्रेस अस्पताल में लाए गए थे। यहाँ इन्हें न्यूमोनिया हो गया था और ख़ून के क़ै आने लगे थे। इनकी मृत्यु के शोक में एक जुलूस भी निकाला गया।

—ख़बर है कि सक्खर (सिन्ध) के कलेक्टर साहब विदेशी वस्त्रों की एक प्रदर्शनी करना चाहते हैं। सुनने में आया है कि यदि ऐसा किया गया तो ५०० स्वयंसेवक इस प्रदर्शनी पर धरना देंगे।

—सूरत का २७वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ वानर-सेना का एक वृहत जुलूस निकला। फिर झण्डा-वन्दन हुआ और श्रीमती हंसा मेहता का भाषण हुआ। इस परिषद में शरीक होने के लिए प्रान्त के कितने ही बालक उपस्थित हुए थे।

बन्दूक़ के कुन्दे की चोट से मृत्यु

श्री० कालीशङ्कर वाजपेयी की मृत्यु के विषय में डॉक्टर कोरोबर ने अदालत के सामने कहा है कि श्री० कालीशङ्कर की मृत्यु बन्दूक़ के कुन्दे की चोट के कारण हुई है।

अदालत बन्द कर दी गई

किशोरगञ्ज का २४वीं दिसम्बर का समाचार है कि तीसरे स्थायी मुन्सिफ़ की अदालत अनिश्चित समय के लिए बन्द कर दी गई है। मुक़द्दमे के अभाव से ही ऐसा किया गया है।

—कलकत्ते का २५वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ पुलिस ने ब्रह्मसमाज के बालिकाओं के छात्रावास पर धावा किया और तलाशी ली। किन्तु कोई सन्देहजनक वस्तु नहीं पाई गई। एक छात्रा को गिरफ़्तार कर पुलिस साथ लेती गई, जिसे कुछ घण्टों बाद छोड़ दिया गया।

—लाहौर का २१वीं दिसम्बर का समाचार है कि श्रीमती कोहली और श्रीमती पार्वती देवी, लाहौर की महिला जेल से छोड़ दी गई हैं।

—बरेली का २४वीं दिसम्बर का समाचार है कि काकोरी के मामले के अभियुक्त श्रीयुत मन्मथनाथ गुप्त को बरेली जेल में पागलपन की बीमारी हो गई है। वे पागलख़ाने में रक्खे गए हैं।

—ख़बर है कि गत २४वीं दिसम्बर को कानपुर के अकबरपुर नामक तहसील में ६ कार्यकर्त्ता गिरफ़्तार किए गए।

—कानपुर का २४वीं दिसम्बर का समाचार है कि श्रीमती सरला देवी, ११७ वीं धारा के अनुसार, २३वीं दिसम्बर की रात में गिरफ़्तार कर ली गईं। कहा जाता है कि आपके नाम वारण्ट इटावा ज़िले से था।

मैनपुरी में गोली-काण्ड

मैनपुरी (संयुक्त प्रान्त) का गत १६वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ चतुरीपुरी नामक एक ग्राम में, कुछ स्वयंसेवक सवेरे की फेरी लगाने के बाद, झण्डा-प्रार्थना कर रहे थे। इसी समय पुलिस के सुपरिण्टेण्डेण्ट कई सिपाहियों सहित वहाँ आ पहुँचे और उन लोगों से झण्डा छीनना चाहा। स्वयंसेवकों ने झण्डा देने से इनकार किया। कहा जाता है कि इस पर ८-१० फ़ायरें की गईं, जिससे कुछ लोग घायल हुए। दूसरे दिन दुर्गासिंह और श्री० माधवसिंह आदि ५ सज्जन गिरफ़्तार भी कर लिए गए।

संयुक्त प्रान्त में गिरफ़्तारियाँ

गत १७ दिसम्बर को समाप्त होने वाले सप्ताह में, इस प्रान्त में २२८ गिरफ़्तारियाँ हुई हैं। अब तक सब मिला कर १०,४७३ व्यक्ति राजनैतिक मामले में गिरफ़्तार हो चुके हैं।

—कानपुर का २४वीं दिसम्बर का समाचार है कि पुलिस ने प्रकाश पुस्तकालय की तलाशी ली और कुछ पुस्तकें उठा कर ले गई।

—मिर्ज़ापुर के कॉङ्ग्रेस-कार्यकर्त्ता सेठ महादेवप्रसाद (स० मतवाला) को फिर १ साल की सज़ा दी गई है। पाठकों को स्मरण होगा, वे हाल ही में जेल से लौटे थे।

मर्दुमशुमारी का नम्बर मिटाने के अपराध में २६ अन्य लोग भी मिर्ज़ापूर में गिरफ़्तार किए गए हैं। वे अभी हिरासत में ही हैं।

—गत २४वीं दिसम्बर का समाचार है कि पं० मदन-मोहन मालवीय के १६ वर्षीय पौत्र श्री० कमलनारायण मालवीय को राजविद्रोहात्मक भाषण देने के अभियोग में १ वर्ष की कड़ी क़ैद और १५०) रु० जुर्माने की सज़ा दी गई है। जुर्माना न देने पर ३ माह की अतिरिक्त सज़ा दी जायगी। आप 'बी' श्रेणी में रक्खे जायँगे।

लखनऊ में ६६ गिरफ़्तारियाँ

लखनऊ का २७वीं दिसम्बर का समाचार है कि उस रोज़ दोपहर में वहाँ ४१ गिरफ़्तारियाँ हुईं। नई कॉङ्ग्रेस कमिटी के उद्घाटन के समय बाबू मोहनलाल सक्सेना, हरप्रसाद सक्सेना आदि प्रमुख कार्यकर्त्ता गिरफ़्तार कर लिए गए। फिर शाम को बाबू कैलाश पति वर्मा और बाबू परमेश्वरीदयाल गिरफ़्तार किए गए। एक विदेशी वस्त्र की दूकान पर धरना देते समय भी कुछ लोग पकड़े गए। सब मिला कर ६६ गिरफ़्तारियाँ हुई हैं।

—ख़बर है कि पं० पद्मकान्त जी मालवीय गाज़ीपुर की जेल से ६ मास की सज़ा भुगत कर छूट गए। आप इलाहाबाद आ गए हैं।

—स्थानीय समाचार है कि गत २६ दिसम्बर को एक २२ वर्ष के युवक ने यमुना में डूब कर आत्म-हत्या कर ली।

—आगरे की २२ दिसम्बर की ख़बर है कि सहयोगी 'सैनिक' के सम्पादक श्री० सरदारसिंह को 'दो सरकारें' नामक लेख छापने के अभियोग में १ साल की क़ैद और २५०) रु० जुर्माने की सज़ा दी गई है। जुर्माना न देने पर ३ मास की अतिरिक्त सज़ा भुगतनी पड़ेगी।

पुलिस पर आक्रमण

ख़बर है कि गत २६वीं दिसम्बर को कस्मा नामक एक स्थानीय गाँव में सभा हो रही थी; पुलिस के कुछ जवानों ने वहाँ जाकर सभा को तितर-बितर कर दी और अयोध्या नामक एक व्यक्ति को गिरफ़्तार किया। कहा जाता है, कि कॉन्स्टेबिलों के पुलिस स्टेशन पर पहुँचने के पहले ही, क भीड़ ने उन पर लाठियों से आक्रमण किया और अयोध्या को छुड़ा लिया। एक कॉन्स्टेबिल सख़्त घायल हुआ है। कॉन्स्टेबिलों के एक नए दल के पहुँचने पर भीड़ भाग गई।

कहा जाता है कि अभी तक २७ मनुष्य गिरफ़्तार किए गए, जिनमें कुछ इस आक्रमण के सम्बन्ध में पकड़े गए हैं। अयोध्या अभी तक गिरफ़्तार नहीं किया जा सका है। पुलिस पीछा कर रही है!

श्रीमती उमा नेहरू के इस्तीफ़े के लिए सरकारी दबाव

स्थानीय क्रॉस्थवेट गर्ल्स कॉलेज की सहायक सेक्रेटरी श्रीमती उमा नेहरू से कॉलेज-कमिटी के सदस्यों ने अपने पद से इस्तीफ़ा न देने के लिए प्रार्थना की थी। किन्तु सरकारी सहायता के बन्द हो जाने के कारण कॉलेज की आर्थिक दशा अत्यन्त शोचनीय हो जाने से तथा सरकार के यह प्रतिज्ञा करने पर, कि यदि श्रीमती जी अपने पद से हट जायँ तो वह इस विषय में विचार कर सकती है, कमिटी के सदस्यों ने, आपसे, कॉलेज से अपना सम्बन्ध हटा लेने की प्रार्थना की। इस विषय का एक प्रस्ताव भी पास किया गया है।

—ख़बर है कि लाहौर के बोर्स्टल जेल में हफ़ीज़ुद्दौला नामक एक सिविल-सर्जन का लड़का, जिसकी अवस्था ११ वर्ष की है, और जो 'ए' श्रेणी में रक्खा गया है, अपने प्रति 'सी' श्रेणी का व्यवहार किए जाने के विरोध में अनशन कर रहा है।

—मद्रास का २७वीं दिसम्बर का समाचार है कि सलेम जेल में लाहौर षड्यन्त्र के अभियुक्त श्री० बटुकेश्वर दत्त अनशन कर रहे हैं। कहा जाता है कि उनके उस जेल में पहुँचने पर उक्त जेल के अधिकारियों ने उनके साथ क्रूरता का बर्ताव किया। जिसके विरोध में ही वे अनशन कर रहे हैं।

* * *

[हिज़ होलीनेस श्री० वृकोदरानन्द विरूपाक्ष]

भई, भारत के इन पाव-दर्जन बूढ़ों ने तो आजकल हमारी स्नेहशीला सखी नौकरशाही को बेतरह परेशान कर रक्खा है। इन्हें अगर बिना 'छान-पगहा' (!!!) के छोड़ दिया जाए, तो सारा तख़्ता ही उलट दें और अगर पकड़ कर क़ैद में रक्खा जाए, तो इनके लिए मुनक़्क़े का इन्तज़ाम करो, बकरी का दूध लाओ, रसोईदार और ख़िदमतगार का बन्दोबस्त करो! बाप रे बाप, इस ज़हमत का भी कोई ठिकाना है?

❀

बड़े हज़रत—उन्हीं बूढ़े नेहरू जी महाराज का ज़िक्र है—बाहर थे तो एक दिन इतनी आग उगल दी, कि हमारी सखी का लहँगा जलते-जलते बाल-बाल बचा, और 'अन्दर' गए तो लगे ख़ून थूकने! बताइए, अगर सखी को नाहक़ परेशान करने की नीयत न थी तो क्या जेल से बाहर कहीं थूकने की जगह न थी? थूक-थाक कर वहाँ जाते और कुछ दिन मेहमानदारी के मज़े लेते, तो क्या कुछ बिगड़ जाता? मगर नहीं, उन्हें तो था नाहक एक "भलीमानुसा" (नाक क्या सिकोड़ते हो पाठक जी, श्रीजगद्गुरु तुम्हारी तरह व्याकरण के ग़ुलाम नहीं हैं) को तङ्ग करना!

❀

अब ज़रा महामना मालवीय जी की कथा सुनिए। छुआ-छूत के ऐसे कट्टर प्रेमी कि गाँधी की आँधी की छाया भी न छूते थे। इसके बाद बहे तो ऐसे कि नैनी के जेलख़ाने में ही जाकर थमें, और साथ लेते गए सखी को दिक़ करने के लिए टोकरी भर बुख़ार! अब बताइए, वह बेचारी अपने बाल-बच्चे सँभाले या इनकी तीमारदारी करे? अगर जेल जाकर बीमार ही पड़ना था तो सच्ची और खरी कहने की ज़रूरत ही क्या पड़ी थी? क्या इतने बड़े 'पण्डित' होकर इतना भी नहीं जानते थे, कि यह सखी का राज्य है, यहाँ सच बोलना 'गुनाह कबीरा' है—"इस मैक़दे में काम नहीं होशियार का!"

❀

वे महर्षि-सी दाढ़ी वाले बूढ़े पटेल साहब तो, ख़ुदा झूठ न बुलवाए, बेचारी के पीछे हाथ धोकर पड़े रहते हैं। एसेम्बली के तख़्त पर थे तो ऐसा हैरान किया—ऐसा हैरान किया कि बस ख़ुदा की पनाह! 'डिसिपलिन' और 'कन्स्टीट्यूशन' की इतनी कनेठियाँ दीं, कि बेचारी के कान लाल हो गए! वहाँ से हटे तो कॉङ्ग्रेस वालों से मिल कर उसकी जड़ खोदने लगे। अब जेल के मज़े ले रहे हैं, तो बुढ़ौती की सहचरी बीमारी को भी बुला लिया है, उस धृष्ट कवि की तरह, जिसने कहा है,—

"या ख़ुदा जन्नत से किसी हूर को भेज,
मेरे मौला! मुझे आदत नहीं तनहाई की।"

❀

इधर इस देश के काले, ऐसे एहसान फ़रामोश हो गए हैं, कि "खायँ भतार का और गीत गाएँ यार के!"—रहते हैं, श्रीमती नौकरशाही के राम-राज्य में और मङ्गल मनाते हैं, इन बूढ़ों का—श्रीमती के शत्रुओं का!! कोई ईश्वर से उनकी आरोग्यता के लिए प्रार्थना कर रहा है, तो कोई अल्लाहताला के दरबार में सिजदा कर रहा है; कोई शाहमदार की मज़ार की ओर दौड़ रहा है तो कोई काल-भैरव को मना रहा है! कोई इन भलेमानसों से पूछता भी नहीं, कि आख़िर ये बूढ़े बच जायँगे तो क्या किसी को दिल्ली का लड्डू दे देंगे, या मथुरा का खुरचन! क्यों इनकी आरोग्यता के लिए दर-दर की ख़ाक छानी जा रही है?

❀

इसलिए श्री० १००८, यानी श्रीजगद्गुरु का फ़तवा है कि अगर आसानी से वैतरणी पार कर जाना चाहते हो और बाल-बच्चों के लिए भी कुछ कमा कर रख जाने की इच्छा है तो, मनसा, वाचा और कर्मणा से श्रीमती सखी नौकरशाही की ख़ैर मनाओ। इन्हीं के लिए जिओ और इन्हीं के लिए मरो। बोलो—'श्रीमती नौकरशाही की जय!' बोलो—'लॉर्ड इरविन साहब की जय!' बोलो—'आयुष्मती पुलिस की जय!!!'

❀

हत्तेरी स्मृति की! श्रीमती के गुणों पर इतने मुग्ध हुए, कि चचा चर्चिल की चेंचें की चर्चा ही छोड़ दी! बेचारे ने भरी सभा में—'क़ाग़ज़ पर' नहीं, बल्कि—"टेबिल पर रख दिया है, कलेजा निकाल के!" क्या कमबख़्त बुलबुले-हज़ार दास्तान चहकेगा, जो अब की चचा-चर्चिल चहके हैं! अल्लाह ने ज़बान दी है, या मुँह में भकभका लगा दिया है? न विराम न विश्राम! बोलना शुरू किया तो दिल का सारा ग़ुबार निकाल कर रख दिया!

"ख़ुदा सलामत रक्खे चचा को हज़ार बरस,
हर बरस के हों दिन पचास हज़ार।"

❀

ठीक है, जब चोंच खुली तो फिर चेंचें में कमी क्यों की जाय? कम से कम कोंपर कॉन्फ़्रेन्सियों को तो मालूम हो जाय; कि यहाँ 'वह गुड़ नहीं, जो चिउटे खायँ!' चचा की राय है कि देने-लेने की तो बात ही क्या? अगर कोई चूँ करे, तो चिमटे से उसकी गिद्दी-सी ज़बान खींच ली जाय। 'गाँधीवाद' को कुचल दिया जाय। काँङ्ग्रेस वालों को ठण्ढी-फाँसी दे दी जाय! सम्राट के मुकुट का वह महामूल्यवान 'हीरा' (भारत) क्या यों ही छोड़ दिया जाएगा। हरे-हरे! हर्गिज़ नहीं! कौन कमबख़्त कहता है, कि यों ही छोड़ दीजिए। पहने रहिए। कानों में कुण्डल बनवा लीजिए या नकबेसर पर उसी का नगीना जड़वा लीजिए!! मगर ख़ुदा के लिए इस बात को हर्गिज़ न भूलिए कि "हीरे की कनी जान के खाई न जायगी।"

❀

यह तो आपने सुना ही होगा, कि 'चमार के मनाए डाँगर नहीं मरता!' इसलिए 'गाँधीवाद' की चिन्ता छोड़िए। कमबख़्त कौवे का मांस खा चुका है! मरेगा नहीं, चाहे जन्म भर पानी पी-पीकर कोसा कीजिए। देखते नहीं, सखी नौकरशाही ने उसे कुचल डालने के लिए लज्जा और शर्म को बालाए-ताक़ रख कर, नग्न-नृत्य आरम्भ कर दिया है। मगर मरना तो दूर रहा, कमबख़्त 'माचा' भी नहीं छोड़ता!

❀

सुनते हैं, इलाहाबाद की 'विद्यार्थी-समिति' बड़ी सरगरमी से इस प्रश्न पर विचार कर रही है, कि 'विद्यार्थियों को राजनीति में भाग लेना चाहिए या नहीं?' इसलिए श्रीजगद्गुरु भी भङ्ग-बूटी छान कर इस प्रश्न पर विचार करने वाले हैं, कि आग लगने पर कुआँ खोदना चाहिए या नहीं? क्योंकि ये दोनों ही प्रश्न को एकसा ज़रूरी और एकसा महत्वपूर्ण समझते हैं। परन्तु पहले प्रश्न पर उस समय विचार होना चाहिए, जबकि जेल-यात्रियों की संख्या पूरी एक लाख तक पहुँच जाए!!

❀

(दूसरे पृष्ठ का शेषांश)

मोतिहारी में गिरफ़्तारी

पटना का ३०वीं दिसम्बर का समाचार है कि श्रीयुत गोरखप्रसाद वकील, जिन्होंने चम्पारन के कृषि-सम्बन्धी आन्दोलन में महात्मा जी को अच्छी सहायता पहुँचाई थी, मोतिहारी में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

बीमार को सज़ा

तङ्गील का २९ वीं दिसम्बर का समाचार है कि स्थानीय स्कूल के भूतपूर्व शिक्षक श्री० मन्मथनाथ सान्याल को १ साल की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई है। आप इस समय बहुत बीमार हैं, और अस्पताल में रक्खे गए हैं। अस्पताल ही में सजा का हुक्म सुनाया गया था।

—बोरसद का एक समाचार है कि वहाँ के आश्रम की दो स्वयंसेविकाएँ श्रीमती लक्ष्मी बहन और श्रीमती गोदावरी बहन को डेढ़-डेढ़ मास की क़ैद और ३०)-३०) जुर्माने की सज़ा दी गई है। जुर्माना न देने पर १५-१५ दिन की अतिरिक्त सज़ा होगी।

—बरार प्रान्तीय युद्ध-समिति के डिक्टेटर श्री० एम० एस० मराठे गत २४वीं दिसम्बर को १२४-ए धारा के अनुसार अकोला में गिरफ़्तार कर लिए गए।

—नोआखाली का २१वीं दिसम्बर का समाचार है कि राजद्रोह और षड्यन्त्र के अभियोग में गिरफ़्तार श्री० हारनचन्द्र घोष चौधरी प्रभृति ६ व्यक्तियों को सज़ाएँ दे दी गईं। श्रीयुक्त घोष को १८ महीने तथा अन्य अभियुक्तों को १-१ साल की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है।

—अमृतसर का २६वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ कटरा करमसिंह में स्वदेशी प्रचारिणी सभा की एक मीटिङ्ग में पुलिस ने बाबासिंह नामक एक व्यक्ति को गिरफ़्तार कर लिया है। यह भी समाचार है कि हिस्साम राष्ट्रीय स्वयंसेवक दल के नायक कॉमरेड ताजदीन १०८वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार किए गए। किन्तु २,०००) रु० की ज़मानत पर छोड़ दिए गए हैं।

—दरभङ्गा का २६वीं दिसम्बर का समाचार है कि बाबू दुन्दबहादुर सिंह, जो एक बड़े ज़मींदार और उत्साही कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ता हैं, ४ स्वयंसेवकों के साथ, बिना वारण्ट दिखाए ही गिरफ़्तार कर लिए गए।

—भागलपुर का २४वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ की ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी पं० बोधनारायण मिश्र और शेखर प्रेस के मैनेजर श्री० पद्माकर झा १७ (ए) धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। दोनों अभियुक्त स्थानीय जेल में रक्खे गए हैं।

—ख़बर है कि देवकली तहसील (शाहजहाँपुर) की कॉङ्ग्रेस कमिटी के अध्यक्ष श्री० शिवकुमार मिश्र गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—ख़बर है कि पश्चिमी ख़ानदेश की कॉङ्ग्रेस कमिटी के डिक्टेटर श्री० बर्वे को ३ माह की क़ैद और २००) जुर्माने की सज़ा हुई है। शहदा तालुक़ा कॉङ्ग्रेस के डिक्टेटर को भी यही सज़ा दी गई है और भी गिरफ़्तारियाँ हो रही हैं।

* * *

दमन-चक्र और गोलमेज़ परिषद

"कॉङ्ग्रेस का विद्रोह खुला विद्रोह है"

"ऐसे विकट और सामूहिक विप्लव के समय दमन-नीति से क्या लाभ हो सकता है ?"

"इस पाशविक दमन के लिए गवर्नमेण्ट के पास कोई दलील नहीं है"

सुप्रसिद्ध पत्रकार मि० ब्रेल्सफ़र्ड के कटु अनुभव

"दमन से एक दल को दबाना सम्भव है, पर सम्पूर्ण राष्ट्र को नहीं । समझौता असफल हो जाने पर ऐसे समय में, जब कि देश में विद्रोह की आग प्रज्वलित हो रही हो, कोई गवर्नमेण्ट चैन से शासन नहीं कर सकती ।"

सुप्रसिद्ध पत्रकार मि० ब्रेल्सफ़र्ड ने गोलमेज़ परिषद और सरकार की दमन-नीति के सम्बन्ध में २१ नवम्बर को अमेरिका के 'नेशन' नामक सुप्रसिद्ध पत्र में एक लेख प्रकाशित कराया था । पाठकों के मनोरञ्जनार्थ हम उसका सार यहाँ देते हैं :—

"जिस समय ये पंक्तियाँ प्रकाशित होंगी, उस समय लन्दन गोलमेज़ परिषद के लिए सजधज कर लैस हो जायगा । मैं इसका अनुमान नहीं कर सकता कि पाठक उसका स्वागत किस प्रकार करेंगे, परन्तु जिस राष्ट्र के के बीच में मैं तीन सप्ताहों से भ्रमण कर रहा हूँ, वह उसे सङ्गठित घृणा और निराशा की दृष्टि से देखता है । क़ानून को तलाक़ देकर, शासन की बागडोर ऑर्डिनेन्सों के हाथों में आ गई है और ऑर्डिनेन्स पर ऑर्डिनेन्स निकलते चले जा रहे हैं । उन मकानों पर, जिनमें कॉङ्ग्रेस ऑफ़िस स्थित हैं, ताले डाले जा रहे हैं और वे ज़ब्त किए जा रहे हैं । जिस अतिथि ने कल रात्रि को तुम्हारा सत्कार और आवभगत की थी, वही दूसरे दिन सवेरे जेल में बन्द दिखाई देता है ! पुलिस लाठियों के प्रहार से आए-दिन जो जुलूस भङ्ग करती है उनकी तो गणना नहीं है । केवल लाठी-प्रहार ही से उसकी इतिश्री नहीं हो जाती ; पिछले सप्ताह में बम्बई में केवल एक जुलूस के अन्त में २०० व्यक्ति गिरफ़्तार किए गए थे और ८० घायल हुए थे, जिनकी मरहम-पट्टी अस्पताल में की गई थी । बम्बई जैसे औद्योगिक केन्द्रों में सप्ताह में एक बार और अवसर आने पर दो बार तक हड़ताल हो जाती है । मिलें बन्द हो जाती हैं और ९० प्रतिशत दुकानों में ताले लग जाते हैं । भारत भर में ६० हज़ार से ऊपर व्यक्ति देशभक्ति के अपराध में जेलों में सड़ रहे हैं और इसमें बम्बई का हाथ उसकी शक्ति से अधिक है । इन राजनैतिक क़ैदियों में से अधिकांश 'सी' क्लास में रक्खे गए हैं और उन्हें वही खाना दिया जाता है, जो अधम से अधम पातकी क़ैदियों को ; वे उसी परिस्थिति में रक्खे जाते हैं, जिसमें ये अधम क़ैदी । यूरोपियन ऑफ़िसरों की दृष्टि में, बड़े शहरों में हाथ खींच कर ज़ुल्म ढाए जाते हैं, परन्तु उन गाँवों में, जिनमें मैंने पाँच दिन भ्रमण किया है, हर प्रकार के सङ्कोच का बाँध टूट जाता है और जहाँ कहीं लगानबन्दी का आन्दोलन प्रारम्भ हो गया है, निरपराध किसान नृशंसतापूर्वक पीटे जाते हैं । आफ़तों का पहाड़ ढा देने पर और धन-जन की इतनी अधिक हानि होने पर भी बम्बई प्रेज़िडेन्सी का हिन्दू जन-समुदाय कॉङ्ग्रेस के साथ है । मैंने बड़े-बड़े गाँवों और शहरों में लोगों को प्रायः गाँधी-टोपी पहने देखा है, कहीं कहीं मुसलमानों की तुर्की टोपी ही इस ऐक्ट को भङ्ग करती है ।

मुसलमानों का रुख़

"स्वतन्त्रता के इस विकट संग्राम में मुसलमानों का कितना हाथ है, इसका अनुमान लगाना आसान नहीं है । जो लोग उसमें सम्मिलित हो गए हैं, उनमें से मुख्य-मुख्य को ख़तरनाक, परन्तु सम्माननीय पद दिए गए हैं और वे जेल जाने के लिए तैयार हैं । एक क़ानूनी क्लब में मैंने छः मुसलमान बैरिस्टरों से इस संख्या का अनुमान लगाने के लिए कहा, उनमें से प्रायः सभी का यह अनुमान था कि बम्बई प्रान्त में आधे मुसलमान कॉङ्ग्रेस के साथ हैं । एक पुलिस इन्स्पेक्टर का अनुमान एक तिहाई का था । परन्तु सबकी सम्मति इस बात में एक थी कि शिक्षित मुसलमान युवक मौलानाओं के अनुगामी नहीं हैं और वे धार्मिक युद्ध से आजिज़ आ गए हैं । सब से अधिक आश्चर्य तो मुझे इस बात पर हुआ कि मुसलमानों की जमायतुल-उलेमा जैसी कट्टर धार्मिक संस्था ने भी गोलमेज़-परिषद के बहिष्कार में कॉङ्ग्रेस का साथ दिया ।

राजनैतिक विप्लव

"राजनैतिक विप्लव के समय यह राष्ट्र प्रति दिन अधिकाधिक दृढ़ होता जाता है । उसने कॉङ्ग्रेस के कार्यों पर वाद-विवाद करना अब बन्द कर दिया है; क्योंकि कॉङ्ग्रेस कोई नया कार्य नहीं कर रही है । हर एक व्यक्ति नमक-कर को घृणा की दृष्टि से देखता है । हर एक शराब की दूकानों की निन्दा करता है । विदेशी कपड़े के बहिष्कार में अभूतपूर्व सफलता मिली है । विदेशी कपड़े के बहिष्कार का अवलम्बन हमें (अङ्गरेज़ों को) झुकाने और कॉङ्ग्रेस से समझौता करने को बाध्य करने के लिए किया गया है । परन्तु हर एक भारतीय के हृदय में यह विश्वास जम गया है कि ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत जो व्यापारिक उन्नति की गई है, उसका एकमात्र कारण भारत को चूसना था । यद्यपि बम्बई और अहमदाबाद के व्यापारियों को भयङ्कर हानि हुई है, तब भी वे कॉङ्ग्रेस के साथ हैं । करोड़पति मिल-मालिकों की धर्मपत्नियाँ और पुत्रियाँ केसरिया रङ्ग की साड़ी पहन कर दुकानों पर पिकेटिङ्ग करती हैं और उनमें से सैकड़ों पारसी और हिन्दू महिलाएँ प्रसन्नता-पूर्वक जेल जा रही हैं । मैं कॉङ्ग्रेस के इन कार्यों की आलोचना नहीं करता । राष्ट्र के सामने एक निश्चित कार्यक्रम रक्खा है । आलोचना केवल हमारे (अङ्गरेज़ों के) कार्यों की होती है । हर एक ऑर्डिनेन्स, हर एक लाठी-प्रहार और हर एक नेता की गिरफ़्तारी के साथ ही गवर्नमेण्ट के प्रति घृणा के भाव भी बहुत दृढ़ होते जाते हैं । एक औद्योगिक और व्यस्त शहर पण्डित जवाहरलाल की गिरफ़्तारी के समाचार सुन कर उसके विरोध में पूरी हड़ताल मनाएगा, और उन्हें राजविद्रोहात्मक भाषण देने के अभियोग में ढाई साल की क़ैद की सज़ा मिलने पर अपना क्रोध प्रदर्शित करने के लिए आठ दिन बाद वहाँ फिर हड़ताल मनाई जायगी । राष्ट्रपति का भाषण गवर्नमेण्ट की दृष्टि में राजविद्रोहात्मक भले ही हो, परन्तु करोड़ों भारतीय उसके एक-एक शब्द से सहमत हैं ।

"ऐसे विकट और सामूहिक विप्लव के समय दमन-नीति से क्या लाभ हो सकता है ? वह कॉङ्ग्रेस के रास्ते में रोड़े सचमुच अटका सकती है । परन्तु कॉङ्ग्रेस का विद्रोह खुला विद्रोह है, किसी गूढ़ षड्यन्त्र के लिए

लाहौल बिलाक़ूवत

आगामी अङ्क से हास्य-रस के सुप्रसिद्ध लेखक—श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए०, एल्-एल्० बी० लिखित "लाहौल बिलाक़ूवत" नामक हास्यरस-पूर्ण लेख 'भविष्य' के कई अङ्कों तक धारावाही रूप से प्रकाशित होगा, इसे नोट कर लीजिए । इसके समाप्त होने पर "रहस्यमयी" शीर्षक उपन्यास का धारावाहिक प्रकाशन प्रारम्भ होगा, जिसकी सूचना 'भविष्य' के गताङ्क में दी जा चुकी है । हमें खेद है, स्थानाभाव के कारण दोनों लेखों को एक साथ प्रकाशित करना एक बार ही असम्भव है ।

वहाँ स्थान नहीं। गाँधी के सिद्धान्तों का मुख्य आधार सत्य है, जिस पर समस्त आन्दोलन स्थिर है, उसके कार्यों की नीति अबाध है। कॉङ्ग्रेस में सङ्गठन की कमी भले ही हो, परन्तु जगह-जगह के वालण्टियर अपना कार्य किए जाते हैं। यदि हम (अङ्गरेज़) उनके सत्याग्रहियों को गिरफ़्तार करते हैं तो दूसरे उनका स्थान ग्रहण करने के लिए तैयार रहते हैं। दमन-नीति से किसी दल का विद्रोह दबाया जा सकता है, परन्तु सम्पूर्ण राष्ट्र को कुचलना असम्भव है। कोई विचारवान पुरुष यह नहीं कह सकता, कि समझौते का प्रस्ताव असफल हो जाने के बाद कोई गवर्नमेण्ट विप्लव के ज़माने में, चाहे वह अहिंसात्मक ही क्यों न हो, चैन से राज्य कर सकती है।

"परन्तु इस पाशविक दमन के लिए गवर्नमेण्ट के पास कोई दलील नहीं है। भारतीयों की ओर से जो हिंसात्मक कार्य होते हैं वे आन्दोलन के विराट स्वरूप के सामने नगण्य हैं। बड़े-बड़े शहरों में भी जुलूसों को तितर-बितर करने का एक मात्र उपाय लाठी-प्रहार रह गया है। मैंने अपने जीवन में इतनी बड़ी भीड़ को थोड़े से आदमियों की लाठियाँ इतने शान्तिपूर्वक सहते कभी नहीं देखा। वे खड़े नहीं रहते, वरन् स्त्री-पुरुष दोनों अलग-अलग बैठ जाते हैं और शान्तिपूर्वक राष्ट्रीय गीत और भाषण सुनते हैं। सच-मुच भाषण राजविद्रोहात्मक रहते हैं, परन्तु उनमें हिंसा और अशान्ति की भड़क नहीं रहती। तिस पर भी शान्ति-रक्षा के हिमायती शान्ति के नाम पर इस निरपराध भीड़ पर लाठी-प्रहार करते हैं। भारतीय इस प्रकार के शारीरिक दण्ड को हमसे अधिक घृणा की दृष्टि से देखते हैं। स्वयं उनका शारीरिक सङ्गठन निर्बल और दुबला होता है, उन्हें अङ्गरेज़ी सभ्यता की शिक्षा नहीं दी गई और कुछ भागों को छोड़ कर, उनमें फ़ौजी वीरता भी नहीं है, परन्तु जिस समय वे आपत्तियाँ झेलने के लिए आगे बढ़ जाते हैं तब वे फ़ौलाद के बन जाते हैं। हम इस बात पर तर्क-वितर्क न करेंगे कि हमारा यह पाशविक व्यवहार लज्जाजनक है। मैं यह दिखाना चाहता हूँ कि इसका कोई लाभदायक परिणाम नहीं हुआ। इस दमन-चक्र का भारतीयों पर इसीलिए कोई प्रभाव नहीं पड़ता कि उनका जातीय सङ्गठन अत्यन्त दृढ़ नींव पर स्थापित हुआ है। कुछ दिन पहले, जब मैं एक गाँव में पहुँचा, तब वहाँ लोगों ने इस बात की प्रतिज्ञा की थी कि "जब तक गाँधी जी मुक्त न कर दिए जायँगे, हम लगान न देंगे।" सदैव की भाँति पुलिस वहाँ आई और उसने किसानों को बड़ी निर्दयतापूर्वक पीटा। मैंने अपनी आँखों से उन नृशंसता के चिन्ह और घाव उनके शरीर पर देखे थे। मार के कारण उनमें से दो किसानों ने लगान दे दिया। इसके परिणाम-स्वरूप उनकी जाति की एक पञ्चायत बैठी, जिसने उन पर ५०) रुपया जुर्माना किया और इस आशय का एक प्रस्ताव पास किया कि जो भविष्य में लगान देगा, उसको सौ रुपया जुर्माना किया जायगा। जुर्माना वसूल करने का सब से सरल उपाय उन्हें जाति से बहिष्कृत कर देना है। जाति-पाँति का यह बन्धन शहरों में उतना दृढ़ नहीं है, जितना गाँवों में। यह बन्धन अब ढीला पड़ चला है और अब उसका अन्तिम समय भी आ चला है; परन्तु नष्ट होने पर भी जाति के दृढ़ सङ्गठन का श्रेय उसी को रहेगा। लाठी भीड़ को तितर-बितर कर सकती, वह हमारे मुँह पर सदैव के लिए कालिख भी पोत सकती है, परन्तु वह भारत के सामाजिक सङ्गठन पर वार नहीं कर सकती!

अभागे भारतीय पत्रकारों का वर्तमान जीवन

प्रेस-ऑर्डिनेन्स के अनुसार ५,०००) रु० की जमानत फ़ौरन दाखिल कीजिए !

प्रेस के कर्मचारी—यदि प्रेस बन्द करना हो तो हमारा वेतन पहिले अदा कर दीजिए !!

देश की विभूति—गाँधी

"यहाँ, भारतवर्ष में, गोलमेज़ के सम्बन्ध में जो समाचार आते हैं, उनमें कोई यथार्थता नहीं रहती। यह किसी की समझ में नहीं आता कि ऐसे समय में, जब कि देश में विद्रोह का दावानल प्रचण्ड वेग से प्रज्वलित हो रहा हो, गोलमेज़ में स्वतन्त्रता का कोई चार्टर तैयार किया जा सकता है। भारतीय, मज़दूर-सरकार का जो अपनी सहानुभूति लाठियों के प्रहार से दिखा रही है और अपने उन अवसरवादी देश-भाइयों का, जिन्होंने परिषद का निमन्त्रण स्वीकार किया है, खूब मज़ाक़ उड़ाते हैं। जब बम्बई का एक क़ुली दूसरे को गाली देता है तब वह कहता है कि 'तुम शीघ्र गोलमेज़ में जाने लायक़ हो जाओगे।' गोलमेज़ प्रतिनिधियों में से आठ या दस पर भारतीयों का कुछ विश्वास है, वे इनका भी अनुगमन करने के लिए तैयार नहीं। भारत के सच्चे भाग्य-निर्माता तो इस समय हमारे जेलों में हैं। गाँधी की स्वीकृति के बिना यह आशा करना भी व्यर्थ है कि कॉन्फ़्रेन्स जो शासन-विधान तैयार करेगी, भारत उस पर विचार करेगा। वे भारत के वर्तमान ऋषि और डिक्टेटर हैं। उनकी फ़ोटो उन किसानों के घरों में है, जिनके पास पहनने-ओढ़ने के थोड़े से चिथड़े और भोजन बनाने के थोड़े से पीतल के बर्तनों के सिवा कुछ नहीं है, वह हर एक दुकान पर टँगी मिलेगी, मेलों के अवसर पर उनकी फ़ोटो राधा-कृष्ण की तस्वीरों के साथ बेची जाती है। इस व्यक्ति को जेल में रख कर हमने उसे अन्तर्यामी बना दिया है।

दमन-चक्र और गोलमेज़

"ब्रिटेन की नीति का रुख़ देख कर कोई विचारवान व्यक्ति केवल एक बात कह सकता है। जब तक यह दमन-चक्र जारी रहेगा, कॉन्फ़्रेन्स केवल समय का अप-व्यय है। भूत की विवेचना करना अब अनावश्यक मालूम होता है—परन्तु साइमन कमीशन में सभी अङ्गरेज़ सम्मिलित कर, और भारत के सम्बन्ध में अपनी नीति को गूढ़ रख कर, ब्रिटिश गवर्नमेण्ट ने महापातक किया है। हमारे सम्मुख सब से भारी समस्या भारत-वासियों के हृदय में विश्वास उत्पन्न करना है। चाहे वह लिबरल-दल का हो या कॉङ्ग्रेस-दल का। मुझे अभी तक ऐसा एक भी भारतीय नहीं मिला जिन्हें गवर्नमेण्ट की सदिच्छाओं में कुछ भी विश्वास हो। सभ्य पाठको! यदि गवर्नमेण्ट की पुलिस एक ओर तुम्हारे बच्चों को निर्दयतापूर्वक पीटती रहे और बम्बई के पार्क में राष्ट्रीय झण्डा फहराने के अपराध में तुम्हारी स्त्री को हवालात में बन्द करती जावे और दूसरी ओर औपनिवेशिक स्व-राज्य देने का जाल भी फैलावे तो क्या तुम कभी ऐसे सत्य पर विश्वास करोगे? यदि हम केवल अपने वचनों पर दृढ़ रहें, तो भारतीय शासन-विधान सम्बन्धी हर प्रकार शर्तें मानने के लिए तैयार हो जाएँगे। वाक-चातुर्य से अब काम न चलेगा। यदि गवर्नमेण्ट साहस और दूरदर्शिता से काम ले तो अब भी एक नया सहानुभूति-सूचक वायु-मण्डल तैयार किया जा सकता है। और उसके लिए केवल एक चीज़ की आवश्यकता है। हमारी जेलों के दरवाज़े केवल महात्मा गाँधी के ही लिए नहीं, बल्कि सभी ६० हज़ार राजनैतिक क़ैदियों के लिए खुल जाना चाहिए। यदि हम केवल तीन ही माह के लिए शान्तिमय वायु-मण्डल प्राप्त कर सकें, तो समझौते जो अभी कठिन मालूम होते हैं और उस समझौते के लिए नत-मस्तक होना जो इतना उपहास और अपमान-जनक मालूम होता है, इतने सरल हो जाएँगे, कि उसे देख कर आश्चर्य का ठिकाना न रहेगा। यदि भारतीयों के साथ भारत के लिए एक सुचारु और व्यावहारिक शासन-विधान के सम्बन्ध में वाद-विवाद किया जाय तो हमारी सदिच्छाओं और उन मार्गों में कोई विशेष अन्तर नहीं रह जाता। अन्तर केवल अविश्वास का है, जो भयङ्कर रूप से दोनों के बीच में लहरें मार रहा है। और यह अविश्वास हमने पहले तो अपने स्वेच्छाचारी व्यवहार से और उसके बाद लाठी-प्रहार से उत्पन्न किया है। हम इस अविश्वास को केवल एक महत् कार्य द्वारा ही दूर कर सकते हैं।"

* * *

भविष्य की नियमावली

१—'भविष्य' प्रत्येक वृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२—किसी ख़ास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।

३—लेखादि काग़ज़ के एक तरफ़, हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४—हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक, किन्तु ऐसे ही पत्रों का उत्तर दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५—कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्वाददाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो, न छापा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६—लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

७—समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिएँ।

८—परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वग़ैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!

९—सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०—किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर
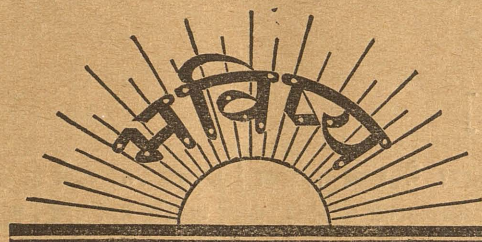
१ जनवरी, सन् १९३१

काले क़ानून के कारण—

क्या कीजिएगा हाले-दिले-
ज़ार देख कर !
मतलब निकाल लीजिए
अख़बार देख कर !!

काले क़ानून कहाँ-कहाँ जारी किए जायँगे ?

दिल्ली का २३वीं दिसम्बर का समाचार है कि वायसराय ने सन् १९३० के १०वें और ११वें ऑर्डिनेन्सों अर्थात् इन्स्टीगेशन ऑर्डिनेन्स और प्रेस-ऑर्डिनेन्स को—बम्बई, युक्तप्रान्त, पञ्जाब, बिहार और उड़ीसा, आसाम और सीमा प्रान्त के गवर्नरों को अपने-अपने प्रान्त में जारी करने का अधिकार दे दिया है।

देशी राज्यों की नमकहलाली

'टाइम्स ऑफ़ इण्डिया' के सम्वाददाता के समाचार से मालूम होता है, कि पश्चिम-भारत के देशी राज्य, आन्दोलन-कारियों के पीछे सत्तू बाँध कर पड़े हुए हैं।

राजकोट स्टेट की शासन समिति ने एक निर्वासन-क़ानून की घोषणा की है, जिसके अनुसार वहाँ के मैजिस्ट्रेटों को ब्रिटिश-भारत से निर्वासित मनुष्यों से ५००) रु० तक की ज़मानत लेने का अधिकार दिया गया है। यदि वह मनुष्य ज़मानत न देवे तो उसे ६ मास की क़ैद की सज़ा दी जायगी। यदि इस क़ैद की अवधि के भीतर या इसके बाद भी वह ज़मानत न पेश करे तो उसे ३ साल की क़ैद की सज़ा दी जायगी।

इसी क़ानून के अनुसार जगन्नाथ देशाई नामक एक व्यक्ति को ६ महीने की क़ैद की सज़ा दी गई है।

कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ता शिवनन्द जी को, जो हाल ही में जेल से छूट कर आए हैं और भावनगर गए हुए हैं, २४ घण्टे के भीतर स्टेट छोड़ देने की आज्ञा दी गई है। ऐसा नहीं करने पर उन्हें गिरफ़्तारी के अलावे २,०००) का जुर्माना भी अदा करना होगा।

कॉङ्ग्रेस-सभा पर लाठियों की वर्षा

कोयम्बटूर का २६वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ की एक कॉङ्ग्रेस-सभा में उपस्थित सज्जनों को पुलिस ने उठ जाने की आज्ञा दी। उन लोगों के ऐसा करने से इन्कार करने पर पुलिस के डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट ने लाठी चलाने की आज्ञा दे दी।

ख़बर है कि क़रीब ३० स्वयंसेवक और कुछ सर्व-साधारण के लोग घायल हुए हैं। क़रीब १२ स्वयंसेवक ग़ैरक़ानूनी संस्था के सदस्य होने के अभियोग में गिरफ़्तार किए गए हैं।

प्रभात-फेरी वालों पर लाठी की मार

धारवाड़, २५ दिसम्बर—ख़बर है कि सिरसी में प्रभात-फेरी वालों को पुलिस ने लाठी से पीटा, जिसके फल-स्वरूप, कहा जाता है, क़रीब १२ मनुष्य घायल हुए हैं।

स्वयंसेवक पीटा गया

दोहद की एक ख़बर है कि वहाँ जमायतुल-उलेमा के कुछ मुस्लिम स्वयंसेवकों ने गत २३ दिसम्बर को शराब की दुकान पर धरना दिया। अरब लेन में कुछ पियक्कड़ों ने एक स्वयंसेवक को पीटा और एक नाले में फेंक दिया। उसे कुछ चोट आई है। वह अभी अस्पताल में ही है।

* * *

जल्लाद

[श्री० 'उग्र']

प्रातः आठ-साढ़े आठ बजे का समय था। रात को किसी पारसी कम्पनी का कोई रद्दी तमाशा अपने पैसे वसूल करने के लिए दो बजे तक खूब मार-मार कर देखते रहने के कारण सुबह नींद कुछ विलम्ब से टूटी। इसीसे उस दिन हवाख़ोरी के लिए निकलने में कुछ देर हो गई थी; और लौटने में भी।

मैं वायु-सेवन के लिए अपने घर से कोई चार मील की दूरी तक रोज़ ही आया-जाया करता था। मेरे घर और उस रास्ते के बीच में हमारे शहर का ज़िला-जेल भी पड़ता था, जिसकी मटमैली, लम्बी-चौड़ी और उदास चहारदीवारियाँ रोज़ ही मेरी आँखों के आगे पड़तीं और मेरे मन में एक प्रकार की अप्रिय और भयावनी सिहर पैदा किया करती थीं।

मगर उस दिन उसी जेल के दक्षिणी कोने पर अनेक घने और विस्तृत वृक्षों की अनुज्ज्वल छाया में मैंने जो कुछ देखा, उसे मैं बहुत दिनों तक चेष्टा करने पर भी शायद न भूल सकूँगा। मैंने देखा, मुश्किल से तेरह-चौदह वर्ष का कोई रूखा, पर सुडौल; दरिद्रता से सूखा, पर सुन्दर लड़का, एक पेड़ की जड़ के पास अर्द्धनग्नावस्था में पड़ा तड़प रहा है और हिचक-हिचक कर बिलख रहा है। उसी लड़के के सामने एक कोई परम भयानक पुरुष असुन्दर भाव से खड़ा हुआ, रूखे शब्दों में उससे कुछ पूछ-ताछ कर रहा था। यह सब मैंने उस छोटी सड़क पर से देखा, जो उस स्थान से कोई पचीस-तीस गज़ की दूरी पर थी। यद्यपि दिन की बाढ़ के साथ-साथ तपन की गरमी भी बढ़ रही थी, और यद्यपि मैं थका और अनमना सा भी था, पर मेरे मन की उत्सुकता उस दयनीय दृश्य का भेद जानने को मचल उठी। मैं धीरे-धीरे उन दोनों की नज़र बचाता हुआ उनकी तरफ़ बढ़ा।

अब मुझे ज्ञात हुआ—ओह! अब मुझे ज्ञात हुआ कि वह लड़का क्यों बिलख रहा था। मैंने देखा, उसके शरीर के मध्य-भाग पर, जो खुला हुआ था, प्रहार के अनेक काले और भयावने चिह्न थे। उसको बेत लगाए गए थे। बेत लगाए गए थे उस कोमल-मति ग़रीब बालक को अदालत की आज्ञा से? उफ़! मेरा कलेजा धक् से होकर रह गया। न्याय ऐसा अहृदय, ऐसा क्रूर होता है?

अब मैं आड़ में लुक कर उस तमाशे को न देख सका। झट मैं उन दोनों के सामने आ खड़ा हुआ और उस भयानक प्राणी से प्रश्न करने लगा—क्या इसको बेत लगाए गए हैं?

"हाँ" उत्तर देने से अधिक ग़ुर्रा कर उस व्यक्ति ने कहा—"देखते नहीं हैं आप? ससुरे ने ज़मींदार के बाग़ से दो कटहल चुराए थे।"

लड़का फिर पीड़ा और अपमान से बिलबिला उठा। इस समय वह छाती के बल पड़ा हुआ था; क्योंकि उसके घाव उसे आराम से बेहोश भी नहीं होने देना चाहते थे। वह एक बार तड़पा और दाहिनी करवट होकर मेरी ओर देखने की कोशिश करने लगा। पर अभागा वैसा कर न सका! लाचार फिर पहले ही सा लेट कर अवरुद्ध कण्ठ से कहने लगा—नहीं बाबू, चुरा कहाँ सका! भूख से व्याकुल होकर लोभ में पड़ कर मैं उन्हें चुरा ज़रूर रहा था, पर ज़मींदार के रखवालों ने मुझे तुरन्त ही गिरफ़्तार कर लिया।

"गिरफ़्तार कर लिया तो तेरे घर वाले उस वक्त कहाँ थे?" नीरस और शासन के स्वर में उस भयानक पुरुष ने उससे पूछा—"क्या वे मर गए थे? तुझे बचाने—ज़मींदार से, पुलीस से, बेंत से—क्यों नहीं आए?"

"तुम विश्वास ही नहीं करते?" लड़के ने रोते-रोते उत्तर दिया—"मैंने कहा नहीं, मैं विक्रमपुर गाँव का एक अनाथ भिखमङ्गा बालक हूँ। मेरे माता-पिता मुझे छोड़ कर कब और कहाँ चले गए, मुझे मालूम नहीं। वे थे भी या नहीं, मैं नहीं जानता। लड़कपन से अब तक दूसरों के जूठन और फटकारों में पला हूँ। मेरे अगर कोई होता तो मैं उस गाँव के ज़मींदार का चोर क्यों बनता? मेरी यह दुर्गति क्यों होती?××× आह! बाप रे××× बाप×××!"

वह ग़रीब फिर अपनी पुकारों से मेरे कलेजे को बेधने लगा। मैं मन ही मन सोचने लगा कि किस रूप से मैं इस बेचारे की कोई सहायता करूँ। मगर उसी समय मेरी दृष्टि उस भयानक पुरुष पर पड़ी, जो ज़रा तेज़ी से उस लड़के की ओर बढ़ रहा था। उसने हाथ पकड़ कर अपना बल देकर उसको खड़ा किया।

"तू मेरी पीठ पर सवार हो जा?" उसी रूखे स्वर में उसने कहा—"मैं तुझे अपने घर ले चलूँगा।"

"अपने घर?" मैंने विवश भाव से उस रूखे राक्षस से पूछा—"तुम कौन हो? कहाँ है तुम्हारा घर? और इसको अब वहाँ क्यों लिए जा रहे हो?"

"मैं जल्लाद हूँ बाबू!" लड़के को पीठ पर लादते हुए ख़ूनी आँखों से मेरी ओर देख कर लड़खड़ाती आवाज़ में उसने कहा—"मैं कुछ रुपयों का सरकारी ग़ुलाम हूँ। मैं सरकार की इच्छानुसार लोगों को बेत लगाता हूँ तो प्रति प्रहार कुछ पैसे पाता हूँ, और प्राण ले लेता हूँ तो प्रति प्राण कुछ रुपए।"

"फाँसी की सज़ा पाने वालों से तो नहीं, पर बेत खाने वालों से सुविधानुसार मैं रिशवत भी खाता हूँ। सरकार की तलब से मैंने तो बाबू यही देखा है—बहुत कम सरकारी नौकरों की गुज़र हो सकती है। इसीसे सभी अपने-अपने इलाक़ों में ऊपरी कमाई के 'कर' फैलाए रहते हैं। मैं ग़रीब छोटा-सा ग़ुलाम हूँ, मेरी रिशवत की चर्चा तो वैसी चमकीली है भी नहीं कि किसी के आगे कहने में मुझे कोई भय हो। मैं तो सब से कहता हूँ कि मुझे कोई पूजे तो मैं उसके सगे-सम्बन्धियों को 'सुच्चे' बेत न लगा कर 'हलके' लगाऊँ। और नहीं—और नहीं सड़ासड़! सड़ासड़!!"

उसने ऐसी मुद्रा बना ली, मानो वह किसी को बेत लगा रहा हो। वह भूल गया कि उसकी पीठ पर उसकी 'सड़ासड़' का एक ग़रीब शिकार काँप रहा है।

"मगर इस अनाथ को धोखे में 'सुचे' बेत लगा कर मैंने ठीक काम नहीं किया। इसने जेल ही में बताया था कि मेरे कोई नहीं है! मगर मैंने विश्वास नहीं किया। मैं अपने जिस शिकार का विश्वास नहीं करता, उसके प्रति भयानक हो उठता हूँ, और मेरा भयानक होना कैसा बीभत्स होता है, इसे आप इस लड़के की पीठ पर देखें। मगर इसे 'काट' कर मैंने ग़लती की है। यही न जाने क्यों मेरा मन कह रहा है।

"इसीसे बाबू मैं इसे अपने घर ले जा रहा हूँ, वहाँ इसके घाव पर केले का रस लगाऊँगा और इसको थोड़ा आराम देने के लिए 'दारू' पिलाऊँगा, बिना इसको चङ्गा किए मेरा मन सन्तुष्ट न होगा, यह मैं ख़ूब जानता हूँ!"

भैंसे की तरह अपनी कठोर और रूखी पीठ पर उस अनाथ अपराधी को लाद कर वह एक ओर बढ़ चला। मगर मैंने उसे बाधा दी—

"सुनो तो, मुझसे भी यह एक रुपया लेते जाओ। मुझको भी इस बालक की दुर्दशा पर दया आती है।"

"क्या होगा रुपया बाबू?"—भयानकता से मुस्करा कर उसने रुपए की ओर देखा और उसको मेरी उँगलियों से छीन कर अपनी उँगलियों में ले लिया।

"इसको 'दारू' पिलाना, पीड़ा कम हो जायगी। अभी एक ही रुपया जेब में था, मैं शाम को इसके लिए कुछ और देना चाहता हूँ। तुम्हारा घर कहाँ है? नाम क्या है?"

"मैं शहर के पूरब उस क़ब्रिस्तान के पास के डोमाने में रहता हूँ। डोमों का चौधरी हूँ। मेरा नाम रामरूप है—पूछ लीजिएगा।"

२

उस अनाथ लड़के का नाम 'अलियार' था, यह मुझे उक्त घटना के सातवें या आठवें दिन मालूम हुआ। ग्रामीणों में 'अलियार' शब्द 'कूड़ा-कर्कट' के पर्याय-रूप में प्रचलित है। उस लड़के ने मुझे बताया। उनके गाँव वालों का कहना है कि उसे पहले-पहल गाँव के एक 'भर' ने 'अलियार' पर पड़ा पाया था। उसी ने कई बरसों तक उसको पाला भी और उसका उक्त नाम-करण भी किया।

अलियार के अङ्ग पर के बेतों के घाव, बधिक रामरूप के सफल उपायों से तीन-चार दिनों के भीतर ही सूख चले; मगर वह बालक बड़ा दुर्बल-तन और दुर्बल-हृदय था। सम्भव है, उसको बारह बेतों की सज़ा सुनाने वाले मैजिस्ट्रेट ने, पुलिस की मायामयी डायरियों पर विश्वास कर, उसकी उम्र अठारह या बीस वर्ष की मान ली हो, मगर मेरी नज़रों में तो वह बेचारा चौदह-पन्द्रह वर्षों से अधिक वयस का नहीं मालूम पड़ा। तिस पर उसकी यह रूखी-सूखी काया! आश्चर्य!! किसी डॉक्टर ने किस तरह उसको बेत खाने योग्य घोषित किया होगा। जेल के किसी ज़िम्मेदार और शरीफ़ अधिकारी ने किस तरह अपने सामने उस बेचारे को बेतों से कटवाया होगा!!

जब तक अलियार खाट पर पड़ा-पड़ा कराहता रहा, अपने उस बेत खाने के भयानक अनुभव का स्वप्न देख-देख कर अपनी रक्षा के लिए करुण दुहाइयाँ देता रहा, तब तक मैं बराबर, एक बार रोज़, रामरूप की गन्दी झोपड़ी में जाता था और अपनी शक्ति के अनुसार प्रभु के उस असहाय प्राणी की मन और धन से सेवा करता था, मगर मेरे इस अनुराग में एक आकर्षण था और वह था जल्लाद रामरूप।

न जाने क्यों उसका वह 'अलकतरा' रङ्ग, उसकी वह भयानक नैपालियों-सी नाटी काया, उसका वह मोटा, बीभत्स अधर और पतला ओष्ठ, जिस पर घनी, काली, भयावनी तथा अव्यवस्थित मूँछों का भार अशो-

भायमान था, मुझे कुछ अपूर्व-सा मालूम पड़ता था। न जाने क्यों उसकी बड़ी-बड़ी, डोरीली, नीरस और रक्त-वर्ण आँखें मेरे मन में एक तरह की सिहर सी पैदा कर देती थीं। पर आश्चर्य! इतने पर भी मैं उसे अधिक से अधिक देखना और समझना चाहता था।

उसकी मिट्टी की झोपड़ी में उसके अलावा उसकी प्रौढ़ा स्त्री भी थी। एक दिन जब मैंने रामरूप से उसकी जीवनी पूछी और यह पूछा कि उसके परिवार का कोई और भी कहीं है या नहीं, तो उसने अपनी कहानी मुझे विचित्र सुनाई।

"बाबू" उसने बताया—"पुश्त दो पुश्त से ही नहीं, मेरे ख़ानदान में तेरह पुश्त से यही जल्लादी का काम होता है। हाँ, उसके पहले, मुसलमानी राज में, मेरे पुरखे डाके डाला करते थे। मेरे दादा के दादा ऐसे प्रतापी थे कि सन् ५७ के ग़दर में उन्होंने इसी शहर के उस दक्खिनी मैदान में सरकार बहादुर के हुकुम से पाँच सौ और तीन पचीस और दो दस आदमियों को चन्द दिनों के भीतर ही फाँसी पर लटका दिया था। उन दिनों वह आठों पहर शराब छाने रहा करते थे। और कैसी शराब? मामूली नहीं बाबू, गोरों के पीने वाली—अङ्गरेज़ी!"

मैंने उसे टोका—रामरूप! क्या अब भी फाँसी देने के पूर्व तुम लोगों को शराब मिलती है?

"हाँ, हाँ, मिलती क्यों नहीं बाबू, मगर 'देसी' की एक बोतल का दाम मिलता है, विलायती का नहीं, जिसको छान-छान कर मेरे दादा के दादा गाहियों के गाही लोगों को काल के पालने पर झुला देते थे। वही मेरे ख़ानदान में सब से अधिक धनी और ज़बरदस्त भी थे। लम्बे-चौड़े तो वह ऐसे थे कि बड़े-बड़े पलटनिए साहब उनका मुँह तकर-तकर ताका करते थे। मगर उनमें एक दोष भी बहुत बड़ा था। वह शराब बहुत पीते थे। इसी से वह तबाह हो गए और मरते-मरते ग़दर की सारी कमाई फूँक-ताप गए। हाँ, मैं भूल कर गया बाबू! वह मरे नहीं, बल्कि शराब के नशे में एक दिन बड़ी नदी में कूद पड़े और तब से लापता हो गए। नदी के उस ऊँचे घाट पर हमारे दादा ने उनका 'चौरा' भी बनवाया है, जिसकी सैकड़ों डोम पूजा किया करते हैं, और हमारे वंश के तो वह 'वीर' ही हैं।"

अपने 'वीर' परदादा के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए, उनकी कहानी समाप्त करते-करते रामरूप ने धीरे से अपने दोनों कान उमेठे।

"रामरूप!" मैंने कहा—"जाने दो अपने पुरखों की कहानी। वह बड़ी ही भयानक है। अब तुम यह बताओ कि तुम्हारे कोई बच्ची-बच्चा भी है?"

"नहीं बाबू!" किञ्चित् गम्भीर होकर उसने कहा—"मेरी औरतिया को कोई सात बरस हुए—एक लड़का हुआ ज़रूर था, मगर वह दो साल का होकर जाता रहा। बच्चे तो वैसे भी मेरे ख़ानदान में बहुत कम जीते हैं। न जाने क्यों। जहाँ तक मुझे मालूम है, मेरे किसी भी पुरखे का एक से ज़्यादा बच्चा नहीं बचा! मुझको तो वह भी नसीब नहीं। मेरी लुगैया तो अध-बूढ़ी हो जाने पर भी अभी बच्चा-बच्चा रिरियाया करती है। मगर यह मेरे बस की बात तो है नहीं। मैं तो आपही चाहता हूँ कि मेरे एक 'वीर' बच्चा हो, जो हमारे इस पुश्तैनी रोज़गार को मेरे बाद सँभाले, पर जब दाता देता ही नहीं, तब कोई क्या करे?"

"जब तक तुम्हारे और कोई नहीं है," मैंने उस जल्लाद के हृदय की थाह ली—"तब तक तुम इसी भिखमङ्गे को क्यों नहीं पालते-पोसते? तुमने कुछ अन्दाज़ लगाया है? कैसा है उसका मिज़ाज? यह तुम्हारे यहाँ खप जाने लायक़ है?"

"है तो, और मेरी लुगैया उसको चाहती भी है।" रामरूप ने ज़रा मुस्करा कर कहा—"पर मेरे अन्दाज़ से वह अखियार कुछ दब्बू और डरूं है। और मेरे लड़के को तो ऐसा निडर होना चाहिए कि ज़रूरत पड़े तो बिना डरे काल की भी खाल खींच ले और जान निकाल ले। यह मङ्गत छोकरा भला मेरे रोज़गार को क्या सँभालेगा?"

"कोई दूसरा रोज़गार देखो रामरूप," मैंने कहा—"छोड़ो इस हत्यारे व्यापार को, इसमें भला तुम्हें क्या आनन्द मिलता होगा। ग़ज़ब की है तुम्हारी छाती, जो तुम लोगों को प्रसन्न भाव से बेत लगाते हो और फाँसी के तख़्ते पर चढ़ा कर अपने परदादा के शब्दों में काल के पालने पर झुला देते हो! मगर यह सुन्दर नहीं!"

"हा हा हा हा!" रामरूप ठठाया—"आप कहते हैं यह सुन्दर नहीं! नहीं बाबू, हमारे लिए तो यह परम सुन्दर है। आप जानते ही हैं, मैं आप लोगों की 'नीच जाति' का एक तुच्छ प्राणी हूँ। आप तो नए ख़याल के आदमी हैं, इसलिए न जाने क्या समझ कर इस लड़के के प्रेम में मेरी झोपड़ी तक आए भी हैं, नहीं तो मैं और मेरी जाति इस इज़्ज़त के योग्य कहाँ? मेरे घर वाले यदि जल्लादी न करते, तो आप लोगों के मैले साफ़ करते और कुत्तों को मारते। मगर—हा हा हा हा—कुत्तों को मारने से तो आदमी को मारना कहीं अच्छा है, इसे आप भी मानेंगे, यद्यपि मेरी समझ से कुत्ता मारना और आदमी मारना, जल्लाद के लिए एक ही बात है। हमारे लिए वे भी अपरिचित और निरपराध और ये भी। दूसरों के कहने से हम कुत्तों को भी मारते हैं, और कुत्तों से ज़्यादा समझदारों—आदमियों—को भी!"

३

इसके बाद मुझे एक काम के सिलसिले में बम्बई चला जाना पड़ा और वहाँ पूरे दो महीने रुकना पड़ा। वहाँ से लौटने पर मैं भूल गया उस जल्लाद को और उसके विचित्र परिचित उस अखियार को। प्रायः दो बरस तक मुझे उनकी कोई ख़बर न थी। फ़ुर्सत भी, अपनी मानविक हाय-हायों से, इतनी न थी कि उनकी ओर ध्यान देता।

मगर उस दिन अचानक अखियार दिखाई पड़ा, और मैंने नहीं, उसीने मुझको पहचाना भी। मुझे इस बार वह कुछ अधिक स्वस्थ, प्रसन्न और सुन्दर मालूम पड़ा।

"कहाँ रहते हो आजकल अखियार?" मैंने दरियाफ़्त किया, और तुम्हारे वह अद्भुत मित्र कैसे हैं, जिनको तुम शायद सपने में भी न भूल सकते होगे?"

"वह मज़े में हैं," उसने उत्तर दिया—"और मैं तभी से उसीके साथ रहता हूँ। तभी से उसकी वह स्त्री मुझको अपने बेटे की तरह मानती और पालती है।"

"तो क्या अब तुम भी वही व्यापार सीख रहे हो और रामरूप की गद्दी के हक़दार बनने के यत्न में हो?"

"मुझे स्वयं तो पसन्द नहीं है उसका वह हत्या-व्यापार, मगर उसकी रोटी खाता हूँ तो बातें भी माननी ही पड़ती हैं। वह अब अकसर मुझे फाँसी या बेत लगाने के वक़्त अपने साथ जेल में ले जाता है और अपने निर्दय व्यापार को बार-बार मुझे दिखा कर मुझको भी अपना ही सा बनाना चाहता है।"

"तुम जेल में जाने कैसे पाते हो?" मैंने पूछा—"वहाँ तो बिना अफ़सरों की आज्ञा के कोई भी नहीं जाने पाता। फिर ख़ासकर बेत मारने और फाँसी के वक़्त तो और भी बाहरी लोगों को मनाही रहती है।"

"मगर" उसने उत्तर दिया—"अब तो मैं उसे 'मामा' कह कर पुकारता हूँ और वह मुझे अपनी बहिन का लड़का और अपना 'गोद लिया हुआ बेटा' कह कर अफ़सरों के आगे पेश करता है। कहता है, हमारे ख़ानदान के सभी लड़कों ने इसी तरह देख-देख कर इस विद्या का अभ्यास किया था।"

"तो तुम भी अब," मैंने एक उदास साँस ली—"जल्लाद बनने की धुन में हो?—वही जल्लाद, जिसके अस्तित्व के कारण उस दिन जेल के उस कोने में पड़े तुम तड़प रहे थे और अपने भावी मामा की ओर देख-देख कर उसकी क्रूरता को कोस रहे थे। बाप रे! तुम उस भयानक रामरूप को प्यार करते हो—कर सकते हो?"

मेरे इस प्रश्न पर कुछ देर तक अखियार चुप और गम्भीर रहा। फिर बोला—नहीं बाबू जी, मैं उस पशु को तो कदापि नहीं प्यार करता, बल्कि आप से सच कहता हूँ; उससे घृणा करता हूँ। जब-जब मेरी नज़र उस पर पड़ती है, तब-तब मैं उसे उसी रूप में देखता हूँ, जिस रूप में उस दिन देखा था, जिसकी आप अभी चर्चा कर रहे थे। पर मैं उसकी स्त्री का आदर करता हूँ, जो हत्यारे की औरत होने पर भी हत्यारिणी नहीं, माँ है। बस उसी के कारण मैं वहाँ रुका हूँ, नहीं तो मेरा बस चले तो मैं उस रामरूप को एक ही दिन में इस पृथ्वी पर से उठा दूँ, जो लोगों की हत्या कर अपनी जीविका चलाता है। और आप से छिपाता नहीं, मैं शीघ्र ही किसी न किसी तरह उसको इस व्यापार से अलग करूँगा, इसमें कोई भी सन्देह नहीं।

"वह ऐसा कपड़ा नहीं है अखियार" मैंने कहा—"जिस पर कोई दूसरा रङ्ग भी चढ़ सके। रामरूप को, जहाँ तक मैंने समझा है, स्वयं भगवान भी उसके व्यापार से अलग नहीं कर सकते। दूसरे जल्लाद चाहे कुछ कच्चे वधिक हों, मगर तुम्हारा यह मामा तो ज़रूर ही सभी जल्लादों का दादा-गुरु है। बचना तुम उससे—और उसको उसके पथ से विरत करने से। नहीं तो सावधान! वह ऐसा निर्दय है कि कुछ उलटी-सीधी समझते ही तुम्हारे प्राणों तक को मसल डालेगा।"

"पर बाबू" अखियार ने सच-सच कहा—"अब तो वह भी मुझको प्यार करने लग गया है। मुझे तो कभी-कभी ऐसा ही मालूम पड़ता है। आश्चर्य से चकित होकर कभी-कभी मेरी वह नई 'माँ' भी ऐसा ही कहा और सोचा करती है। वह क्रुद्ध होने पर अब भी अक्सर मेरी माँ को बुरी तरह मारने लगता है, पर मेरी ओर—बड़ा से बड़ा अपराध होने पर भी—न जाने क्यों, तर्जनी उँगली तक नहीं उठाता। मुझे अपने ही साथ खिलाता भी है, और यहाँ-वहाँ—जेल में और छोटे-मोटे अफ़सरों के पास—ले भी जाता है। मगर इतने पर भी मैं उससे घृणा करता हूँ। उसका अमङ्गल और सर्वनाश चाहता हूँ।"

"क्यों?"—मैंने साश्चर्य पूछा।

"न जाने क्यों—न जाने क्यों!" उसने उत्तर दिया—"मैं उस पशु को कभी प्यार नहीं कर सकता। अच्छा बाबू; आपको भी देर हो रही है, मुझे भी। यहाँ रहा तो फिर कभी सलाम करने आऊँगा। इस वक़्त जाने दीजिए—सलाम!"

४

मुझको यह विश्वास नहीं था कि वह दुबला-पतला भिखमङ्गा बालक अपने निश्चय का ऐसा पक्का निकलेगा कि एक दिन सारे शहर में तहलका मचा कर छोड़ेगा। पर वह विचित्र निकला। एक दिन प्रातःकाल होते ही शहर में ज़ोरों की सनसनी फैली कि आज स्थानीय ज़िला-जेल से कोई बड़ा मशहूर फाँसी का क़ैदी भाग निकला है। यद्यपि उसके भागने के वक़्त पहरेदार वार्डरों

को कुछ आहट मिल गई थी, पर उससे कोई फ़ायदा नहीं हो सका। भागने वाला तो भाग ही गया। हाँ, भगाने वालों में से एक नवयुवक पकड़ा गया है।

समाचार तो आकर्षक था, ख़ासकर इसलिए कि फाँसी का कोई क़ैदी भागा था। मेरे जी में आया कि ज़रा जेल की ओर टहलता हुआ चलूँ। देखूँ, वहाँ शायद रामरूप या अख़ियार मिले। उन दोनों में से किसी के भी मिलने से बहुत सी भीतरी बातों का पता चल सकेगा।

कपड़े पहन और टहलने की छड़ी हाथ में लेकर जब मैं जेल के पास पहुँचा तो वहाँ का हङ्गामा देख कर एक बार आश्चर्य में आ गया। फाटक के बाहर अपने क्वार्टरों के सामने मैदान में ड्यूटी से बचे हुए अनेक वार्डर हताश और उदास खड़े गत रात्रि की घटना पर मनोरञ्जक ढङ्ग से वाद-विवाद कर रहे थे।

"भीतर बड़े साहब और कलेक्टर" एक ने दरियाफ़्त किया—"उसका बयान ले रहे हैं, ग़ज़ब कर दिया उस लौंडे ने। ऐसे ज़ालिम आदमी को भगा दिया, जिसे कि अब सरकार पा ही नहीं सकती। मैंने पहले इस छोकरे को ऐसा नहीं समझा था।"

"अरे उसको छोकरा कहते हो?" दूसरे मुसलमान वार्डर ने कहा—"साला चाहे तो बड़े-बड़ों को चरा के छोड़ दे। मगर उस पाजी की वजह से बेचारा रामरूप पिस जायगा, क्योंकि अपना-अपना बोझ हलका करने के लिए सभी ग़रीब रामरूप पर टूटेंगे। उसी की वजह से वह जेल में आने-जाने और उसके भेद पाने लायक़ हुआ था। अब देखना है, रामरूप की डोंगी किस घाट लगती है।"

"वह भी भीतर अफ़सरों के सामने जेलर साहब द्वारा बुलाया गया है। शायद उसको भी बयान देना होगा।"

"नहीं!" किसी गम्भीर वार्डर ने कहा—"जेल के कर्मचारियों से जब कोई ग़लती हो जाती है, तब अपनी सारी ताक़त लगाकर वह उसे छिपाने की कोशिश करते हैं। मुझे ठीक मालूम है, जेलर ने जेल के प्रत्येक आदमी को समझा दिया है कि उस लड़के के सिलसिले में रामरूप का नाम लिया ही न जाय और यह साबित ही न होने दिया जाय कि वह पहले से यहाँ आता-जाता था। यह बात रामरूप को और उस लौंडे को भी समझा दी गई है।"

"मगर वह पाजी छोकरा, जिसने उस मशहूर डाकू को भगा कर हमारे सर पर आफ़त का पहाड़ ढा दिया है, जेलर की सलाह मानेगा ही क्यों? अगर अपने बयान में वही कुछ कह दे?"

"अजी कहेगा ज़रूर ही!" किसी बूढ़े वार्डर ने राय दी—"आख़िर इस भगाई में एक ख़ून भी तो हुआ है। माना कि ख़ून लड़के ने नहीं, उस डाकू के किसी साथी ने किया होगा, पर अगर दूसरे न पकड़े गए तो उस वार्डर का ख़ून तो इसी छोकरे के माथे मढ़ा जायगा। उफ़! बड़े जीवट की यह घटना हुई है। मैं तो तीस साल से इस नौकरी में हूँ। इस बीच में पचासों क़ैदियों के भागने की बातें मैंने सुनीं, मगर उनमें ऐसी घटना एक भी नहीं। फाँसी के क़ैदी का भाग जाना और भाग जाने पाना—कमाल है! अरे इस मामले में जेल का सारा 'स्टाफ़' बदल दिया जायगा—बड़े साहब से लेकर छोटे जमादार तक। लोग तनज़्ज़ल होंगे, सो अलग।"

इसी समय रामरूप जेल के फाटक के बाहर आता हुआ दिखाई पड़ा। सबकी नज़र उस पर पड़ी।

"वह देखो!" एक ने कहा—"वह बाहर आया, ओह! कैसी लाल हैं आज उसकी आँखें! कैसे उसके होठ फड़क रहे हैं! ज़रा बुलाओ तो इधर। पूछा जाय कि भीतर क्या हो रहा है।"

"क्या हो रहा है रामरूप?" अपनी ओर बुला कर वार्डरों ने उससे दरियाफ़्त किया—"क्या कलेक्टर के आगे तुम्हारा नाम भी लिया जा रहा है?"

"नहीं बाबू" उसने दाँत किटकिटा कर कहा—"आप लोगों की दया से मेरा नाम तो नहीं लिया जा रहा है। वह छोकरा भी इस बारे में चुप है। कुछ बोलता ही नहीं, सिवा इसके कि—हाँ, मैंने ही उस डाकू को भगा दिया है। मैंने ही मारा भी है उस वार्डर को। मेरी सहायता में और लोग भी थे, मगर मैं उन्हें इस बारे में नहीं फँसाना चाहता। मेरी सज़ा हो, मुझको फाँसी दी जाय। मैं तैयार हूँ।"

"फिर क्या होगा राम रूप?" एक ने पूछा—"लच्छन कैसे दिखाई पड़ते हैं?"

"क्या होगा, इसे आज ही कौन बता सकता है जमादार साहब?" उसने नीरस उत्तर दिया—"अभी तो सरकार उस डाकू और उसके साथियों को पकड़ने की कोशिश करेगी। इसके बाद उस साले भिखमङ्गे को फाँसी दी जायगी। इसमें कोई सन्देह नहीं, वह पाजी ज़रूर फाँसी पर लटकाया जायगा। मैं फाँसी पाने वालों की आँखें पहचान जाता हूँ। एक ज़माने से यही काम कर रहा हूँ, और सच कहता हूँ, भैरव बाबा की दया से मैं ही उस शैतान के बच्चे को मृत्यु के झूले पर टाँगूँगा।"

न जाने क्या विचार कर रामरूप एकाएक उत्तेजित हो उठा—"इन्हीं हाथों से मैंने अच्छे-अच्छों और बड़े-बड़ों को फाँसी पर टाँग दिया है। सच मानना जमादार साहब! आज तक चार-बीस और सात आदमियों को लटका चुका हूँ। अब यह साला आठवाँ होगा; हाँ-हाँ, आठवाँ होगा! आठवाँ होगा!!"

उत्तेजित रामरूप उस भीड़ से दूर एक ओर तेज़ी से बड़बड़ाता हुआ बढ़ गया। उस समय उससे कुछ पूछने की हिम्मत न हुई।

५

मगर आश्चर्य की बात तो यह है कि धीरे-धीरे वह क्रूर-हृदय जल्लाद उस अख़ियार को प्यार करने लग गया था। अख़ियार ने उस दिन बिलकुल सच कहा था। क्योंकि जब सेशन अदालत से, और किसी प्रामाणिक मुजरिम के अभाव में और प्रमाणों के आधिक्य से, अख़ियार को फाँसी की आज्ञा सुनाई गई, तब वही रामरूप कुछ ऐसा उत्तेजित हो उठा कि पागल-सा हो गया।

"हा हा हा हा?" वह अदालत के बाहर ही निस्सङ्कोच बड़बड़ाने लगा—"अब लूँगा—अब बच्चू से लूँगा बदला! क्यों न लूँ बदला उससे? मैंने सरकारी हुक्म से उसको, उस दिन बेत मारे थे, जिसका उसने मुझसे ऐसा भयानक बदला लिया है कि मेरी रोज़ी मारते-मारते बचा। वह तो बचा ही, उस पापी ने मेरी औरत को अपने प्रेम में खाट पकड़वा दी है। अब भोगो बेटे; अब झूलो पालना बच्चू! हा हा हा हा हा!!"

यद्यपि अख़ियार की फाँसी की आज्ञा सुन कर जल्लाद रामरूप अट्टहास कर उठा, पर मेरा तो कलेजा धक् से होकर रह गया। मुझको ऐसी आशा नहीं थी कि जिस कहानी का आरम्भ, उस दिन जेल के कोने में, अख़ियार और जल्लाद से मेरे परिचित होने से हुआ था, उसका अन्त ऐसा वीभत्स होगा। मैंने बड़े दुःख के साथ, उस दिन यह निश्चय किया कि अब मैं कभी उस रामरूप के सामने न जाऊँगा।

मगर संयोग को कौन टाल सकता है? जिस दिन अख़ियार को दुनिया के उस पार फेंक देने का निश्चय हो गया था, उससे एक दिन पूर्व मैंने उसको अन्तिम बार पुनः देखा। हाथ में एक हाँडी लिए परम उत्तेजित भाव से वह शहर की एक चौमुहानी पर खड़ा था और उसको घेरे हुए लड़कों, युवकों और बेकारों की एक भीड़ खड़ी थी। अजीब-अजीब प्रश्न लोग उस पर बरसा रहे थे और वह उनके रोमाञ्चकारी उत्तर दे रहा था। किसी ने पूछा—"तुम कौन हो भाई?"

"मैं?" वह मुस्कराया—"मैं महापुरुष हूँ। आह! तुम आश्चर्य कर रहे हो कि मैं महापुरुष क्योंकर हो सकता हूँ, क्योंकि मैं तो ख़ानदानी जल्लाद रामरूप हूँ। पर अफ़सोस! तुम नहीं जानते कि प्रत्येक जल्लाद महापुरुष होता है।"

"अच्छा यार" एक ने कहा—"हमने मान लिया कि तुम महापुरुष हो। पर यह तो बताओ कि आज यहाँ इस तरह क्यों खड़े हो? यह तुम्हारे हाथ में जो हाँडी है, इसमें क्या है?"

"यह हाँडी, × × ×" उसने हाँडी का मुँह भीड़ के सामने किया—"इसमें फाँसी की रस्सी है ज़रूर, यह असली नहीं है। असली रस्सी तो दुरुस्त करके आज ही जेल में ऐसे ही एक बर्तन में रख आया हूँ। वह रस्सी इससे कहीं सुन्दर, कहीं मज़बूत है। इसको तो केवल अभ्यास के लिए अपने साथ लेता आया हूँ। आज रात भर इन उस्ताद हाथों को फाँसी देने का अभ्यास ज़ोर-शोर से कराऊँगा! क्योंकि इस बार मामूली आदमी को नहीं लटकाना है। इस बार उसको लटकाना है, जिसके झूलते ही कोई आश्चर्य नहीं, जो मेरी औरतिया भी इस दुनिया से कूच कर जाय; क्योंकि वह उस पापी को प्यार करती है।"

किसी ने कहा—ज़रा अपने गले में इस रस्सी को लगा कर बताओ तो रामरूप कि फाँसी की गाँठ कैसे दी जाती है?

"हाँ, हाँ" उसने रस्सी को अपने गले के चारों ओर लपेट कर, गाँठ देना शुरू किया—"यह देखो, यह गले का फन्दा है और यह है मेरी मृत्यु-गाँठ। बस, अब केवल चबूतरे पर खड़ा कर झुला देने की कसर है। जहाँ एक झटका दिया कि बच्चू गए जम-धाम। यह देखो! यह देखो!"

अपने गले में उस रस्सी को उसी तरह लपेटे वह उन्मत्त रामरूप हाँडी फेंक कर, भीड़ को चीरता हुआ एक ओर बेतहाशा भाग गया!

* * *

दूसरे दिन अख़ियार को फाँसी देने के लिए जब सशस्त्र पुलिस, मैजिस्ट्रेट, जेल-सुपरिण्टेण्डेण्ट और अन्य अधिकारी एकत्र हुए तो मालूम हुआ कि जल्लाद रामरूप हाज़िर नहीं है!

पुलिस दौड़ी, जेल के वार्डर दौड़े, उसको ढूँढ़ने के लिए। मगर वह मिल न सका। न जाने कहाँ ग़ायब हो गया। अख़ियार को उस दिन फाँसी नहीं हो सकी।

मगर उसी दिन दोपहर को कुछ लोगों ने रामरूप को शहर के बाहर एक बरगद की डाल में, फाँसी पर टँगे देखा। उसकी गर्दन में वही रस्सी थी, जिसको कुछ घण्टे पूर्व शहर के अनेक लोगों ने उसके हाथ में देखा था। उस समय भी उसकी आँखें खुली, भयानक और नीरस थीं। जीभ मुँह से कोई बारह अङ्गुल बाहर निकल आई थी और उसका दानवी रूप ऐसा रोमाञ्चकारी हो गया था कि बड़े-बड़े हिम्मती तक उसकी ओर देख कर दहल उठते थे!

* * *

इटली का स्वाधीनता-संग्राम और फ़ैसिस्टवाद

[श्री० मुन्शी नवजादिकलाल जी श्रीवास्तव]

विगत यूरोपीय महा संग्राम के बाद से जिन तीन राजनैतिक आन्दोलनों ने संसार की दृष्टि अपनी ओर आकर्षित किया है, उनमें प्रथम महात्मा लेनिन का बोलशेविकवाद, द्वितीय महात्मा गाँधी का अहिंसात्मक असहयोग और तृतीय वीरवर बेनितो मुसोलिनी का फ़ैसिस्टवाद है। इन तीनों आन्दोलनों के प्रवर्तकों का उद्देश्य प्रायः एक है; तीनों ही शान्ति के उपासक और संसार के मङ्गलाकांक्षी हैं। यद्यपि महात्मा गाँधी का आन्दोलन राजनैतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने की एक नवीन प्रणाली मात्र है और मुसोलिनी तथा लेनिन का उद्देश्य संसार के सामने एक सम्पूर्ण नई जीवन-प्रणाली रखना है, परन्तु महत्व की दृष्टि से तीनों ही विचित्र, अभिनव तथा मनन करने के योग्य हैं। महात्मा गाँधी की आन्दोलन-प्रणाली कसौटी पर है; फलाफल भविष्य के गर्भ में है। लेनिन के बोलशेविकवाद की चर्चा भी काफ़ी हो चुकी है। परन्तु मुसोलिनी के फ़ैसिस्टवाद से अभी हमारे देशवासी बहुत कम परिचित हैं, इसलिए हम आशा करते हैं कि 'भविष्य' के पाठकों को इटली के स्वाधीनता-संग्राम का दिग्दर्शन कराने के साथ ही, मुसोलिनी के फ़ैसिस्टवाद पर भी थोड़ा सा प्रकाश डालना अप्रासङ्गिक न होगा।

इटली संसार का एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक देश है। राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक उत्थान तथा पतन के करिश्मे जितने इटली ने देखे हैं, उतने भारतवर्ष के सिवा और बहुत कम देशों को नसीब हुआ होगा। संसार के इतिहास में इटली कोई नवीन देश नहीं है। एक ज़माना था, जब रोमन सभ्यता का प्रभाव प्रायः समस्त यूरोप, अफ़्रिका और मध्य एशिया तक फैला हुआ था। उस समय यूरोप की समस्त जातियों को रोमन साम्राज्य के सामने सिर झुकाना पड़ा था। यहाँ तक कि पश्चिम एशिया को अपने विजय-दुन्दुभी से मुखरित कर रोमन वीर भारतवर्ष के द्वार तक पहुँच गए थे और कुछ दिनों के लिए उत्तर भारत पर अपना आधिपत्य भी जमा लिया था। शिल्प, कला, इतिहास, साहित्य और व्यवहार-शास्त्र में इटली ने जो उन्नति प्राप्त की थी, उसकी समता करने का गौरव अभी तक किसी भी आधुनिक जाति को प्राप्त नहीं है।

यद्यपि वह गौरवशाली रोम साम्राज्य अतीत के गर्भ में चला गया है, परन्तु उसकी स्मृति आज भी मौजूद है। आज भी इटली का प्रत्येक नगर, ग्राम और जनपद मानो उसके अतीत की गौरवपूर्ण गाथा सुना रहा है। आज भी इटली अद्भुत और विचित्र है। इटली की कारीगरी, इटली की इमारतें, इटली की चित्रकला और इटली की मूर्तियाँ आज भी उसके महान् अतीत की साक्षी हैं।

ऐतिहासिक सम्पद की तरह प्राकृतिक सम्पद में भी इटली अपना सानी नहीं रखता। यह प्रायद्वीप रूम सागर से घिरा हुआ है। इसके पश्चिम में विसूवियस नाम का विख्यात ज्वालामुखी पर्वत है। इटली का जलवायु गरम है, इसलिए इसका सारा पहाड़ी प्रदेश लहलहाती लताओं से परिपूर्ण है। अङ्गूर, शहतूत और अञ्जीर आदि स्वादिष्ट फल इटली में बहुतायत से होते हैं। सिसली और सार्डीनिया आदि बहुत से छोटे-छोटे द्वीप इटली के अधीन हैं। यहाँ बहुत सी ज्वालामुखी पहाड़ियाँ हैं। इटली की राजधानी रोम किसी समय संसार के बड़े और समृद्धिशाली नगरों में गिना जाता था। आज भी उसकी बराबरी में संसार के बहुत थोड़े नगर ठहर सकते हैं। रोम की सड़कों के किनारे की सुन्दर मर्मर मूर्तियाँ, सुनते हैं, आज भी देखने वालों को मुग्ध कर देती हैं। यहीं ईसाई-जगत् के प्रधान गुरु या महन्त, पोप का निवास-स्थान है। इसका विशाल महल और सेण्ट पिटर्स का गिरजाघर संसार की दर्शनीय वस्तुओं में गिने जाते हैं। कहते हैं, इतना बड़ा और ऐसा सुन्दर गिरजाघर संसार में दूसरा नहीं है। पोप की चित्रशाला भी एक अनूठी चीज़ है। इटली का यह विचित्र नगर सात छोटी-छोटी पहाड़ियों पर बसा है। पहाड़ियों के बीच में एक समतल मैदान है। शहर के बाहर वह इतिहास-प्रसिद्ध क़ब्रिस्तान है, जहाँ धर्म-प्रचार के अपराध में हज़ारों ईसाई मार डाले गए थे। ईसाई-धर्म के आदि-काल में उन पर जो अत्याचार हुए थे, उनका निदर्शन वहाँ आज भी मौजूद है। वहीं वे इतिहास-प्रसिद्ध सुरङ्गें हैं, जहाँ अपने विरोधियों के भय से ईसाई साधु छिपे रहते और अवसर पाते ही निकल कर अपने पवित्र धर्म का प्रचार किया करते थे! इटली का नेपिल्स नगर देखने योग्य अच्छे शहरों में गिना जाता है। टस्कनी नगर के चित्रकार और कवि किसी समय सारे संसार में प्रसिद्ध थे। इटली में ही वह जिनोवा नगर है, जहाँ कोलम्बस ने जन्म लिया था। कोमो के खगोल-दर्शक यन्त्र संसार में प्रसिद्ध हैं।

परन्तु इस नश्वर जगत् में कुछ भी चिरस्थायी नहीं है। इसलिए रोमन सभ्यता भी चिरस्थायिनी नहीं हो सकी। सम्राट् सीज़र के निधन के बाद ही रोम साम्राज्य का पतन आरम्भ हुआ। द्वारकापुरी के यदुवंशियों की तरह रोमन जाति को भी आत्मकलह ने ध्वंस कर डाला। सीज़र के बाद अगस्टस का आविर्भाव हुआ। इसके बेहूदे शासन ने देश को और भी दुर्बल बना डाला। अन्त में उत्तर की बर्बर जातियों के आक्रमण से रोम सम्राज्य एकदम छिन्न-भिन्न होगया।

पन्द्रहवीं शताब्दी में इटालियन सभ्यता ने फिर सारे यूरोप पर अपना प्रभाव डाला था। इस समय इटली के दान्ते, दाविन्ची, बटेलिली, लियोलेरी, गेटो, गेलीलियो, मेडिसी और मैकियावेली आदि मनीषियों ने जिस ज्ञान का प्रचार किया था, उससे सारा यूरोप उद्भासित हो उठा था, परन्तु इन मनीषियों ने अपने राष्ट्र के लाभ के लिए कोई महत्वपूर्ण कार्य नहीं किया। उस समय इटालियन पण्डितों का अध्यात्मवाद, साहित्य और शिल्पकला सारे यूरोप में फैल गई थी। परन्तु इटालियन जाति में राष्ट्रीय एकता का तनिक भी सञ्चार नहीं हो सका। इस समय इटली में कितने ही अद्भुत विद्वानों का आविर्भाव हुआ। परन्तु किसी ने बिखरी हुई राष्ट्रीय शक्ति को केन्द्रीभूत करने की कोई चेष्टा नहीं की। जिस तरह बौद्ध साम्राज्य के पतन के बाद भारतवर्ष कितने ही छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त हो गया था, उसी तरह, उस समय इटली में भी दर्जनों छोटे-छोटे राज्य स्थापित हो गए थे। इन राज्यों में पारस्परिक हिंसा-द्वेष की भी कमी न थी। इससे बहुधा वे आपस में ही लड़ा-झगड़ा करते थे। यहाँ तक कि सामान्य स्वार्थ के स्वार्थ प्रतिपक्षी को दबाने के लिए वे दूसरी जातियों से भी सहायता लेने में सङ्कोच नहीं करते थे। इन विभीषणों की कृपा से इटली पराधीनता की शृङ्खला में आबद्ध हो गया। बाहरी जातियों के बारम्बार आक्रमण के कारण इटालियनों के कष्ट की कोई सीमा न रही। आक्रमणकारियों ने इटली को छः भागों में बाँट लिया था। एकता के अभाव के कारण सारी जाति विजेता के अत्याचारों से जर्जरित हो उठी। इस तरह प्रायः आठ सौ वर्ष बीत गए।

गत चौदहवीं शताब्दी के आरम्भ में स्वदेश-प्रेमिक कोलादिरिएञ्ज़ी ने जन्म लिया और होश सँभालते ही देश की दुरवस्था देख कर काँप उठा। उसने देश-सेवा के लिए अपना अमूल्य जीवन उत्सर्ग कर दिया। अपनी सारी शक्ति लगाकर देशवासियों को जगाया। जो लोग हाथ पर हाथ धरे अवस्था के दास बने थे, उनकी आँखें खुल गईं। कोलादिरिएञ्ज़ी ने उन्हें समझाया कि देश के राजे आपस में लड़-झगड़ कर हमें तबाह कर रहे हैं। इनकी स्वार्थपरता के कारण देश में दरिद्रता फैल रही है। इनके अत्याचार सहते-सहते हमारे नाकों दम है। बस अब हमें सङ्घबद्ध होकर इनके अत्याचारों के प्रतिकार के लिए तैयार हो जाना चाहिए। और कह देना चाहिए कि हमें किसी राजा की आवश्यकता नहीं है। हम अपना शासन स्वयं कर लेंगे—प्रजातन्त्र की स्थापना करेंगे।

कोलादिरिएञ्ज़ी की वाणी का अच्छा प्रभाव पड़ा। अत्याचार-पीड़ित इटालियन मातृ-भूमि की स्वतन्त्रता के लिए मर मिटने को तैयार हो गए। देखते-देखते कोलादिरिएञ्ज़ी के अनुयायियों की संख्या बढ़ने लगी। समस्त देश में नवीन जागृति, नवीन उत्साह फैल गया। परन्तु सदियों की जमी हुई मलिन मूर्खता को अल्प आयास से दूर कर देना मुश्किल था। सङ्गठित राजशक्ति को ध्वंस करने के लिए सङ्गठित जनबल की आवश्यकता थी। राजा ने कोलादिरिएञ्ज़ी के विरुद्ध प्रचार करने के लिए सैकड़ों कर्मचारी नियुक्त किए। नतीजा यह हुआ कि राजशक्ति के भुलावे में आकर कुछ मूर्ख कोलादिरिएञ्ज़ी के शत्रु बन गए और बेचारे को नाना प्रकार से अपमानित और लाञ्छित करके अन्त में जान से ही मार डाला!

यद्यपि अन्त में उन मूर्खों को अपनी ग़लती मालूम हो गई और पछता कर उन्होंने देशभक्त कोलादिरिएञ्ज़ी की एक मर्मर मूर्ति स्थापित करके उसकी पवित्र स्मृति को अमर बना कर अपने पाप का थोड़ा सा प्रायश्चित्त भी कर डाला। परन्तु इस स्वदेश-प्रेमिक वीर की हत्या के कारण इटली फिर सैकड़ों वर्षों के लिए पराधीनता के गहरे गड्ढ़ में समा गया!

उपर्युक्त लज्जाजनक दुर्घटना के प्रायः दो सौ वर्ष बाद—पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्त में—फिर एक देशभक्त का आविर्भाव हुआ। उसका शुभ नाम था, सावोना-

रोला। यह परम दयालु पुरुष पहले पादरी था। भव-भ्रान्त प्राणियों को पवित्रता, सत्यता और धार्मिकता का उपदेश दिया करता था। यही उसके पवित्र जीवन का प्रधान लक्ष्य था। परन्तु मातृ-भूमि का पराधीनता-जनित महान कष्ट देख कर उसका हृदय पिघल गया। धर्म-प्रचार छोड़ कर वह राजनीति के कण्टकाकीर्ण मैदान में कूद पड़ा और पवित्रात्मा का कोलादिरिएञ्जो ने देशवासियों को जिस महामन्त्र से दीक्षित किया था, उसी मन्त्र की दीक्षा सावोनारोला ने भी देना आरम्भ कर दिया। हज़ारों इटालियन मातृ-भूमि को बन्धन-मुक्त करने के लिए तैयार हो गए। सावोनारोला की साधना सफल हुई! समस्त इटली में तो नहीं, परन्तु उसके फ़्लोरेन्स नामक प्रदेश में प्रजातन्त्र शासन-प्रणाली क़ायम होगई।

इस समय इटली के अन्यान्य प्रदेशों में भी देश-प्रेम की हवा चल पड़ी थी। परन्तु एक विशेष राजनीतिक व्यापार को लेकर सावोनारोला और पोप से मनो-मालिन्य हो गया, इसलिए पापी पोप ने उसे जीते जी आग में झोंकवा दिया!

इसके बाद, उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य भाग तक, इटली पूर्ववत् दुर्दशा-ग्रस्त रहा। इसी समय उत्तर इटली में फिर एक महापुरुष का आविर्भाव हुआ। इसने इटली को पुनः एकताबद्ध किया। यह इटली के पिडमेण्ट प्रदेश के राजा का मन्त्री था। इसका नाम कौण्टकेमेलियो कैवूर था।

कैवूर पहले पिडमेण्ट राज्य का एक छोटा सा ज़मींदार था। परन्तु था बड़ा मेधावी और परम चतुर। इसलिए तीस वर्ष की उमर में ही इसने राजनीतिक क्षेत्र में काफ़ी ख्याति प्राप्त कर ली थी। इसने 'लॉ रिसरजीमेण्टो' नामक एक साप्ताहिक पत्र निकाला और इस बात की चेष्टा में लगा कि किसी तरह शतधा विच्छिन्न इटली एक महान राष्ट्र के रूप में परिणत हो जाय। इधर पिडमेण्ट का चतुर नरेश इसे अपना प्रधान मन्त्री बनाने की फ़िक्र में था। इसलिए सन् १७५२ ईस्वी में कैवूर पत्र-सम्पादन छोड़ कर पिडमेण्ट राज्य का प्रधान मन्त्री नियुक्त हुआ। परन्तु उसके जीवन का प्रधान लक्ष्य था इटली को एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में परिणत करना। इसलिए राज-मन्त्री के पद पर रह कर भी उसने प्रचार-कार्य नहीं परित्याग किया। इसके साथ ही पिडमेण्ट को भी उसने एक प्रथम श्रेणी का राज्य बना डाला। राज्य-शासन की दक़ियानूसी प्रणाली को तोड़ कर सम्पूर्ण नवीन शासन-प्रणाली की प्रतिष्ठा की, राज्य की आर्थिक परिस्थिति का सुधार किया और इसके साथ ही एक शिक्षित तथा साहसी सेना का भी सङ्गठन किया। पिडमेण्ट के तत्कालीन नरेश विक्टर इमानुएल भी देश-प्रेमी नरेश था। इसने भी कैवूर के स्वप्न को सार्थक करने में काफ़ी मदद दी। फलतः इन दोनों महापुरुषों की समवेत चेष्टा से इटली का पिडमेण्ट राज्य जातीय अभ्युत्थान का केन्द्र-स्थल बन गया।

परन्तु इटली के दुर्दिनों का अभी अन्त नहीं हुआ था, इसलिए कैवूर और पिडमेण्ट-नरेश की चेष्टाओं का कोई प्रत्यक्ष फल दृष्टिगोचर नहीं हो सका। थोड़े दिनों के बाद ही इटली फिर कलह और पारस्परिक द्वेष का क्रीड़ास्थल बन गया। इसके बाद धीरे-धीरे कितने ही युग बीत गए। ऑस्ट्रिया और फ़्रान्स के शिकन्जे में पड़ कर इटली फिर तबाह हो गया। यह दुरवस्था यहाँ तक बढ़ गई—देश इतना दुर्बल और निकम्मा बन गया था कि उसके पुनरुत्थान की कोई आशा ही नहीं रह गई!

इसी समय इतिहास-प्रसिद्ध फ़्रान्सीसी विद्रोह आरम्भ हुआ। यद्यपि यह विद्रोह फ़्रान्स में हुआ था, परन्तु इसके प्रभाव से यूरोप का कोई भी देश बाक़ी नहीं रह सका। इस विद्रोह के कारण निराशान्धकार-पूर्ण इटली में फिर आशा का विमल आलोक फैल गया। इटालियन युवकों का हृदय स्वतन्त्रता के लिए व्याकुल हो गया। परदेशियों के कठिन शृङ्खल से मातृभूमि को मुक्त करने की आकांक्षा प्रबल हो उठी। परन्तु उनकी भुजाओं में इतना बल कहाँ था, जो राजशक्तियों को उलट देते? खुल्लमखुल्ला कुछ करने का मौक़ा नहीं था, इसलिए कुछ उत्साही नौजवानों ने "कारबोनरी" नाम की एक गुप्त-समिति की स्थापना की और बड़ी सावधानी से धीरे-धीरे विद्रोह का सामान एकत्र करने लगे। कुछ दिनों के बाद एक तरुण तेजस्वी विद्यार्थी ने आकर इस गुप्त-समिति में योग दिया। इस अलौकिक शक्ति-सम्पन्न युवक का नाम था जोसेफ़ मेज़िनी। यह जैसा मेधावी और चतुर था, वैसा ही सत्साहसी और उत्साही भी था। इसके संयोग ने मानो सोने में सुगन्धि का कार्य किया। समिति में एक नवीन शक्ति का सञ्चार हो गया और थोड़े ही दिनों में मेज़िनी ने उसे एक शक्तिशाली संस्था के रूप में परिणत कर दिया। परन्तु समिति में जो कई त्रुटियाँ थीं, उन्हें हज़ार चेष्टा करके भी मेज़िनी दूर नहीं कर सका। इसलिए सन् १८२० में, जब प्रकाश्य विद्रोह की घोषणा की गई, तो उसे असफल ही रह जाना पड़ा।

परन्तु मेज़िनी वीर था। असफलता उसे निराश नहीं कर सकती थी। उसने देश को अच्छी तरह देख-सुन कर उसे नए ढङ्ग से गढ़ने का विचार किया। उसने अत्यन्त मनोहर और फड़कती हुई भाषा में स्वाधीनता के उच्च आदर्शों का प्रचार आरम्भ किया। एक बार की विफलता ने उसे अच्छी तरह सावधान कर दिया था। इसलिए अबकी उसने ख़ूब फूँक-फूँक कर क़दम रक्खा। उसकी वाणी और क़लम ने देश के नवयुवकों में एक नई शक्ति और नई आशा का सञ्चार कर दिया।

इसके बाद उसने "नवीन इटली" नाम की एक संस्था स्थापित की और बड़ी सावधानी से उसकी सदस्य-संख्या बढ़ाने लगा। जो उत्साही युवक इस संस्था के सदस्य बनाए जाते, उनके सम्बन्ध में काफ़ी छानबीन की जाती, और जब वे मेज़िनी की कठिन कसौटी पर खरे उतरते तो उनसे शपथ ली जाती। इतिहासकारों का कहना है कि इस शपथ की भाषा ऐसी ओजस्विनी और सारगर्भित थी कि एक बार उसका पारायण करते ही युवकों के दिल में स्वाधीनता का सञ्चार हो जाता था।

कुछ दिनों के बाद फिर विद्रोह की घोषणा की गई। परन्तु कुछ विश्वासघातकों ने उसे सफल नहीं होने दिया। मेज़िनी के सारे परिश्रमों पर पानी फिर गया और अन्त में उसे देश छोड़ कर भाग जाना पड़ा। परन्तु जान बचाने के लिए नहीं, वरन् एक बार फिर देश के भाग्य की परीक्षा करने के लिए। फलतः मातृभूमि की गोद से अलग जाकर भी यह देश का सच्चा सेवक निश्चेष्ट नहीं बैठा। वह नवीन इटली का जन्मदाता था, उसे अपने कर्तव्य के गुरुत्व का ज्ञान था। उसने पुनः नए सिरे से कार्य आरम्भ किया और तीसरे विद्रोह की तैयारी करने लगा।

इसी समय मशहूर इटालियन वीर गेरीबाल्डी का आविर्भाव हुआ। 'नवीन इटली' का एक उत्साही सदस्य तो वह पहले से ही था, अब वह मेज़िनी की दाहिनी भुजा बन गया। मेज़िनी अगर 'नवीन इटली' का मन्त्र-दाता ऋषि था, तो गेरीबाल्डी था स्वाधीनता-यज्ञ का प्रधान ऋत्विक। मेज़िनी के महामन्त्रों ने गेरीबाल्डी में एक नवीन शक्ति का सञ्चार कर दिया था। कल्पना की तूलिका से मेज़िनी ने जिस उच्च आदर्श का कमनीय चित्र अङ्कित किया था, उसे गेरीबाल्डी ने अपने बाहुबल द्वारा वास्तव में परिणत कर दिया था। इसलिए मेज़िनी को अगर इटली का मन्त्रगुरु कहा जाय तो गेरीबाल्डी को रणगुरु कहने में कोई अत्युक्ति न होगी। अस्तु।

इन दोनों वीरों की सम्मिलित चेष्टा से इटली का भाग्याकाश उज्ज्वल हो उठा। इटली के सभी प्रान्तों की प्रजा ने एक स्वर से प्रजातन्त्र की घोषणा कर दी। इसलिए ऑस्ट्रियन बिगड़ खड़े हुए। भयङ्कर युद्ध छिड़ा। वीरवर गेरीबाल्डी मानो इस अवसर की राह देख रहा था। समर छिड़ते ही वह कमर बाँध कर कूद पड़ा और वह रण-कौशल दिखाया कि शत्रुओं के दाँत खट्टे हो गए। परन्तु अभागे इटालियनों ने इस वीर का साथ नहीं दिया। इसलिए अबकी बार भी सफलता के दर्शन नहीं हो सके।

इटली के पिडमेण्ट प्रदेश का राजा विक्टर इमानुएल, जिसका ज़िक्र हम ऊपर कर आए हैं, केवल देशभक्त ही न था, वरन् प्रजातन्त्र का भी पक्षपाती था। यद्यपि उसकी कार्य-प्रणाली स्वतन्त्र थी, तथापि वह मेज़िनी और गेरीबाल्डी के साथ मिल कर कार्य करने का अवसर ढूँढ़ रहा था। गेरीबाल्डी की असाधारण वीरता की कथा सुन कर वह उसे अपनी सेना का प्रधान सेना-नायक बना कर शत्रुओं से लोहा लेना चाहता था। उसके सुयोग्य मन्त्री कैवूर की भी यही राय थी। अन्त में सुअवसर प्राप्त हुआ। कैवूर की चेष्टा से गेरीबाल्डी ने इमानुएल की सेना का प्रधान नायक बनना स्वीकार कर लिया।

गेरीबाल्डी के नाम में जादू था। जब लोगों ने सुना कि उसने इमानुएल के सेनापति का पद स्वीकार कर लिया है, तो समस्त देश में मानो आशा और उत्साह की आँधी सी आ गई। सेनापति गेरीबाल्डी की आह्वान-वाणी सुनते ही दल के दल जवान-बूढ़े, कृषक-कारीगर और मज़दूर-मुन्शी इमानुएल की सेना में भर्ती होने लगे।

गेरीबाल्डी बड़ी मुस्तैदी से सैनिकों को युद्ध-कला की शिक्षा देने लगा। मन्त्री-प्रवर कैवूर उन दिनों युद्ध-सम्बन्धी अन्यान्य उपकरण एकत्र करने में लगा था।

काफ़ी तैयारी हो जाने पर एक दिन ऑस्ट्रियनों के विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर दी गई। लड़ाई छिड़ी और प्रबल आँधी का झोंका जिस तरह तृण के ढेर को उड़ा देता है, उसी तरह गेरीबाल्डी की सेना ने भी ऑस्ट्रियन सेना को देखते-देखते ठिकाने लगा दिया। ऑस्ट्रियन अपना सा मुँह लेकर भाग खड़े हुए।

इसके बाद और भी दर्जनों छोटी-मोटी लड़ाइयाँ हुईं और प्रत्येक बार गेरीबाल्डी ने विजय प्राप्त की। इसके साथ-साथ राजनीतिक संस्कार भी होते गए। विच्छिन्न और विभक्त इटली एकता-सूत्र में आबद्ध होकर एक बलशाली राष्ट्र के रूप में परिणत हो गया। पोप की पार्थिव क्षमता का भी विलोप हुआ। इन उत्साही वीरों की समवेत चेष्टा से सन् १८६० में उत्तर इटली का ट्रेनटिनो और वेनेसिया प्रदेश तथा मध्य इटली का रोम प्रदेश छोड़ कर अवशिष्ट सारा देश इमानुएल के अधीन कर दिया गया। सन् १८६६ में वेनेसिया से भी ऑस्ट्रियन मार भगाए गए। अन्त में पोप का रोम प्रदेश भी छीन लिया गया। गत यूरोपीय महायुद्ध के समय ऑस्ट्रियनों की अवशिष्ट सत्ता का भी इटली से विलोप हो गया।

यद्यपि सन् १८६० में इटली स्वतन्त्र हो गया था, परन्तु कैवूर के महा प्रस्थान के बाद से मुसोलिनी के अभ्युत्थान तक इटली में कोई ऐसा दूरदर्शी महापुरुष नहीं पैदा हुआ जो मेज़िनी और गेरीबाल्डी के परिश्रम के फल को स्थायी रूप प्रदान कर सकता। फलतः इतने पर भी इटली की दुर्दशा का अन्त नहीं हुआ। ऑस्ट्रिया का उखड़ा हुआ पैर फिर इटली की छाती पर जम गया। यहाँ तक कि धीरे-धीरे समस्त उत्तर इटली उसके क़ब्ज़े में आ गया। कई स्थानों पर प्रतिपेक्षी राज्यों के साथ इटली की कोई सीमा-रेखा भी निर्दिष्ट न रही।

फ़्राङ्को-प्रुसियन समर के बाद यूरोपियन शक्तियों को मालूम हुआ कि शीघ्र फिर कोई महासमर छिड़ने वाला है, इसलिए सभी अपनी-अपनी सैनिक शक्ति बढ़ाने की धुन में लगे। इसलिए इटली को भी अपनी बाहरी ताक़त बढ़ाने के लिए बाध्य होना पड़ा। इसका परिणाम इटली के लिए बड़ा भीषण हो गया। सामरिक व्यय की इतनी वृद्धि हुई कि इटालियन सरकार को मजबूर होकर अन्यान्य ख़र्च बन्द कर देना पड़ा। इसके साथ ही देश में दरिद्रता की भी वृद्धि हो गई।

इटालियन जन-नायकों की राजनीतिक अदूरदर्शिता के कारण सारे देश में एक प्रकार की विशृङ्खलता सी फैल गई। पूर्व-काल में स्वेच्छाचारी राजाओं द्वारा शासित होने के कारण मानो यह शासन-प्रणाली इटली की तमाम रगों में घुस गई। यद्यपि कैवूर इटली को एकताबद्ध करने के लिए अङ्गरेज़ों की तरह "पार्लामेण्टरी" शासन-प्रणाली की प्रतिष्ठा कर गया था। परन्तु इटली की अशिक्षित प्रजा इससे कोई लाभ नहीं उठा सकी। इसलिए विगत यूरोपीय महायुद्ध के पहले इटली की अभ्यन्तरीय अवस्था अत्यन्त विशृङ्खल हो उठी। पार्लामेण्ट के सदस्य विभिन्न दलों में विभक्त हो गए। स्वदेश-प्रेमी नेताओं का स्थान स्वार्थपर क्षमता-लोभियों ने ग्रहण कर लिया। जनता का अर्थ हड़प जाने के लिए बहुतों ने पार्लामेण्ट में अपना-अपना दल बना लिया। इससे बारम्बार मन्त्रि-सभा का पतन होने लगा। कोई भी मन्त्रि-सभा स्थायिनी या शक्तिशालिनी न हो सकी। आवश्यकीय क़ानून-क़ायदों का निर्माण पार्लामेण्ट के बदले राजा के आदेशानुसार होने लगा। यह अवस्था यहाँ तक पहुँच गई कि कई वर्षों तक पार्लामेण्ट में सरकारी बजट और आय-व्यय की आलोचना ही नहीं हो सकी। देश की यह दुरवस्था देख कर कितने ही देश-प्रेमिक और जन-नायक जर्मनी या ऐसे ही किसी शक्तिशाली राष्ट्र के हाथों में इटली का शासन-सूत्र सौंप देने की बात सोचने लगे। इतने में सारे यूरोप में सन् १९१४ की रण-दुन्दुभी बज उठी। इटली को भी बाध्य होकर समर-क्षेत्र में अवतीर्ण होना पड़ा। उस समय इटली की जनता की बाग-डोर बेनितो मुसोलिनी के हाथ में थी और इटली के सुप्रसिद्ध महाकवि डी० एमानजियो आदि कितने ही प्रतिष्ठित व्यक्ति मुसोलिनी के मतानुयायी थे। महायुद्ध छिड़ने के साल भर बाद इटली जर्मनी और ऑस्ट्रिया से मित्रता तोड़ कर इङ्गलैण्ड और फ़्रान्स के दल में आ मिला।

इस महा संग्राम में इटली ने किस तरह भाग लिया था और क्या-क्या किया था, इन बातों की आलोचना करना हमारा उद्देश्य नहीं। इसलिए इस सम्बन्ध में केवल इतना ही कह देना यथेष्ट होगा कि ६ लाख इटालियन योद्धा इस युद्ध में काम आए थे। स्वयं मुसोलिनी घायल होकर महीनों तक अस्पताल में पड़ा था और अन्त में युद्ध के अनुपयुक्त होकर घर लौट आया। अस्तु।

इस महायुद्ध में मित्र-शक्ति की विजय हुई। इटली ने ऑस्ट्रिया से अपना ट्रेण्टिनो प्रदेश वापस ले लिया, परन्तु उसे जो धन और जन की क्षति उठानी पड़ी, उसकी पूर्ति कठिन हो गई। यह धक्का इतना करारा था कि इटली के लिए सँभालना कठिन हो गया। इधर यूरोप के सोशलिस्टों ने वावेला मचाया कि इटली व्यर्थ ही इस महासमर में कूद पड़ा था। देश में विषम अर्थाभाव उपस्थित हो गया। सारा शिल्प-वाणिज्य नष्ट-भ्रष्ट हो गया। दरिद्रता और असन्तोष के कारण दङ्गा-फ़साद, हड़ताल और गृह-कलह का बाज़ार गरम हो उठा। लोगों के दुःख और दुर्दशा की सीमा न रही। इस समय जो लोग सरकार के कर्णधार थे, वे अपनी हीन प्रवृत्तियों का परिचय देने लगे। इधर रूस के बोलशेविकों के उकसाने से इटली के सोशलिस्टों ने कल-कारख़ानों पर अपना क़ब्ज़ा करके इटली में रूस की तरह सोवियट शासन की प्रतिष्ठा का स्वप्न देखना आरम्भ किया। सरकार के सूत्रधार घबरा कर श्रमिक नेताओं के साथ समझौता करने लगे। भावी अराजकता और भीषण दुर्भिक्ष की सम्भावना देख कर देश-हितैषी घबरा उठे।

परन्तु असीम क्षमताशाली मुसोलिनी ने अग्रसर होकर इटली को दुर्दशाग्रस्त होने से बचा लिया। युद्ध से लौटे हुए सिपाहियों का सङ्गठन करके, उसने पहले से ही 'फ़ेसिस्ट' आन्दोलन की नींव डाल रक्खी थी। युद्ध में ऑस्ट्रिया और जर्मनी से हार जाने तथा सन्धि-सभा में मित्र-शक्तियों की बेइनसाफ़ी देख कर उसके दिल को गहरी चोट लगी थी। वह उसी समय से इटली को एक ज़बरदस्त राष्ट्र के रूप में परिणत करने का स्वप्न देखने लगा।

[अगले अङ्क में समाप्त]

* * *

[श्री० 'इतिहास-कीट', एम० ए०]

नाना फड़नवीस

मराठा साम्राज्य के पतन का इतिहास समस्त भारत के पतन की भाँति अदूरदर्शिता और विश्वासघात के अनेक कलुषित उदाहरणों से भरा पड़ा है। जिन नीति-निपुण माण्डलिक नरेशों और पराक्रमी सेनापतियों ने उन्नतिशील मराठा साम्राज्य को शक्ति और विस्तार प्रदान करने में अपूर्व राजनीति-कौशल और प्रशंसनीय वीरत्व का परिचय दिया था; उन्हीं के सामने, जब विदेशी कूटनीतिज्ञों ने प्रलोभन और कपट का जाल फैला दिया, तो वे अपने प्यारे देश के साथ विश्वासघात तक करने में कुण्ठित न हुए! जिन माण्डलिक नरेशों को मराठा साम्राज्य का अचल आधार-स्तम्भ होना चाहिए था, उन्हीं ने पारस्परिक ईर्षा और द्वेष से अन्ध होकर एक-दूसरे का सर्वनाश करने में विदेशी डाकुओं की सहायता की; और जिन विजयी सेनापतियों को राष्ट्रीय स्वतन्त्रता का सच्चा रक्षक होना चाहिए था, उन्होंने व्यक्तिगत स्वार्थ और क्षुद्र प्रलोभनों के वशीभूत होकर चरित्रहीन विदेशी बनियों के सामने अपना गौरवान्वित मस्तक नत कर दिया। उस समय के मराठे राजनीतिज्ञों और नरेशों का व्यवहार देख कर अनायास मुँह से निकल पड़ता है कि उनमें देश-भक्ति या दूरदर्शिता का लेश-मात्र भी शेष नहीं रह गया था!!

मराठा साम्राज्य के सञ्चालकों एवं माण्डलिक नरेशों की आँखों के सामने इस प्रकार की घटनाओं के अनेक उदाहरण विद्यमान थे, जिनमें ईस्ट इण्डिया कम्पनी के कर्मचारियों ने किसी भारतीय नरेश या सेनापति को कुछ प्रलोभन देकर उससे मैत्री की, और उसकी सहायता से किसी अन्य राजा का राज्य जीतने के बाद अन्त में अपने मित्र नरेश या सेनापति का भी सर्वस्व हरण कर लिया। कुछ ही वर्षों के भीतर-भीतर मीरजाफ़र से लेकर अमींचन्द तक कितने ही देश-द्रोहियों की शोचनीय दुर्दशा का दृश्य इतना करुण था कि कोई भी जागरूक राजनीतिज्ञ इन घटनाओं की उपेक्षा नहीं कर सकता था। किन्तु ये प्रत्यक्ष घटनाएँ मराठा राजनीतिज्ञों की आँखें खोलने में असमर्थ रहीं!

मराठों की नैतिक दशा

छत्रपति शिवाजी की मृत्यु के ७५ वर्षों के भीतर ही, अठारवीं शताब्दी के मध्य में मराठा साम्राज्य उन्नति के शिखर पर पहुँच चुका था। वीरवर राघोबा ने सुदूर दिल्ली और लाहौर तक के प्रदेशों को जीत कर अफ़ग़ानों को भारत की सीमा से बाहर निकाल दिया था। दिल्ली के सम्राट तक मराठों के अधीन हो गए थे। छत्रपति शिवाजी के वंशज अभी तक सतारा की गद्दी पर विराजमान थे। परन्तु उनकी अयोग्यता के कारण साम्राज्य का सारा प्रबन्ध पेशवा के कुशल और दक्ष हाथों में था। पेशवा के अतिरिक्त मराठा साम्राज्य के चार आधार-स्तम्भ या मराठा-मण्डल के चार प्रमुख सदस्य थे—गायकवाड़, सिन्धिया, भोसला और होलकर। इन पाँच नीति-कुशल शासकों के सञ्चालन में मराठा साम्राज्य इतना प्रबल और शक्तिशाली हो गया था कि एक बार ऐसा प्रतीत होने लगा था कि यह नव-जाग्रत विशाल शक्ति भारत को दासत्व की शृङ्खला से सदा के लिए मुक्त कर देगी। किन्तु भारतभूमि को अपने देशद्रोही कुपूतों के पापों का प्रायश्चित्त करना अभी शेष था! मराठा साम्राज्य की शक्ति और विस्तार के साथ ही साथ मराठे सरदारों की स्वार्थपरता और पारस्परिक स्पर्धा भी उग्रता की चरम-सीमा पर पहुँच चुकी थी। यह द्वेषाग्नि अपनी नाशक ज्वाला को प्रकट करने के लिए अवसर ढूँढ़ ही रही थी कि अफ़ग़ानों के सङ्घर्ष ने वह अवसर बहुत शीघ्र ही उपस्थित कर दिया। पारस्परिक कलह की ज्वालामुखी का प्रथम विस्फोट पानीपत के मैदान में हुआ—जिस समय अहमदशाह अब्दाली और मराठों की सेनाएँ घमासान युद्ध में व्यस्त थीं, ठीक उसी नाज़ुक अवसर पर मल्हारराव होलकर ने देश के साथ विश्वासघात किया! मराठे सेनापतियों के लिए जिस समय मिल कर काम करने की सब से बड़ी आवश्यकता थी, उसी समय विदेशी शत्रुओं के इशारे पर नाचने वाले मल्हारराव ने अपनी सेना को युद्ध-भूमि से हट जाने की आज्ञा दी। मल्हारराव के रण से विमुख होते ही मराठी सेना के पाँव उखड़ गए। इस एक विश्वासघात का भारत के इतिहास पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि पानीपत के तीसरे युद्ध के बाद उत्तर भारत में मराठों का प्रवेश पुनः कभी न हो सका।

मल्हारराव होलकर के गर्हित कर्म के बाद तो मराठे सेनापतियों और नरेशों में देश के साथ विश्वासघात करने की परिपाटी सी स्थापित हो गई!! जिन वीर सेनापतियों ने अपने अखण्ड भुजबल और असीम पराक्रम से अटक से कर्नाटक और बङ्गाल से गुजरात तक का विशाल प्रदेश जीत कर पेशवा को एक प्रकार से समस्त भारत का क्रियात्मक सम्राट बना दिया था, उन्होंने नीति और कौशल को तिलाञ्जलि देकर, पेशवा के विरुद्ध षड्यन्त्र रचे। प्रसिद्ध मराठा सेनापति राघोबा अङ्गरेज़ों

के बहकावे में आकर पेशवा का सब से भयानक शत्रु बन बैठा ! उसने अपने भतीजे माधोराव पेशवा को धोखा देकर स्वयं पेशवा बनने के लिए अङ्गरेज़ों से गुप्त सन्धि की। मराठा-मण्डल के प्रमुख सदस्यों—गायकवाड़, सिन्धिया, भोसला और होलकर—में से प्रत्येक ने अपने अधिराज पेशवा को धोखा दिया और कम्पनी के कूटनीतिज्ञ अधिकारियों के बहकावे में आकर एक-दूसरे के राज्य पर आक्रमण तक किए ! गायकवाड़ ने प्रकट रूप से पेशवा के विरुद्ध विद्रोह किया। और गुजरात में अङ्गरेज़ों के पैर सदा के लिए जम जाने दिए। माधोजी सिन्धिया ने, जो पेशवा की ओर से अङ्गरेज़ों को गुजरात से निकाल भगाने के लिए भेजा गया था, जान-बूझ कर अङ्गरेज़ों पर आक्रमण नहीं किया। उसने अङ्गरेज़ों से पुरस्कार पाने की दुराशा में अपने देश को विदेशी लुटेरों द्वारा मनमाने तौर पर लूटे जाने के लिए अरक्षित छोड़ दिया ! मूदाजी भोसला ने पेशवा के साथ एक ऐसे समय पर विश्वासघात किया, जब मराठा साम्राज्य के हित की दृष्टि से पेशवा को मूदाजी की सहायता की सब से बड़ी आवश्यकता थी। जिस समय मराठा साम्राज्य पर चारों ओर से विपत्तियों के बादल मँडरा रहे थे, उस समय अङ्गरेज़ों को गुजरात से भगाने के अभिप्राय से पेशवा के मन्त्री ने मूदाजी को बङ्गाल पर चढ़ाई करने की आज्ञा दी; किन्तु मूदाजी भोसला, मराठा साम्राज्य के सब से बड़े शत्रु—कम्पनी के कर्मचारियों से गुप्त सन्धि करके बङ्गाल पर आक्रमण करने से विमुख रहा। आदर्श-चरित महारानी अहल्याबाई होलकर के अयोग्य उत्तराधिकारी तुकाजी होलकर ने, किसी कारण के न रहते हुए भी, केवल मात्र विदेशी कूटनीतिज्ञों के कृपापात्र बनने की पापमय अभिलाषा से, अपने निष्कपट मित्र माधोजी सिन्धिया के राज्य पर आक्रमण किया। इस शोचनीय दुर्घटना के थोड़े ही दिनों बाद अदूरदर्शी यशवन्तराव होलकर ने तो एक प्रकार से मराठा साम्राज्य का लगभग सर्वनाश ही कर दिया। जिस समय तत्कालीन महाराष्ट्र का एकमात्र राजनीतिज्ञ दौलतराव सिन्धिया मराठों की रही-सही शक्ति को सुरक्षित और सङ्गठित करने के सम्बन्ध में पूना में पेशवा के साथ परामर्श कर रहा था, उस समय अङ्गरेज़ों के बहकावे में आकर यशवन्तराव होलकर ने दौलतराव सिन्धिया के राज्य पर आक्रमण किया। वहाँ से आगे बढ़ कर उसने पूना पर आक्रमण किया और पेशवा को पूना छोड़ कर भागने के लिए विवश किया। इस प्रकार मराठे देश-द्रोहियों ने अपने पैरों में आप ही कुल्हाड़ी मार ली और अपने गर्हित अस्तित्व के साथ-साथ समस्त भारत की स्वतन्त्रता को भी ले डूबे !

तत्कालीन भारत के नरेशों और राजनीतिज्ञों की अदूरदर्शिता और देशद्रोह को देख कर हृदय आश्चर्य और ग्लानि से भर जाता है। जिस समय भोसला का सर्वनाश किया जा रहा था, उस समय सिन्धिया और होलकर अपनी-अपनी राजधानियों में सुख की नींद सो रहे थे ! जिस समय नाश की शक्ति ने सिन्धिया की ओर रुख़ मोड़ा, उस समय भोसला और होलकर निश्चिन्त बैठे हुए थे !! जिस समय कम्पनी की साम्राज्य-लिप्सा की अग्नि में होलकर की स्वतन्त्रता की आहुति दी जा रही थी, उस समय सिन्धिया और भोसला के दरबार में शायद ख़ुशियाँ मनाई जा रही थीं !!! ये तो भारतवासियों की अदूरदर्शिता और अपने देश के साथ विश्वासघात करने के उन उदाहरणों में से थोड़े से हैं, जिनका उल्लेख इतिहास के पृष्ठों में हुआ है, किन्तु इनके अतिरिक्त सेना के सिपाहियों से लेकर राजमहल के नौकरों तक में से कितने विश्वासघातक, विदेशी षड्यन्त्रकारियों की ओर मिले रहे होंगे, इसका अनुमान लगाना असम्भव है !!!

नाना फड़नवीस

नाना फड़नवीस

मराठा साम्राज्य का अन्तकाल जहाँ इस प्रकार अदूरदर्शिता के अन्धकार और निराशा के बादलों से आच्छन्न था, वहाँ उसमें प्रकाश की ज्योति और आशा के चमकते हुए नक्षत्रों का नितान्त अभाव न था। मराठा साम्राज्य में जहाँ राघोबा और माधोजी सिन्धिया के समान स्वार्थी विश्वासघातक थे, वहाँ सखाराम बापू और नाना फड़नवीस के समान स्वार्थत्यागी देशभक्त भी थे। राष्ट्रीय स्वतन्त्रता की रक्षा के प्रयत्न में अन्तिम पेशवा बाजीराव के मन्त्रियों—ख़ुरशेद जी जमशेद जी मोदी और त्र्यम्बक जी—का बलिदान इतना उज्ज्वल है कि संसार की कोई भी जाति ऐसे नीतिज्ञ देशभक्तों को पाकर अपने को गौरवान्वित समझ सकती है। किन्तु दूरदर्शिता और देशभक्ति दोनों के विचार से महाराष्ट्र के सभी राजनीतिज्ञों में नाना फड़नवीस का स्थान सर्वश्रेष्ठ है। नाना फड़नवीस अपने युग का भारतवर्ष का सर्वश्रेष्ठ राजनीतिज्ञ था। उसने एक ओर जहाँ हेस्टिंग्स तथा वेलस्ली के समान धूर्त साम्राज्यवादियों की कुटिल कूटनीति का सफलतापूर्वक सामना किया, वहाँ दूसरी ओर अपने ही देशभाइयों की विश्वासघातकता के नाशक प्रभाव से अपने देश की स्वतन्त्रता को अक्षुण्ण रखने में भी उसे कम सफलता न मिली। नाना फड़नवीस जब तक जीवित रहा, तब तक उसने पेशवा-दरबार के विरुद्ध विदेशियों की एक चाल को भी सफल न होने दिया। उसने व्यक्तिगत कष्ट सहे, पारिवारिक आपदाएँ झेलीं; अपनी अमूल्य सेवाओं के पुरस्कार में वह अपने ही देशभाइयों द्वारा जेल में बन्द किया गया; किन्तु देशभक्त नाना फड़नवीस ने पेशवा-दरबार की निस्स्वार्थ सेवा से कभी मुँह न मोड़ा।

विदेशी व्यापारियों के सम्बन्ध में नाना फड़नवीस की सदा यह नीति रही कि उन्हें किसी भी प्रकार देश में पैर रखने को स्थान न मिलना चाहिए। एक बार नाना ने माधोजी सिन्धिया को अङ्गरेज़ों से मित्रता करने की हानियाँ बताते हुए लिखा था—"अङ्गरेज़ों को इस साम्राज्य में पैर रखने की जगह नहीं मिलनी चाहिए। यदि उन्हें पैर रखने की जगह मिल गई तो सारा साम्राज्य ख़तरे में पड़ जायगा।" नाना फड़नवीस की यह उक्ति कितनी दूरदर्शितापूर्ण थी, इसे सोच कर आज भी नाना के प्रति हृदय से श्रद्धा का स्रोत उमड़ पड़ता है। नाना फड़नवीस ने आजीवन इस नीति का इतनी कठोरतापूर्वक पालन किया कि पेशवा-दरबार में रहने वाले चार्ल्स मैलेट नामक अङ्गरेज़ी राजदूत को हार मान कर पूना से एक पत्र में लिखना पड़ा—

"As long as Nana remained supreme at the Poona Court, they (the British) should never dream of obtaining a firm footing in the Marhatta Kingdom."*

अर्थात्—"पूना-दरबार में जब तक नाना की प्रधानता है, तब तक हमें (अङ्गरेज़ों को) स्वप्न में भी मराठा साम्राज्य में पैर जमा सकने की आशा नहीं रखनी चाहिए।" मराठा साम्राज्य के पतन-रूपी दुःखान्त नाटक में नाना फड़नवीस ही एकमात्र ऐसा राजनीतिज्ञ, देशभक्त और स्वार्थ-त्यागी पात्र था, जो कभी अङ्गरेज़ व्यापारियों के चङ्गुल में नहीं फँसा, जिसने आत्मीय जनों द्वारा अपमानित और प्रताड़ित होकर भी राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के टिमटिमाते हुए दीपक को प्रकाशित रक्खा और जिसने आजीवन अपने व्यक्तिगत स्वार्थ की ओर कभी दृष्टिपात नहीं किया।

नाना फड़नवीस के पूर्वज पेशवा-दरबार में राज्य के आय-व्यय का हिसाब लिखने का काम करते थे। बाल्यावस्था में नाना फड़नवीस का नाम बलालजी जनार्दन था। बालक बलालजी जनार्दन पेशवाओं के विशेष कृपा-पात्र थे। इन्हें पेशवाओं के सामीप्य के कारण मराठा साम्राज्य की राजनीति को समझने का अपूर्व सुअवसर प्राप्त हुआ था। पानीपत के मैदान में इन्होंने अपनी आँखों से मराठा-शक्ति को पारस्परिक फूट और कलह के कारण छिन्न-भिन्न होते हुए देखा था। बलालजी जनार्दन ने ही सब से पहले पानीपत से पूना पहुँच कर इस शोकजनक घटना का समाचार पेशवा को सुनाया था। इसके पहले पेशवा के पास एक व्यापारिक दूत द्वारा लाया हुआ वह प्रसिद्ध समाचार पहुँच चुका था, जिसमें कहा गया था कि—"दो मोती भूल गए, सत्ताईस मोहरें ग़ायब हैं, और चाँदी तथा ताँबे की कितनी हानि हुई है, इसका हिसाब नहीं लगाया जा सकता।" बलालजी जनार्दन के आगमन से इस दुःखद समाचार की पुष्टि हो गई।

कम्पनी की तीन इच्छाएँ

तत्कालीन पेशवा बालाजी बाजीराव के स्वास्थ्य पर इस शोकजनक दुर्घटना का इतना घातक प्रभाव पड़ा कि पानीपत के तीसरे युद्ध के कुछ ही सप्ताह के बाद उसकी मृत्यु हो गई। बालाजी बाजीराव के बाद उसका नाबालिग़ लड़का माधोराव अपने चचा राघोबा के संरक्षण में पेशवा की मसनद पर बैठा। राघोबा का पूरा नाम रघुनाथराव था। उसकी पञ्जाब-विजय आदि का उल्लेख ऊपर हो चुका है। राघोबा जितना ही वीर था, उतना ही महत्त्वाकांक्षी और अदूरदर्शी था। उसकी विवेक-

* *A letter of Charles Malet, the British ambassador at the Poona Court.*

हीन महत्वाकांक्षा ने उसकी विचार-बुद्धि को भी नष्ट कर दिया था। इसी कारण जब पेशवा-दरबार में राघोबा की प्रधानता हुई, उस समय कम्पनी को दक्षिण में अपनी नीति को सफल करने का अपूर्व सुअवसर मिला। प्रसिद्ध इतिहास-लेखक ग्राण्ट डफ़ इस समय मराठा साम्राज्य के प्रति कम्पनी की नीति का वर्णन करते हुए लिखता है—

"The Court of Directors, were desirous of seeing the Marhattas checked in their progress, and would have beheld combinations of other native powers against them with abundant satisfaction."*

अर्थात्—"कम्पनी के डायरेक्टर इस बात के इच्छुक थे कि मराठों की उन्नतिशील सत्ता को किसी प्रकार धक्का पहुँचे, और यदि देश की अन्य शक्तियाँ गुट्ट बना कर मराठों पर आक्रमण करतीं, तो वे उसे देख कर हृदय से प्रसन्न होते।"

अपनी इस अभिलाषा को पूरी करने के लिए कम्पनी के कर्मचारियों ने राघोबा को बहकाना प्रारम्भ किया। उन्होंने झूठमूठ राघोबा को यह भय दिखाया कि दक्षिण का सूबेदार निज़ामुलमुल्क बहुत ही शीघ्र मराठा साम्राज्य पर आक्रमण करने वाला है। राघोबा उस आक्रमण के धोखे में आ गया और उसने अदूरदर्शिता के कारण बम्बई के अङ्गरेज़ गवर्नर से इस आशय की एक सन्धि कर ली कि यदि निज़ाम मराठों पर आक्रमण करे तो अङ्गरेज़ सेना और सामान से मराठों की सहायता करेंगे और इस सहायता के बदले उन्हें पूना-दरबार की ओर से साष्टी (Salsette) का द्वीप और बसई (Bassein) के क़िले दे दिए जायँगे। यही सन्धि मराठा साम्राज्य के विनाश का सूत्रगत सिद्ध हुई! यद्यपि इसके बाद, न तो निज़ाम ने मराठों पर आक्रमण किया और न मराठों को अङ्गरेज़ों की सहायता की ही आवश्यकता पड़ी, तथापि इस सन्धि के द्वारा अङ्गरेज़ों को पेशवा-दरबार में घुसने और मराठों की आन्तरिक दुर्बलताओं का पता लगाने का स्वर्ण-सुयोग प्राप्त हो गया !!

इस सन्धि के बाद पेशवा के दरबार में अङ्गरेज़ों ने अपना एक दूत भेजा, जिसका नाम मॉस्टिन था। इस समय कम्पनी यह चाहती थी कि दक्षिण की तीन बड़ी-बड़ी शक्तियाँ—हैदरअली, निज़ाम और मराठे—आपस में ही लड़ती रहें। कम्पनी को यह भय था कि ये तीनों शक्तियाँ यदि किसी प्रकार एक साथ मिल गईं, तो भारत से अङ्गरेज़ों को अनायास निकाल बाहर कर सकती हैं। कम्पनी की दूसरी इच्छा यह थी कि मराठों को पारस्परिक झगड़ों में इस प्रकार फँसाए रक्खा जाय, जिससे उन्हें बङ्गाल और उत्तर भारत में अङ्गरेज़ों की बढ़ती हुई सत्ता में हस्तक्षेप करने का अवसर न मिले। कम्पनी की तीसरी इच्छा यह थी कि पेशवा-दरबार से जितना शीघ्र हो सके, साष्टी का द्वीप और बसई का क़िला प्राप्त कर लिया जाय, जिससे कम्पनी को भारत के पश्चिमी तट पर पैर फैलाने का आधार मिल जाय। इन्हीं तीनों इच्छाओं की पूर्ति के लिए कम्पनी के डायरेक्टरों ने मॉस्टिन को अपना दूत बना कर इङ्गलैण्ड से पूना-दरबार में भेजा। कम्पनी की तीसरी इच्छा के सम्बन्ध में डायरेक्टरों ने बम्बई के गवर्नर और वहाँ की काउन्सिल के नाम ३१ मार्च सन् १७६९ ई० के पत्र में लिखा—

"Salsette and Bassein, with their dependencies and the Marhatta's portion of Surat provinces. . . These are the objects you are to have in view, in all your treaties, negotiations, and military operations,—and that you must be ever watchful, to obtain."*

* *History of Marhattas*, by Grant Duff.

अर्थात्—"साष्टी और बसई, और उनके अधीनस्थ प्रदेश, और सूरत प्रान्त का वह भाग, जो मराठों के अधिकार में है × × × ये चीज़ें हैं, जिन्हें आपको अपनी सभी सन्धियों, सभी पत्र-व्यवहारों और सभी युद्धों में अपनी आँखों के सामने रखना चाहिए, और जिन्हें प्राप्त करने के लिए सदा अवसर ढूँढ़ते रहना चाहिए।"

सन् १७७२ ई० में मॉस्टिन भारत पहुँचा और बम्बई की काउन्सिल ने शीघ्र ही उसे अपना दूत बना कर पेशवा के दरबार में भेज दिया। मॉस्टिन के आगमन का उद्देश्य बताते हुए इतिहास-लेखक ग्राण्ट डफ़ लिखता है—

"Mr. Mostyn was sent to Poona by the Bombay Government, for the purpose of . . . using every endeavour, by fomenting domestic dessensions or otherwise, to prevent the Marhattas from joining Hyder or Nizam Ally."†

यशवन्तराव होलकर

अर्थात्—"बम्बई-सरकार के द्वारा श्रीयुत मॉस्टिन के पूना भेजे जाने का यह उद्देश्य था कि × × × मराठों को घर ही में एक-दूसरे से लड़ा कर, अथवा जिस प्रकार से हो सके, उस प्रकार से इस बात का प्रयत्न किया जाय कि हैदर और निज़ाम में से किसी के साथ भी मराठों की मित्रता न हो सके!"

उस समय तक गङ्गा के उत्तर में कुछ प्रदेशों पर मराठों का अधिकार हो चुका था; और मिल के इतिहास‡ से मालूम होता है कि सन् १७७३ ई० में यदि मराठों में घरेलू झगड़े उत्पन्न न हो जाते, तो वे अवध रुहेलखण्ड, कड़ा और इलाहाबाद पर आक्रमण करते। इस प्रकार अङ्गरेज़ इतिहास-लेखकों के ग्रन्थों से ही यह बात स्पष्टतः प्रमाणित हो जाती है कि उस समय मराठों के सम्बन्ध में कम्पनी की क्या नीति थी!

* *Director's letter, dated 31st March, 1769.*

† *History of Marhattas*, by Grant Duff.

‡ Mill's *History of British India, vol. iii.*

राघोबा का विद्रोह

मॉस्टिन ने पूना पहुँचते ही बड़ी चालाकी से कम्पनी की इस नीति को सफल करने का प्रयत्न आरम्भ किया। महत्वाकांक्षी राघोबा तो पहले से ही अङ्गरेज़ों का मित्र हो चुका था। उसने मॉस्टिन की सहायता करने में कोई कसर न रक्खी। किन्तु जिस दरबार में नाना फड़नवीस के समान उच्चकोटि के राजनीतिज्ञ और देशभक्त विद्यमान थे, उस दरबार में स्वार्थपरायण विश्वासघातकों और विदेशी दूतों की चालों का सफल होना कोई सरल काम न था। नाना फड़नवीस राघोबा की स्वार्थपरता और मॉस्टिन की धूर्तता को ख़ूब पहचानता था। नाना ने उस सन्धि का विरोध किया, जो राघोबा ने अङ्गरेज़ों से की थी, क्योंकि नाना समझता था कि वह सन्धि देश के लिए घोर अनिष्टकर थी। पेशवा माधोराव पूर्ण रूप से नाना के प्रभाव में था। ऐसी अवस्था में अङ्गरेज़ी दूत मॉस्टिन ने प्रत्यक्ष रूप से इस बात का अनुभव किया कि पूना-दरबार में जब तक नाना का प्रभाव है, तब तक साष्टी और बसई को प्राप्त करने की उसकी इच्छा पूरी नहीं हो सकती।

अब मॉस्टिन राघोबा और नाना में फूट डालने की चेष्टा करने लगा। राघोबा मॉस्टिन के कहने में आकर पेशवा माधोराव को नाना के प्रभाव से हटा कर अपने प्रभाव में लाने की कोशिश करने लगा। किन्तु पेशवा माधोराव इस समय तक बालिग़ हो गया था। उसके हृदय में नाना के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा थी। अतः राघोबा की अनधिकार चेष्टा के फल-स्वरूप माधोराव और राघोबा में यहाँ तक वैमनस्य बढ़ गया कि एक बार माधोराव ने विवश होकर अपने चाचा राघोबा को क़ैद कर लिया! किन्तु शीघ्र ही राघोबा फिर छोड़ दिया गया। इतने में १८ नवम्बर, सन् १७७२ ई० को २८ वर्ष की अवस्था में पेशवा माधोराव का देहान्त हो गया! इस अल्प आयु में माधोराव की मृत्यु के सम्बन्ध में बहुतों को अङ्गरेज़ी दूत मॉस्टिन पर सन्देह होता है। इस सन्देह के लिए यथेष्ट कारण भी विद्यमान है; किन्तु इतने समय के बाद इन गुप्त पापों का रहस्य खुल सकना एक प्रकार से असम्भव ही है। इस नवयुवक पेशवा की मृत्यु के सम्बन्ध में ग्राण्ट डफ़ लिखता है—

"दूर-दूर तक फैले हुए मराठा साम्राज्य रूपी उस वृक्ष को, जिसे कुछ आघात पहले ही पहुँच चुका था, जो जड़ नीचे से रस पहुँचा रही थी, वह तने से कट कर अलग हो गई! उस साम्राज्य को पानीपत के तीसरे युद्ध से भी इतनी हानि नहीं पहुँची थी, जितनी इस सुयोग्य शासक की अकाल-मृत्यु से पहुँची। माधोराव युद्ध-कला में तो अत्यन्त प्रवीण था ही, शासक की दृष्टि से भी उसका चरित्र उसके पूर्वाधिकारियों की अपेक्षा कहीं अधिक प्रशंसा और आदर के योग्य था।"

माधोराव के बाद, उसका भाई नारायणराव पेशवा

की मसनद पर बैठा। मरते समय माधोराव ने राघोबा से प्रार्थना की कि आप नारायणराव की सहायता और रक्षा कीजिएगा, किन्तु स्वार्थी राघोबा और षड्यन्त्रकारी मॉस्टिन दोनों के लिए अपनी-अपनी आकांक्षाओं को सिद्ध करने का इससे अच्छा अवसर मिलना कठिन था। माधोराव की मृत्यु के केवल ८ महीने बाद, ३० अगस्त, सन् १७७३ ई० को राघोबा ने अपने भतीजे पेशवा नारायणराव को मरवा कर अपने आपको पेशवा घोषित कर दिया! इतिहास से भली-भाँति प्रमाणित है कि इस हत्याकाण्ड में मॉस्टिन का हाथ था! उसने बम्बई काउन्सिल को इस घटना की सूचना देते हुए हार्दिक प्रसन्नता प्रकट की!

इस समाचार को सुन कर बम्बई-काउन्सिल को भी बड़ी प्रसन्नता हुई। पेशवा नारायणराव की हत्या के केवल १८ दिनों के बाद, १७ सितम्बर सन् १७७३ ई० को बम्बई-काउन्सिल ने पत्र लिख कर मॉस्टिन को यह हिदायत दी—

". . . to improve diligently every circumstance favourable to the accomplisment of that event (the acquisition of Salsette and Bassein), and on no account whatever to leave the Marhatta Capital."*
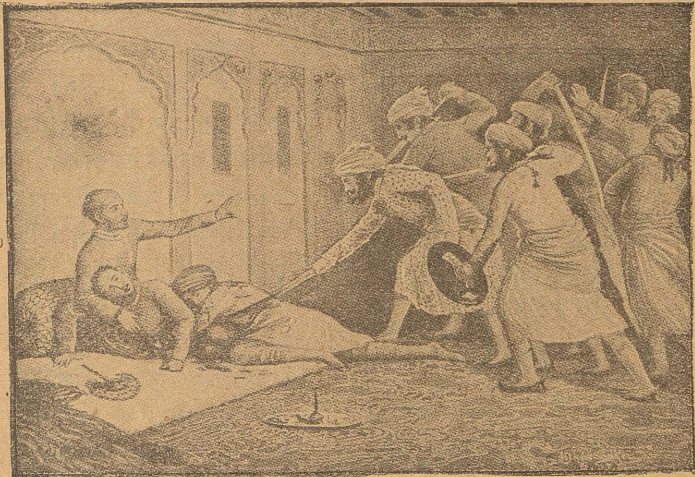
पेशवा नारायण राव की हत्या का दृश्य

अर्थात्—"किसी भी ऐसी परिस्थिति को, जो साष्टी और बसई प्राप्त करने में हमारी सहायिका हो सकती है, उत्पन्न करने में इस समय तुम परिश्रम से काम लेना और चाहे कुछ भी क्यों न हो जाय, मराठों की राजधानी छोड़ कर कहीं न जाना!"

इस अवसर पर अङ्गरेज़ी सरकार के आचरण की आलोचना करते हुए सर हेनरी लॉरेन्स 'कलकत्ता रिव्यु' में एक स्थान पर लिखता है—

"Raghoba afterwards murdered Narayan Rao . . . . and was supported by the British Government. A very evil chapter in Anglo-Indian History."†

अर्थात्—"बाद में राघोबा ने नारायणराव को मार डाला × × × और अङ्गरेज़ी सरकार ने उसका पक्ष ग्रहण किया। भारत में अङ्गरेज़ी राज के इतिहास का यह एक अत्यन्त कलुषित अध्याय है।"

पुरन्दर की सन्धि

पेशवा नारायणराव की मृत्यु के बाद मॉस्टिन ने सबसे पहले अपने क्रीत-दास राघोबा को पेशवा बनने में सहायता दी। उसके बाद उसने दक्षिण के तीन बड़े-बड़े राज्यों को आपस में लड़ाए रखने की ओर ध्यान दिया। उस समय दक्षिण भारत में मराठे, निज़ाम और हैदरअली—ये तीन बड़ी-बड़ी शक्तियाँ थीं, जिन्हें अङ्गरेज़ आपस में ही लड़ा कर चूर-चूर कर देना चाहते थे। मॉस्टिन ने राघोबा को बहका कर निज़ाम और हैदर-अली दोनों से उसका युद्ध छिड़वा दिया। राघोबा सेना लेकर दक्षिण विजय करने के लिए पूना से निकल पड़ा।

राघोबा की अनुपस्थिति में मराठा-साम्राज्य के सच्चे हितचिन्तक नाना फड़नवीस और उसके सहायकों को पूना में अपनी शक्ति को बढ़ाने और सङ्गठित करने का अच्छा अवसर मिला। इसी बीच मृत पेशवा नारायण-राव की गर्भवती विधवा के एक पुत्र उत्पन्न हुआ, जिसे पूना-दरबार ने सर्वसम्मति से पेशवा घोषित कर दिया। किन्तु अङ्गरेज़ों का हित इस बात में था कि राघोबा पेशवा की मसनद पर बना रहे। पूना में नाना फड़नवीस की शक्ति बढ़ी हुई देख कर राघोबा को दक्षिण से पूना लौटने का साहस न हुआ। वह दक्षिणी युद्धों में हार कर प्राण बचाने के लिए गुजरात की ओर भागा। अङ्गरेज़ों ने राघोबा को इस विपन्नावस्था से लाभ उठा कर उसे सूरत बुलाया और वहाँ ६ मार्च, सन् १७७५ ई० को उससे एक सन्धि की, जिसमें राघोबा ने बम्बई-काउन्सिल को साष्टी, बसई और सूरत प्रदेश का एक अंश सदा के लिए दे दिया। इसके बदले में अङ्गरेज़ों ने प्रतिज्ञा की कि वे सेना से राघोबा की सहायता करेंगे और उसे पुनः पेशवा की मसनद पर बिठावेंगे। इस प्रतिज्ञा के अनुसार अङ्गरेज़ों ने राघोबा को साथ लेकर पूना पर आक्रमण किया। युद्ध में नाना फड़नवीस की भेजी हुई सेनाओं ने अङ्गरेज़ों को गहरी पराजय दी। अङ्गरेज़ लोग बहुत हानि उठा कर गुजरात की ओर भाग गए।

इस समय अङ्गरेज़ों को गुजरात में अपने षड्यन्त्र फैलाने का अच्छा अवसर मिला। उन्होंने गायकवाड़ वंश के झगड़ों से लाभ उठा कर सयाजी गायकवाड़ से सन्धि कर ली। सयाजी ने भड़ोच, चिचली, वरियाव और कोरल के परगने कम्पनी को दे दिए। मॉस्टिन अब पूना छोड़ कर गायकवाड़ के दरबार में रहने लगा। इस सफलता से उत्साहित होकर अङ्गरेज़ों ने सूरत की सन्धि के अनुसार साष्टी और बसई को भी अपने अधिकार में कर लिया। पेशवा सरकार ने सूरत की सन्धि को स्वीकार नहीं किया था। ऐसी अवस्था में साष्टी और बसई पर अधिकार करके तथा विद्रोही राघोबा को सहायता देकर अङ्गरेज़ों ने पेशवा-सरकार को अपना शत्रु बना लिया। अब बम्बई-काउन्सिल को पेशवा से बातचीत करने तथा उसके दरबार में दूत भेजने का कोई मार्ग न रह गया।

यह परिस्थिति अङ्गरेज़ों के लिए वास्तव में बड़ी ही निराशाजनक थी। उन्हें अब न तो पेशवा के दरबार में घुस कर षड्यन्त्र रचने का अवसर था और न राघोबा के ही पुनः पेशवा बन सकने की कोई आशा थी, किन्तु अङ्गरेज़ों की धीरता और चालाकी दोनों ही प्रशंसनीय हैं। इस निराशामय परिस्थिति में भी कूटनीतिज्ञ हेस्टिंग्स ने पूना-दरबार को धोखा देने की एक निराली चाल सोच निकाली। उसने सीधे कलकत्ता से एक दूत पूना-दरबार में भेज कर पेशवा के मन्त्रियों को यह कहलवाया कि बम्बई काउन्सिल ने राघोबा से जो सन्धि की है और उसे जो सहायता दी है, उसके लिए हमें दुःख है। ये दोनों काम हमारी इच्छा के विरुद्ध और बिना हमारी आज्ञा लिए हुए किए गए हैं। हम सूरत की सन्धि को नाजायज़ समझते हैं। अङ्गरेज़-सरकार न तो विद्रोही राघोबा की सहायता करना चाहती है और न पेशवा-सरकार से युद्ध करना। हेस्टिंग्स की आज्ञा पाकर बम्बई काउन्सिल ने पेशवा के विरुद्ध भेजी हुई अपनी सेना को भी वापस बुला लिया।

यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि हेस्टिंग्स के दूत के पास पेशवा के मन्त्रियों और राघोबा दोनों के लिए दो प्रकार के पत्र विद्यमान थे। राघोबा के पत्र में हेस्टिंग्स ने सूरत की सन्धि और तत्सम्बन्धी सभी कार्रवाइयों का पूर्ण समर्थन किया था। दूत को यह आदेश था कि यदि उसके पूना पहुँचने के पहले संयोगवश राघोबा की विजय हो चुकी हो, तो वह राघोबा के नाम के पत्र का उपयोग करे। हेस्टिंग्स का दूत पेशवा के मन्त्रियों से पुरन्दर में मिला। उसने पेशवा-सरकार के प्रति हेस्टिंग्स की ओर से पूर्ण मित्रता की शपथ खाने के बाद पेशवा के मन्त्रियों से प्रार्थना की कि साष्टी और बसई के प्रदेश अङ्गरेज़ों के ही पास रहने दिए जाएँ। पेशवा के मन्त्रियों ने, जिनमें सखाराम बापू और नाना फड़नवीस के समान नीतिज्ञ वर्तमान थे, इस प्रार्थना का जो उत्तर दिया, वह अङ्गरेज़ी दूत के ही शब्दों में सुनने योग्य है। अङ्गरेज़ी दूत ने २री फ़रवरी, सन् १७७६ ई० को वारन हेस्टिंग्स के नाम एक पत्र में लिखा है—

"They ask me a thousand times, why we make such professions of honour? How disapprove the war entered into by the Bombay Government, when we are so desirous of availing ourselves of the advantages of it?"*

अर्थात्—"वे मुझसे हज़ार बार पूछते हैं कि आप मित्रता की इतनी शपथ क्यों खाते हैं? आप लोग बम्बई-सरकार के युद्धों को तो नाजायज़ बताते हैं; किन्तु उनके द्वारा जो प्रदेश आपके क़ब्ज़े में आगए हैं, उन्हें आप अपने पास रखने के इतने इच्छुक हैं, यह सब मामला क्या है?"

अन्त में पूना-दरबार ने हेस्टिंग्स की प्रार्थना को स्वीकार न किया। वारन हेस्टिंग्स ने जब देख लिया कि पेशवा को चालबाज़ी से फँसाना मुश्किल है, तो उसने अपने दूत के पूना में रहते हुए भी गुप्त रूप से एक बहुत बड़े युद्ध की तैयारी आरम्भ कर दी। कलकत्ता और मद्रास दोनों स्थानों पर पूना पर आक्रमण करने के लिए सेनाएँ इकट्ठी की जाने लगीं। हेस्टिंग्स इस बात का भी प्रयत्न करने लगा कि भोसला, सिन्धिया और होलकर को अपनी ओर मिला ले। उसने हैदरअली और निज़ाम से भी गुप्त पत्र-व्यवहार आरम्भ किया। पूना-दरबार को इन सब षड्यन्त्रों का पता मिलता रहा। किन्तु इतिहास से पता नहीं चलता कि किन कारणों से विवश होकर या डर कर पूना-दरबार को इस समय अङ्गरेज़ों से सन्धि कर लेने की आवश्यकता प्रतीत हुई। वारन हेस्टिंग्स का दूत जिस समय निराश होकर पुरन्दर से लौटा जा रहा था, उस समय पेशवा के मन्त्रियों ने उसे रोक लिया। १ली जून सन् १७७६ ई० को पेशवा-सरकार और ईस्ट इण्डिया कम्पनी के बीच पुरन्दर की सन्धि हुई, जिसमें अङ्गरेज़ों ने सूरत की सन्धि को नाजायज़ माना और प्रतिज्ञा की कि हम राघोबा को फिर कभी सहायता न देंगे। बसई का क़िला पूना-दरबार को वापस कर देंगे और इस दरबार के साथ सदा मित्रता का बर्ताव रक्खेंगे। पेशवा ने इस मित्रता को दृढ़ करने के अभिप्राय से साष्टी का द्वीप कम्पनी को उपहार में दे दिया। इसके अतिरिक्त पेशवा ने भड़ोच नगर की मालगुज़ारी और उसके आस-पास तीन लाख

(शेष मैटर ३०वें पृष्ठ के पहले कॉलम में देखिए)

* Mill's *History of British India, vol. iii.*

† *Calcutta Review, vol. ii, p. 430.*

* *From a letter of Colonel Upton to Warren Hastings, dated the 2nd February, 1776.*

राष्ट्रीय संग्राम में बम्बई का छलकता हुआ ओज

१ ४

२

५

३
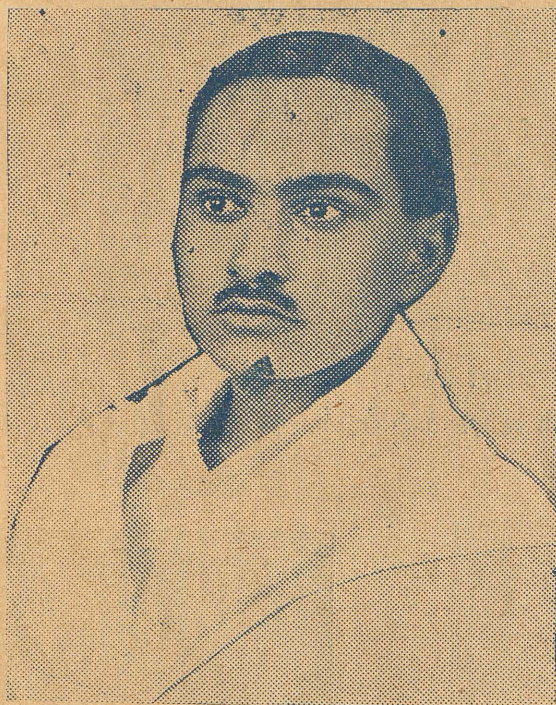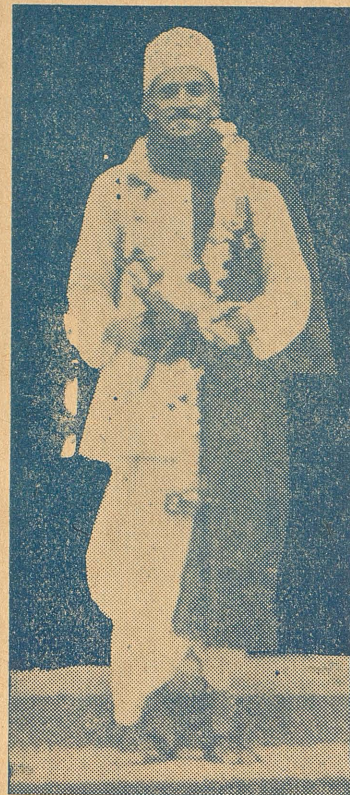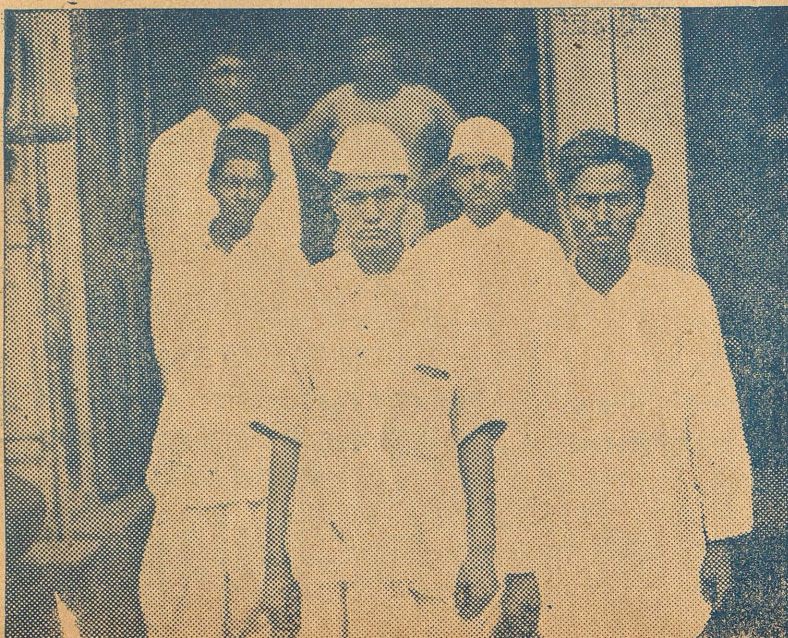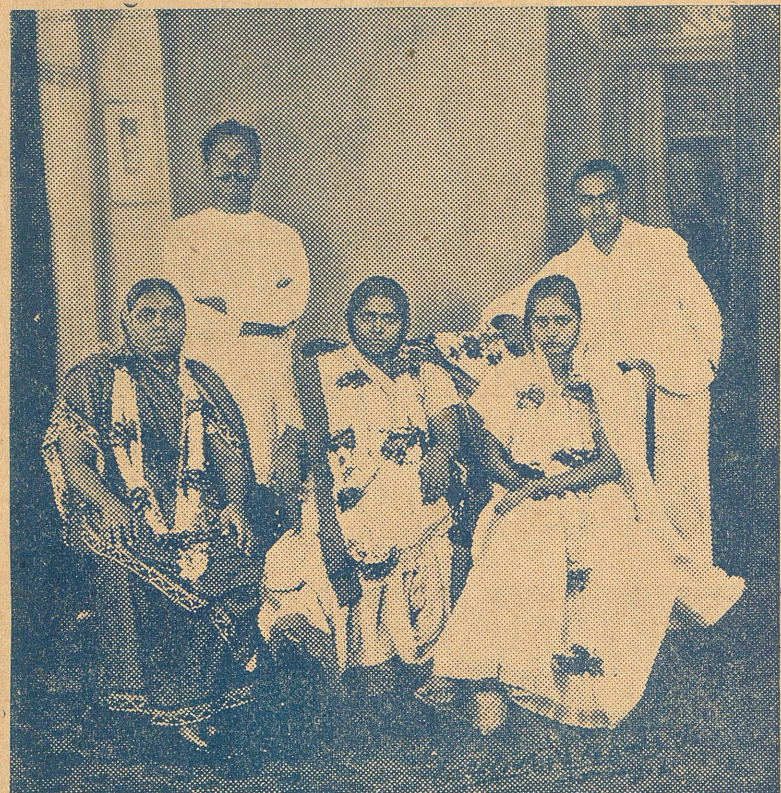
१—बम्बई प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के सञ्चालक 'वार-कौन्सिल' के वीर सत्याग्रही नेताओं का ग्रूप, जिनके नेतृत्व में हाल ही में दो लाख व्यक्तियों का जुलूस निकला था। अगली पंक्ति में खड़े हुए (बाईं ओर से) श्री० गिल्दर, श्री० मुन्शी (प्रधान) श्री० चन्द्रचूड़ और श्री० नायक।

२—बम्बई के १८वें 'वार-कौन्सिल' के मन्त्री—श्री० हिम्मतलाल शाह।

३—बम्बई के वे स्वयंसेवक, जिन्होंने मेसर्स हाजी आदम जी और हाजी करीम के यहाँ तब तक अनशन-सत्याग्रह किया, जब तक उन्होंने विलायती कपड़े का व्यापार बन्द नहीं कर दिया।

४—बम्बई तिलक विद्यालय के आचार्य—श्री० आपटे, जिन्हें छः मास का कारावास-दण्ड दिया गया है।

५—१८वें 'वार-कौन्सिल' की कार्यकारिणी समिति—(बीच में बैठी हुईं) श्रीमती गङ्गाबेन पटेल (प्रधान) (उनके बाईं ओर) श्रीमती शान्ताबेन पटेल (उप-प्रधान) (दाहिनी ओर) कुमारी सुमन्त त्रिवेदी (सम्पादिका "कॉङ्ग्रेस बुलेटिन") (पीछे खड़े हुए) श्री० हिम्मतलाल शाह और श्री० मानसिंह जगताप (मन्त्रीगण)

कुछ प्रमुख व्यक्तियों की चित्रावली
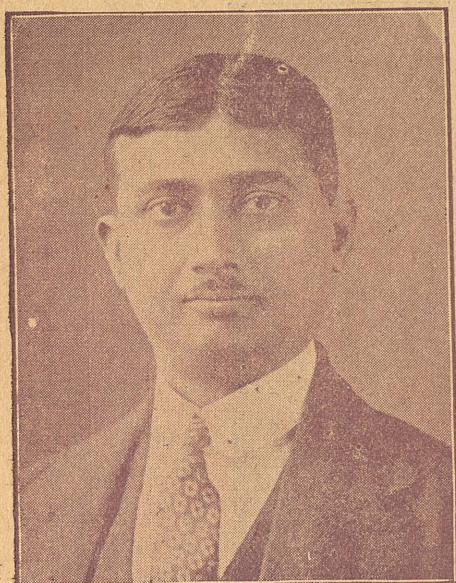
श्री० पी० मुकर्जी

आप पञ्जाब चेम्बर ऑफ़ कॉमर्स की ओर से कौन्सिल के सदस्य नियुक्त हुए हैं।

कुमारी हेस्टर स्मिथ, बी० ए०

आप हाल ही में ट्रावनकोर में होने वाली अखिल भारत-वर्षीय महिला कॉन्फ्रेन्स की प्रधाना नियुक्त हुई थीं।
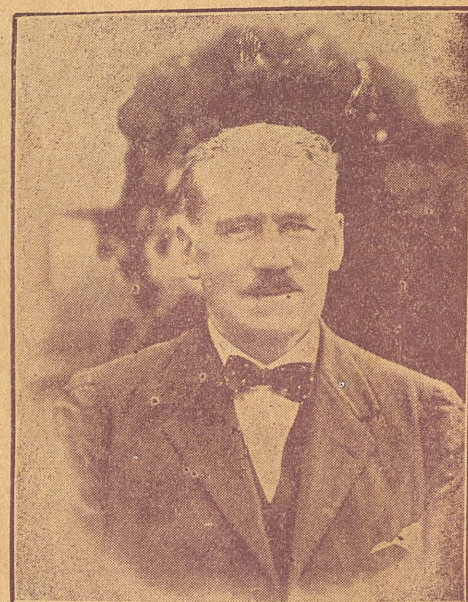
श्री० आर० बोकेट, जे० पी०

आप मैसोर गवर्नमेण्ट के खानों के चीफ़ इन्स्पेक्टर थे, जो हाल ही में छुट्टी लेकर विलायत गए हैं।

मङ्गलोर के महिला क्लब की सदस्याओं का ग्रुप

जो मद्रास के गवर्नर की धर्मपत्नी के निरीक्षण के समय लिया गया था। बीच में हर एक्सेलेन्सी लेडी बीट्रिस स्टानली बैठी हैं।
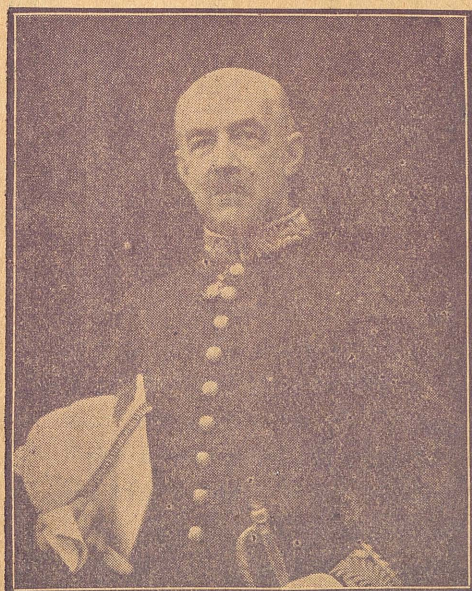
श्री० जे० सी० स्मिथ, आई० सी० एस०

आप संयुक्त प्रान्तीय गवर्नमेण्ट की कार्यकारिणी सभा के नए सदस्य नियुक्त हुए हैं।
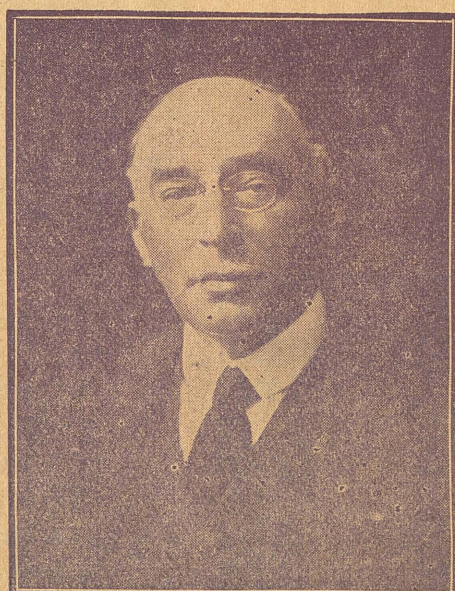
हिज़ एक्सेलेन्सी सर हर्बर्ट स्टानली

आप सीलोन (लङ्का) के गवर्नर थे, जो हाल ही में दक्षिण अफ़्रिका के हाई कमिश्नर नियुक्त किए गए हैं।

कमाण्डर आर० एम० रेनॉल्ड्स

आप रॉयल इम्पायर सोसाइटी के कमिश्नर हैं, जो हाल ही में भारत की वर्तमान दशा का निरीक्षण करने यहाँ पधारे हैं।

कुछ प्रमुख व्यक्तियों की चित्रावली

ख़ानबहादुर ख़्वाजा मोहम्मद नूर, सी० आई० ई०
आप श्री० पी० आर० दास की जगह पटना हाईकोर्ट के जज नियुक्त हुए हैं।

श्री० शफ़ी अहमद
आप हैदराबाद के उस्मानिया कॉलेज के प्रतिभाशाली छात्र हैं, जो हाल ही में डोवर से राम्स गेट तक (२२ मील) सफलतापूर्वक तैरे थे।

नवाब अग़ियार जङ्गबहादुर
आप निज़ाम-गवर्नमेण्ट के अर्थ-विभाग के संयुक्त मन्त्री थे। आपने अभी हाल ही में पेन्शन ले ली है।

श्री० एल० दामोदरन
आप विरुदूनगर (मद्रास) के क्षत्रिय वैद्यशाला हाई-स्कूल के एक प्रतिभाशाली छात्र हैं, जिन्हें हाल ही में खेलों में सर्व-प्रथम आने के लिए 'ग्रिग मेमोरियल' नामक स्वर्ण-पदक प्रदान किया गया है।
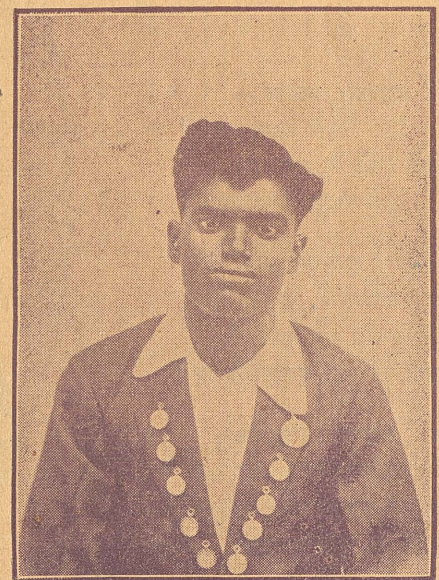
श्री० आर० पी० धरगालकर
आप समस्त भारत में सब से छोटे उड़ाकू हैं, जिन्हें ब्रिटिश एयर मिनिस्ट्री की ओर से केवल १८ वर्ष की अवस्था में 'बी' क्लास के उड़ने वाले का लाइसेन्स प्रदान किया गया है।

श्री० जी० रङ्गय्या, बी० ए०, बी० ई०
जो हाल ही में मैसोर गवर्नमेण्ट के मन्त्री और चीफ़ इञ्जीनियर नियुक्त हुए हैं।

'चाँद' तथा 'भविष्य'-परिवार के सुपरिचित—कविवर आनन्दीप्रसाद जी श्रीवास्तव

आगरा विश्वविद्यालय के वाइस चेन्सलर, कौन्सिल ऑफ़ स्टेट के सदस्य और इलाहाबाद हाईकोर्ट के सुप्रसिद्ध एडवोकेट—मुन्शी नारायण प्रसाद जी अस्थाना

महाकवि दाग़ (देहलवी) का प्रतिभाशाली वंशज

महाकवि दाग़ के जानशीन—नाख़ुदाय-
सखुन हज़रत "नूह" नारवी

हुस्न रोज़-अफ़ज़ूँ ने कितना फ़र्क़ पैदा कर दिया !
देखिए यह आप हैं, यह आपकी तस्वीर है !!
सब ने आँखों में, निगाहों में, दिलों में दी जगह;
सैकड़ों घर बन गए, एक आपकी तस्वीर के !!
दैर को हम घटाएँ क्यों ? काबे को हम बढ़ाएँ क्यों ?
क्या वह .ख़ुदा का घर हुआ—क्या यह .ख़ुदा का घर नहीं ?

—"नूह" नारवी

जो रुक न सकें, बहते ही रहें, वह इश्क़ो-वफ़ा के आँसू हैं !
जो बुझ न सके, रौशन ही रहे, वह उल्फ़त की चिनगारी है !!
वह तीरे-नज़र बरसाते हैं, मैं थाम के दिल रह जाता हूँ !
कुछ ज़ोर नहीं चलता मेरा, यह उलफ़त की नाचारी है !!
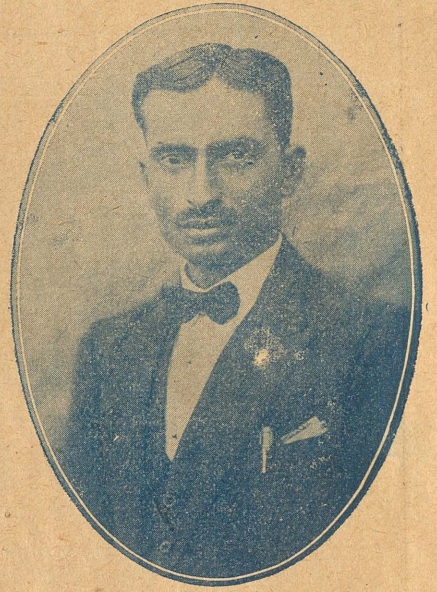
—"आज़म" करेवी

हज़रत 'नूह' के शागिर्द डॉक्टर अनसार-
अहमद "आज़म" करेवी

बुतकदे की नींव ज़ाहिद !
किस क़दर मज़बूत थी,
आज तक काबा भी है,
क़ायम उसी बुनियाद पर !

❀

चूमते हैं बार-बार, आकर—
जिसे अहले-हरम !
क्या कोई काबे में, बुतख़ाने
का पत्थर रह गया ?

ऐ अहले-हरम तुम क्या जानो !
हम जानते हैं, हम से पूछो,
काबा जिसे अब सब कहते हैं,
पहले तो यही बुतख़ाना था !

मतलब है इबादत से मुझको,
मतलब है परिस्तिश से मुझको !
जिस दर पर झुकाया सर मैंने—
काबा था, वही बुतख़ाना था।

हज़रत 'नूह' के शागिर्द तथा 'केसर की क्यारी'
के सम्पादक—मुन्शी सुखदेवप्रसाद जी
सिन्हा "बिस्मिल" इलाहाबादी

यहाँ के एक-एक पत्थर से,
होता है गुमाँ मुझको !
पड़ी है नींव भी काबे की,
तो दस्ते-बिरहमन से !!

❀

मालूम रहे तुमको
ऐ हज़रते-ज़ाहिद !
मन्दिर में नहीं वह;
तो हरम में भी नहीं है !!

बुतख़ाने की तलाश में,
वह बेख़ुदी रही !
मैं दो क़दम हरम से भी
आगे निकल गया !!

ज़ाहरी असबाब से इसको
ताल्लुक़ कुछ नहीं !
हक़-परस्ती के लिए "बिस्मिल"
भी बुतख़ाने में है !!

दिल मेरा देख सके हुस्न के जलवे क्योंकर ?
सौ तमाशे हैं, मगर एक तमाशाई है !
घर में आए हुए सय्याद के मुद्दत गुज़री !
गुल तो गुल ही हैं, नशेमन भी हमें याद नहीं !!
एक दुनियाए-जुनूँ साथ लिए फिरता है,
कोई देखे तो यह आलम तेरे दीवाने का !!

—"शातिर" इलाहाबादी

बुत-परस्ती मेरे हक़ में, हक़-परस्ती हो गई !
दे दिया तेरा पता, मुझको तेरी तस्वीर ने !
सा अदा से जो चुभा था, आपका तीरे-नज़र !
रहते-रहते अब वही दिल में, रगे-दिल हो गया !!

—"ज़या" देवानन्दपुरी

कविवर 'बिस्मिल' के शागिर्द मुन्शी बद्रीनाथ
"शातिर" इलाहाबादी
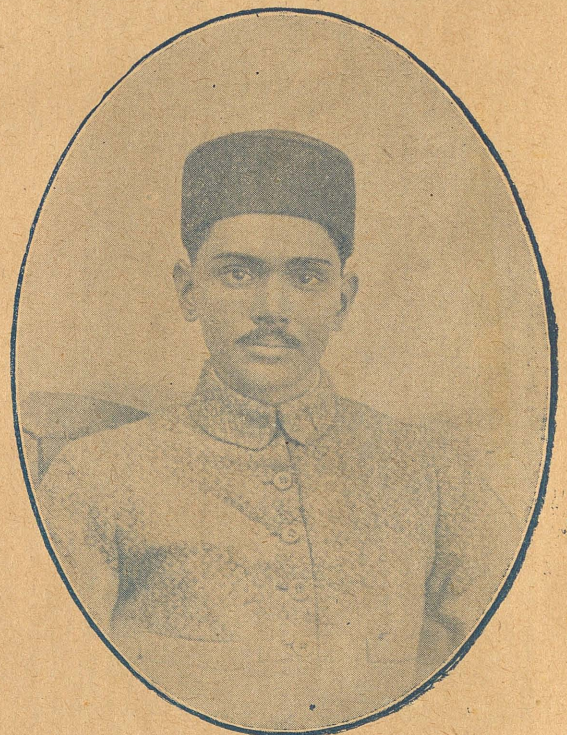
कविवर 'बिस्मिल' के शागिर्द श्री० हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव,
बी० ए०, एल्-एल्० बी० "ज़या" देवानन्दपुरी

केसर की क्यारी

[विगत सप्ताह पटना में एक अखिल भारतवर्षीय मशायरा हुआ था, जिसमें इस स्तम्भ के सम्पादक कविवर 'बिस्मिल' भी पधारे थे। आपकी सरस एवं सुललित कविताओं और उसे पढ़ने की शैली की बड़ी प्रशंसा हुई। आपने 'भविष्य' के पाठकों के मनोरञ्जनार्थ जो संग्रह हमारे पास प्रकाशनार्थ भेजा है, वह वास्तव में बड़ा महत्वपूर्ण है और हमें आशा है 'भविष्य' के पाठक इसे बहुत पसन्द करेंगे।

—स० 'भविष्य']

हर घड़ी यादे-बुताँ रहती है दिल में 'बिस्मिल'—कोई आसाँ नहीं, हिन्दू का मुसल्माँ होना !

मेरी शोरीदा[1] मिज़ाजी ने, असर दिखलाया,
कह रहा है, तेरी ज़ुल्फ़ों का परेशाँ होना !

—"रज़ी" अज़ीमाबादी

लाख समझाए कोइ, लाख सँभाले कोई,
मेरे क़ाबू में नहीं, मेरा परेशाँ होना !

—"हाशिम" जौनपुरी

सर पे उशशाक़[2] के, एक रोज़ बला आएगी,
कह रहा है, तेरी ज़ुल्फ़ों का परेशाँ होना !

—"शम्श" अज़ीमाबादी

ज़ुल्फ़े-काफ़िर का, बिखर कर लधर आना रुख़ पर,[3]
और सिपारए[4] दिल का वह परेशाँ होना !

—"समर" आरवी

अहले हिम्मत का, मददगार है ख़ुद रब्बेकरीम[5],
किसी मुशकिल में, न ऐ यार परेशाँ होना !

—"शाग़िल" अज़ीमाबादी

शौक़ से आप दिखाएँ, मुझे अपनी ज़ुल्फ़ें,
ख़ुद परेशाँ जो हो, क्या उसका परेशाँ होना !

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

नहीं बे वजह है, इन ज़ख़्मों का ख़न्दाँ[6] होना,
दिल को है शौक़, बसद रङ्गे-गुलिस्ताँ[7] होना !

—"असग़र" अज़ीमाबादी

यासो[8] हसरत की तमन्ना, कि बयाबाँ[9] होना,
गुले[10]-उम्मीद का अरमाँ, कि गुलिस्ताँ होना !

—"नसीर" अज़ीमाबादी

लोग कहते हैं "समर" बाग़े-सख़ुन का मुझको,
फूल फल कर, मुझे लाज़िम है गुलिस्ताँ होना !

—"समर" आरवी

दाग़ पर दाग़ दिए जाती है, तक़दीर "नसीर",
दिल की क़िस्मत में है, दाग़ों का गुलिस्ताँ होना !

—"नसीर" अज़ीमाबादी

मोसिमे-गुल का तसौवर[11] भी, नशेमन[12] की भी फ़िक्र,
वह क़फ़स[13] ही में मेरा महवे गुलिस्ताँ होना !

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

दफ़्तरे पीरेमुग़ाँ[14] से, यह मिली है तालीम,
अपनी इसियाँ[15] पे मुझे आप पशेमाँ[16] होना !

—"असग़र" अज़ीमाबादी

मैं तो उलफ़त में, वफ़ा करके पशेमान हुआ,
देखना तुम, न जफ़ा[17] करके पशेमाँ होना !

—"अता" अज़ीमाबादी

अपने सर ले लिया, महशर[18] में ख़ता को उनकी,
मुझसे देखा न गया, उनका पशेमाँ होना !

—"वाएज़" अज़ीमाबादी

१—दीवानगी, २—चाहने वाले, ३—चेहरा, ४—क़ुरान का तीसवाँ हिस्सा, ५—ईश्वर, ६—हँसना, ७—बाग़, ८—निराशा, ९—जङ्गल, १०—फूल, ११—ध्यान, १२—घोंसला, १३—पिंजड़ा, १४—गुरु, १५—गुनाह, १६—लज्जित, १७—ज़ुल्म, १८—प्रलय।

क्या मेरे शिकवे पे, महशर में वह शरमाएँगे,
जिनको आता नहीं, दुनिया में पशेमाँ होना !
कर गया उज़्रे-सितम, मुझसे खुले लफ़्ज़ों में,
दिल ही दिल में, किसी ज़ालिम का पशेमाँ होना !

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

ख़ूब मालूम है, दामन को इलाही[19] रक्खे,
जेब का जेब, गरीबाँ का ग़रीबाँ होना !
कोइ ऐसा है, करे चाक जो दामन दिल का,
किस से सीखे कोइ दामन से गरीबाँ होना !

—"समर" आरवी

जोशे-वहशत में भी, लाज़िम है ख़याले महबूब[20],
सूरते-गुल न कहीं, चाक गरीबाँ होना !

—"हफ़ीज़" अज़ीमाबादी

ख़ुश्क[21] लब, ख़ूने-जिगर, मायएदिल[22] चश्म पुर आब[23]
नालाकश[24], ख़ाक सरे चाक ग़रीबाँ होना !

—"अन्दलीब" कानपुरी

दरे मैख़ाना[25] पे, नासेह[26] का उलझना मुझसे,
और वह मुझसे, मेरा दस्तो गरीबाँ होना !

—"बेदिल" अज़ीमाबादी

बख़ियागर छेड़ न, हम चाक गरीबानों को,
रङ्ग लाएगा, गरीबाँ का गरीबाँ होना !

—"मुबारक" अज़ीमाबादी

हाय वहशत में, मेरा बेसरो सामाँ होना,
चाक दिल, चाक जिगर, चाक गरीबाँ होना !
कर चुका चाक, तो क्या बख़ियागरी से हासिल,
अब गरीबान को मुश्किल है गरीबाँ होना !

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

आलमे-इश्क़ में, दानाई[27] है नादाँ होना,
होशियारी है, ज़ेख़ुदरफ़्त[28] औ हैराँ होना !

—"वली" अज़ीमाबादी

उनकी क़िस्मत, कि बसद रङ्ग गुलिस्ताँ होना,
मेरी तक़दीर, कि आशुफ़्तओ[29] हैराँ होना !

—"समर" आरवी

सर ख़ुशे[30], वलवले, नाज़िशे यकताईए हुस्न,
आइना देखना, फिर आप ही हैराँ होना !

—"अज़ीज़" अज़ीमाबादी

आइना देखने को, शौक़ से देखो लेकिन,
अपनी सूरत न कहीं, देख के हैराँ होना !

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

ज़ख़्मे-दिल हँसते हैं, क़िस्मत पे मेरी सूरते गुल,
शक्ल शबनम[31] है, मुक़द्दर[32] में जो गिरयाँ[33] होना !

—"हाशिम" जौनपुरी

१९—ईश्वर, २०—प्रेमिका, २१—सूखे, २२—पूँजी, २३—आँखों में आँसू, २४—आह भरना, २५—शराबख़ाना, २६—नसीहत करने वाला, २७—अक़्लमन्दी, २८—पागल, २९—परेशान, ३०—मस्त, ३१—ओस, ३२—क़िस्मत, ३३—रोना।

आह सौदा ज़दगी[34], इश्क़ के दीवानों की,
मुस्कुराना, कभी हँसना, कभी गिरयाँ होना !

—"अन्दलीब" कानपुरी

आजकल आपके, दीवानों का यह आलम है,
बैठे-बैठे कभी ख़न्दा, कभी गिरयाँ होना !

—"नसीर" अज़ीमाबादी

लोग समझें न कहीं इसका यही क़ातिल है,
तुम मेरी लाश पे, कुछ सोच के गिरयाँ होना !

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

करके बरबाद मुझे, क्या है पशेमाँ होना,
हो गया था जो मुक़द्दर में, मेरी जाँ होना !

—"समर" आरवी

दिल में, तीरे-निगहे-नाज़ का मेहमाँ होना,
कोई मुश्किल नहीं, अब इसको रगे-जाँ होना !

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

मेरी पीरी की है, ख़मयाज़ाए अय्यामे[35] शबाब,
यूँ कि असरारे[36] जवानी, का नुमायाँ[37] होना !

—"बेदिल" अज़ीमाबादी

मैं इसे शर्म कहूँ, या इसे शोख़ी समझूँ,
कभी छुपना, कभी परदे से नुमायाँ होना !

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

एक तू, और तेरी मञ्ज़िल का, पता नामुमकिन,
एक मैं, और बयाबाँ पे बयाबाँ होना !

—"हाशिम" जौनपुरी

दश्तो[38] गुलज़ार से, कह दे कोइ दिल से सीखे,
बाग़ का बाग़, बयाबाँ का बयाबाँ होना !
देखना, ख़ुद ही सिखा देगी तरक़्क़ी यक दिन,
क़तरओ ज़र्रा का, दरियाओ बयाबाँ होना !

—"समर" आरवी

आबले पाँव के मुज़्तर[39] हैं, बहुत ज़िन्दाँ[40] में
चाहिए अब कशिशे ख़ारे बयाबाँ होना !

—"रज़ी" अज़ीमाबादी

मुझपे डोरे, न बहारे गुलो-गुलशन डाले,
मैंने देखा है, गुलिस्ताँ का बयाबाँ होना !

—"मुबारक" अज़ीमाबादी

बचता तूफ़ाने हवादिस[41] से, मेरा घर क्योंकर,
इसकी तक़दीर में, लिक्खा था बयाबाँ होना !

—"वायज़" अज़ीमाबादी

मैं भी हूँ वाक़िफ़े असरारे रमूज़े[42] हस्ती,
मेरे ज़र्रों को भी आता है, बयाबाँ होना !
कसरते यास[43] से है, वसअते[44] आलम पैदा,
गोशए दिल को मुबारक हो, बयाबाँ होना !

—"सबा" अज़ीमाबादी

३४—दीवानगी, ३५—ज़माना, ३६—भेद, ३७—ज़ाहिर, ३८—जङ्गल, ३९—बेचैन, ४०—क़ैदख़ाना, ४१—घटनाएँ, ४२—भेद, ४३—निराशा, ४४—फैलाव।

भविष्य

अरबी जगत की छीछालेदर

["इतिहास का एक विनम्र विद्यार्थी"]

वर्तमान काल के राजनैतिक शब्द-कोष में 'सभ्य' का अर्थ 'शक्तिशाली' है। जो राष्ट्र बलवान है, जो अपने सैनिक बल द्वारा दूसरे राष्ट्रों को दबा सकता है, वही सभ्य है और उसी की संस्कृति सब से ऊँचे दर्जे की है। बलवान राष्ट्र ही वर्तमान युग का शिक्षक बन सकता है और वही धर्म तथा न्याय की रक्षा करने का ढोंग कर सकता है। भारत की संस्कृति पुरानी है, निष्पक्ष लोग तो कहेंगे कि बहुत ऊँचे दर्जे की है, परन्तु फिर भी पाश्चात्य राजनीतिज्ञों की दृष्टि से वह असभ्य है। चीन भी असभ्य है, परन्तु उसी संस्कृति के अनुयायी जापान को कोई भी असभ्य नहीं कह सकता। प्राचीन सभ्यता के गुरु तथा धर्मों के शिक्षक अरब, मिश्र, भारत, पैलेस्टाइन इत्यादि देश जङ्गली हैं, क्योंकि वे कमज़ोर हैं और आज पाश्चात्य राष्ट्रों का मुक़ाबला करने में असमर्थ हैं। इसी कमज़ोरी के कारण उन्हें इन बलशाली राष्ट्रों के, जो कि सभ्य कहलाते हैं, संरक्षण में रहना पड़ता है और उनके सार्वभौमत्व को तथा गुरुत्व को स्वीकार करना पड़ता है। आज इतने वर्षों की शिक्षा तथा संरक्षण के बाद भारत तथा अन्य पराधीन देशों ने जो फ़ायदा उठाया है, वह सबको मालूम है। इन सभ्यता के आचार्यों ने और न्याय के रक्षकों ने जो-जो कार्य किए हैं, उनका यहाँ वर्णन करना व्यर्थ है। इन्होंने अपनी शिक्षा तथा संरक्षण द्वारा संसार के राष्ट्रों के टुकड़े-टुकड़े कर दिए हैं। एक देश-निवासी जातियों में आपस में कलह पैदा कर दिया है और इस तरह उनकी शक्ति को तोड़ कर उनके धन को चूसा है। भारत की कहानी तो अब काफ़ी पुरानी हो गई है और आज प्रत्येक भारतवासी को अङ्गरेज़ों की करामातों का पूर्ण परिचय हो गया है। पर इस संरक्षण रूपी आपत्ति का पूर्ण रूप जानते हुए भी, आज संसार के कई राष्ट्रों को पाश्चात्य राष्ट्रों का यह गुरुत्व स्वीकार करना पड़ रहा है। इसका एकमात्र कारण यह है, कि वे आज कमज़ोर हैं !!

गत महायुद्ध में टर्की ने जर्मनी का साथ दिया था। उस समय सारे मुस्लिम राष्ट्र टर्की का सार्वभौमत्व स्वीकार करते थे। इसलिए युद्ध-काल में इङ्गलैण्ड तथा उसके साथी देशों ने यह प्रयत्न किया, कि मुस्लिम-जगत में आपस में फूट हो जावे; वे टर्की का साथ छोड़ देवें। इस उद्देश से उन्होंने कई छोटे-छोटे मुस्लिम राष्ट्रों को वचन दिया, कि यदि वे युद्ध में टर्की का साथ न देवेंगे, तो वे उनकी स्वाधीनता का समर्थन करेंगे। कई देश इनके चक्कर में आ भी गए, पर उस समय इन्हें इस कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त न हुई। युद्ध ख़तम हुआ, इङ्गलैण्ड तथा उसके सहयोगियों की जीत हुई, अब उन्हें टर्की को कसने का मौक़ा मिला। उन्होंने सोचा कि जब तक टर्की तथा अन्य अरब-भाषा बोलने वाली जातियाँ (जिसमें अरेबिया, पैलेस्टाइन, इराक़, सीरिया तथा अन्य समीपवर्ती देश शामिल हैं) एका करके रहती हैं, तब तक पाश्चात्य राष्ट्र इन पर अपना क़ब्ज़ा सरलता से नहीं जमा सकते। यदि इस सङ्घ में सम्मिलित सारे राष्ट्र अलग-अलग हो जावें, तो टर्की की राजनैतिक शक्ति को भी एक गहरी चोट पहुँचेगी और इन छोटे-छोटे राष्ट्रों पर क़ब्ज़ा जमाना भी बहुत सहल हो जावेगा। इस उद्देश से कार्य आरम्भ किया गया। अन्तर्राष्ट्रीय परिषद ने, जिसमें युद्ध में जीते हुए देशों का प्रधानत्व है, यह तय किया कि टर्की के सार्वभौमत्व में छोटी-छोटी मुस्लिम जातियाँ बहुत पीछे पड़ी जा रही हैं। उनकी स्वाधीनता की रक्षा तथा आर्थिक और सामाजिक उन्नति के लिए यह आवश्यक है, कि टर्की के सार्वभौमत्व का अन्त कर दिया जावे। इधर इन छोटे-छोटे राष्ट्रों को भी टर्की के विरुद्ध भड़काया गया। आख़िर सन् १९२३ में विजयी देशों का काम पूरा हुआ और टर्की ने अपना सार्वभौमत्व हटा लेना स्वीकार किया। इस तरह १२० लाख मनुष्य अपने प्राचीन सङ्घ को तोड़ कर अलग-अलग राष्ट्रों में बँट गए। अब यह कहा गया, कि ये छोटे-छोटे राष्ट्र हैं, कमज़ोर हैं और असभ्य हैं। इनके संरक्षण का भार बड़ी जातियों को लेना चाहिए। उन्हें चाहिए कि वे इन्हें सभ्य बनावें और इनकी आर्थिक तथा सामाजिक दशा का सुधार करें। इस 'पवित्र' उद्देश से इङ्गलैण्ड तथा फ़्रान्स ने यह 'महान कार्य' अपने सिर पर लिया। और कौन देश था जो इतने ऊँचे कार्य को कर सकता था? आज इन्हीं दो राष्ट्रों ने भारत तथा मिश्र को उन्नति तथा गौरव के शिखर पर चढ़ाया है और वे ही इनको भी ऊँचा उठा सकते हैं।

इस तरह इङ्गलैण्ड तथा उसके साथी देश ने अरबी-जगत को अपने क़ाबू में किया। अब इन संरक्षकों की देख-भाल में इन 'असभ्य' देशों का शासन शुरू हुआ। आज सात वर्षों के बाद इन देशों ने जो उन्नति की है, उसका हाल हम पाठकों के सामने रखते हैं। इस संरक्षण का सब से पहिला फल तो यह हुआ है, कि इन राष्ट्रों के टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए। युद्ध के पहिले जो मनुष्य अपने को एक देश के निवासी समझते थे और क़ुस्तुनतुनिया की पार्लामेण्ट में सब मिल कर सदस्य भेजते थे, वे अब भिन्न-भिन्न देशों के निवासी हो गए हैं। उनकी शासन-प्रणाली भिन्न-भिन्न हैं, उनके सिक्के अलग-अलग हैं, और अब वे न एक-दूसरे से पूर्ण स्वतन्त्रता से व्यापार कर सकते, न बिना सरकारी अनुमति-पत्र के एक-दूसरे से मिल ही सकते हैं। यह उन्हें भिन्न-भिन्न जातियाँ बनाने का और उनमें फूट पैदा करने का प्रयत्न है। इस नीति का उन्होंने विरोध किया। उन्होंने कहा, कि इस परिवर्तन से हम लोग छोटे-छोटे राष्ट्रों में बँट गए हैं और इस तरह हमारी राजनैतिक शक्ति बहुत घट गई है। फिर इस बटवारे से हमारी औद्योगिक तथा व्यापारिक उन्नति में भी बाधा पड़ती है; पर उनकी सुनता कौन है?

आज पैलेस्टाइन की दशा कितनी शोचनीय हो रही है! ब्रिटिश राजनीतिज्ञों ने पैलेस्टाइन में जाति-विरोध पैदा करके उसे इस बहाने से अपने क़ाबू में रख छोड़ा है! इङ्गलैण्ड ने यहूदियों को, जो कि उस देश के निवासी नहीं हैं, पैलेस्टाइन में अपना राष्ट्र बनाने का वचन दे दिया है, और उनके इस कार्य को प्रोत्साहित किया है। अब जब पैलेस्टाइन में रहने वाली अरबी तथा अन्य जातियाँ इससे चिढ़ कर यहूदियों से झगड़ रही हैं, ब्रिटिश-सरकार अपनी पुरानी चाल चल रही है। वह कहती है कि तुममें आपस में फूट है, पहिले एका करो, फिर स्वराज्य लो। वह पहिले फूट पैदा करके अब उसका फ़ायदा उठा रही है। जिस तरह वह भारत के हिन्दू और मुसलमानों से कहती है, उसी तरह वह पैलेस्टाइन के अरब और यहूदियों से कहती है, कि बिना हमारे इस देश में शान्ति नहीं रह सकती। वर्तमान दशा में हमारा यहाँ रहना बहुत आवश्यक है। फिर भी झगड़े बढ़ते ही जा रहे हैं। ब्रिटिश सरकार ने यहूदी-अरबी प्रश्न को ज़रा भी हल नहीं किया है, इससे सन् १९२९ की ग्रीष्म-ऋतु में एक बहुत बड़ा दङ्गा हुआ, जिसमें १३३ यहूदी तथा ११६ अरबियों ने अपने प्राण खोए और राष्ट्र की बहुत सी सम्पत्ति का नाश हुआ! सन् १९२२ में पैलेस्टाइन के ब्रिटिश हाई-कमिश्नर ने पैलेस्टाइन-निवासियों को कुछ अधिकार देने का वचन दिया। शासन-प्रणाली निर्माण हुई, पर इस शासन-प्रथा में कुछ ऐसी शर्तें रक्खी गईं कि अरबियों ने उसे अस्वीकार किया। उस समय से पैलेस्टाइन का शासन ब्रिटिश सरकार के हाथ में है। वे ख़ास क़ानूनों द्वारा उसका शासन चलाते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय परिषद तथा उसकी प्रतिनिधि ब्रिटिश सरकार क्या इसी तरह से छोटे देशों की स्वतन्त्रता की रक्षा करती है?

यह उदाहरण तो इङ्गलैण्ड के 'पवित्र विचारों' का हुआ, अब फ़्रेञ्च सरकार के संरक्षण का हाल सुनिए। सीरिया फ़्रेञ्च-सरकार के संरक्षण में है। वह अन्य देशों से कहीं ज़्यादा सभ्य तथा उन्नतिशील है। अरब की जनता अन्य देशों से ज़्यादा शिक्षित है और वहाँ के निवासी अन्य देशों में जाकर विज्ञान तथा साहित्य का अध्ययन करते रहे हैं। फिर सीरिया में पैलेस्टाइन की तरह कोई जातीयता का झगड़ा भी नहीं है। फिर भी सीरिया में न शान्ति है, न वहाँ के निवासियों को कोई अधिकार ही दिए गए हैं। सीरिया में आने के बाद फ़्रेञ्च-सरकार का पहिला काम यह हुआ, कि उसने वहाँ के राजा फ़ैज़ल को देश के बाहर निकाला। इसने अङ्गरेज़ों की इच्छा तथा सहायता से टर्की के सार्वभौमत्व को दूर किया था। टर्की से अलग होने के बाद वह स्वतः ही देश से निकाल बाहर किया गया। देश का सारा शासन-भार फ़्रान्स ने अपने हाथ में लिया। उसने सीरिया की शासन-प्रथा तथा तत्सम्बन्धी सारी संस्थाओं को उलट-पुलट कर दिया। इससे सीरिया-निवासियों में बहुत असन्तोष फैल गया। उन्होंने बार-बार अन्तर्राष्ट्रीय सभा से शिकायत की, कि इस नवीन रचना से तो हमारी स्वाधीनता ही छीन ली गई है, पर इसका कुछ भी फल न हुआ। अन्त में निराश होकर सन् १९२५ में उन्होंने राज्यक्रान्ति की और दो साल तक बराबर वे फ़्रेञ्च सरकार से लड़ते रहे। आख़िर में फ़्रेञ्च सरकार ने कुछ अधिकार देना स्वीकार किया। उन्होंने सीरिया-निवासियों से राष्ट्रीय शासन-प्रथा की रचना करने के लिए एक सभा बनाने को कहा। इस सभा ने जो शासन-प्रणाली बनाई, वह नामञ्ज़ूर की गई। फिर झगड़ा चलता रहा। सन् १९३० के मई मास में फ़्रेञ्च सरकार ने सीरिया के नेताओं की इच्छानुसार वहाँ की शासन-प्रणाली बनाना निश्चित किया, पर फिर भी उसमें कुछ ऐसी बातें रख दी गईं, कि सीरिया-निवासियों ने उसे अस्वीकार किया। इस तरह सीरिया अभी तक पराधीन है!!

यह तो राजनैतिक दशा का वर्णन हुआ, अब आर्थिक दशा को लीजिए। इङ्गलैण्ड तथा उसके साथी-देश, व्यापार-प्रधान देश हैं, दूसरे देशों पर राजनैतिक प्रधानत्व जमाने में उनका पहिला उद्देश यह होता है, कि वे वहाँ

(शेष मैटर २९वें पृष्ठ के पहिले कॉलम पर देखिए)

श्रीमती नेली सेन गुप्ता

[श्री० मङ्गलदेव जी शर्मा, स० सम्पादक "अभ्युदय"]

"When an English girl marries an Indian, India must become her home in every sense of the word."

Nellie Sen Gupta.

समाचार-पत्र-पाठकों और वर्तमान भारतीय प्रगति से जानकारी रखने वाले बहुत कम लोगों को यह ज्ञात होगा कि, कॉङ्ग्रेस के जेल-प्रवासी स्थानापन्न प्रेज़िडेण्ट श्रीयुत यतीन्द्र मोहन सेन गुप्त की पत्नी एक अङ्गरेज़ महिला हैं। अलबत्ता श्रीमती नेली सेन गुप्ता के जेल-प्रवास के बाद कुछ लोगों को अवश्य इस तथ्य का पता चला होगा।

ढूँढ़ने पर देश में आज सैकड़ों नहीं, तो पचासों हिन्दू-मुसलमान ऐसे मिल सकते हैं, जिनके घरों में यूरोपियन अथवा अमेरिकन पत्नियाँ हैं; लेकिन उनमें से मिसेज़ नेली को छोड़ कर, आज एक भी ऐसी नहीं दिखाई देती, जिसने अपने पति का उसके कार्यक्षेत्र में इतने त्याग और तत्परता से साथ दिया हो, अथवा जो स्वतन्त्र रूप से ही भारत को अपना घर (Home) मान कर उसके हित में लगी हो। मीरा बहन, श्रीमती एनी बीसेण्ट, श्रीमती मारग्रीट कज़िन्स भी ऐसी महिला-रत्न हैं, जो भारतोद्धार की पूर्णाभिलाषिणी हैं, और जो इस देश को अपनी मातृभूमि के समान ही प्यार करती हैं; बल्कि डॉक्टर एनी बीसेण्ट और मीरा बहन ने तो अब भारत-भूमि को ही अपना सर्वस्व मान लिया है। इन तीनों माननीय महिलाओं का उल्लेख हमारे कथन से पृथक ही अपनी विशेषता रखता है।

यहाँ यह कहना कदाचित अप्रासङ्गिक न होगा कि, भारत में अधिकांश यूरोपियन हिन्दुस्तानी गठजोड़े असफल हुए हैं। महाराजाओं के साथ हुए ऐसे गठ-बन्धन तो इतने निकम्मे सिद्ध हुए हैं कि, उनकी कथा भी कष्टकर है। देखा प्रायः यह गया है कि जो भारतीय यूरोपियन या अमेरिकन लड़कियों से शादी करके लाए, वे उन्हीं के हो रहे; अपनापन खो बैठे और समाज के लिए सर्वथा व्यर्थ प्रमाणित हुए।

लेकिन श्रीयुत जे० एम० सेन गुप्त और श्रीमती नेली सेन गुप्ता, दोनों ही उपरोक्त तथ्य के अपवाद हैं। इस समय राजनीति ही मि० सेन गुप्त का जीवन है, वे स्वभावतः नेता हैं; राजनीति की उथल-पुथल में उन्हें आनन्द आता है, और उसके लिए वे सब कुछ सहन कर सकते हैं। पिछले आठ मास वे आन्दोलन में निरन्तर रत रहते हुए दो बार जेल जाकर उन्होंने यह सिद्ध कर दिया है, कि अवसर पड़ने पर वे पीछे हटने वाले भी नहीं हैं। बङ्गाल में उनका अपना एक ज़बरदस्त सङ्गठन है। अवसर के वे बड़े अच्छे पारखी हैं। मौक़े पर सेनानायक की सी सूक्ष्म और सैनिक के से साहस से काम लेना वे जानते हैं, अभी-अभी यू० पी० और पञ्जाब में, काग-भुशुण्ड के राम-बाण की भाँति दफ़ा १४४ उनके पीछे-पीछे चलती थी, लेकिन इसकी उन्होंने बहुत कम परवाह की। उनके इन्हीं गुणों ने उन्हें पिछली लाहौर की कॉङ्ग्रेस में—जहाँ कॉङ्ग्रेस के अन्तरङ्ग में एक ओर श्रद्धेय मालवीय जी और दूसरी ओर सुभास बाबू जैसे दिग्गज नेताओं के लिए कोई स्थान नहीं था—कॉङ्ग्रेस वर्किङ्ग कमिटी का सदस्य बनाया, और हाल ही में ६ मास की सज़ा काट कर आने पर, राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू की इन दिनों की दूसरी ढाई साल के लिए जेल-यात्रा के बाद स्थानापन्न राष्ट्रपति बनाया, भले ही गिरफ़्तारी के कारण उस पद पर वे पाँच रोज़ से अधिक न रह सके। अस्तु—

गत अक्टूबर मास में श्रीयुत सेन गुप्त कलकत्ते की अलीपुर सेण्ट्रल जेल से ६ मास की सज़ा भुगत कर आए। घर आते ही आपने एक प्रोग्राम निश्चित किया और देश के दौरे पर निकले। श्रीमती सेन गुप्ता भी उनके साथ चलीं। बङ्गाल के कुछ हिस्सों में दौरा करने के उपरान्त यह दोनों बम्बई, कराची, हैदराबाद, प्रयाग, लखनऊ, देहली होते हुए पञ्जाब के दौरे के लिए अमृतसर पहुँचे ही थे, कि २५ अक्टूबर की रात को वहाँ जलियाँवाला बाग़ में, देहली के एक भाषण के लिए पकड़े जाकर मुक़द्दमे के लिए देहली लाए गए। जलियाँवाला में आपकी गिरफ़्तारी के बाद श्रीमती सेन गुप्ता ने एक छोटे से व्याख्यान के साथ अपने पति का सन्देश सभा में सुनाया। उनके दौरे में यह पहला अवसर था, जब सार्वजनिक रूप से वे बोलीं। अलबत्ता इससे पूर्व प्रयाग के विद्यार्थियों की एक सभा में वे बोली थीं, जिसमें उन्होंने विद्यार्थियों से स्वातन्त्र्य-संग्राम में पूर्ण सहयोग देने की अपील की थी।

पुलिस द्वारा मि० सेन गुप्त के देहली लाए जाने पर आप भी देहली आ गईं और यहाँ के सार्वजनिक जीवन में भाग लेने लगीं। देहली की कॉङ्ग्रेस कमिटी आदि संस्थाएँ ग़ैर-क़ानूनी क़रार दी जा चुकी हैं, गत २९ अक्टूबर को वहाँ सार्वजनिक समारोह के उपरान्त कम्पनी बाग़ में जब सभा होने लगी, तो पुलिस ने आकर इसे रोका। सभा पर लाठियों की वर्षा की गई। कहते हैं, जनता में से किसी उत्पाती ने एक रोड़ा फेंक दिया और वह मैजिस्ट्रेट मि० ईसर की आँख पर लगा। मजमे को ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दिया गया और लाठियों की मार से वह तितर-बितर कर दिया गया। १२५ आदमियों को इसके कारण थोड़ी-बहुत चोटें आईं। श्रीमती सेन गुप्ता की आँखों के सामने यह सब हुआ। वे आज की सभा की विशेष वक्ता थीं, लेकिन बोल न सकीं।

दूसरे दिन ३० अक्टूबर को, आज के पुलिस अत्याचारों का विरोध करने के लिए फिर उसी स्थान पर सार्वजनिक सभा हुई। देहली की पाँचवीं डिक्टेटर डॉक्टर श्रीमती वेदी सभानेत्री थीं। पुलिस ने आज भी मीटिङ्ग को आ घेरा, लेकिन मीटिङ्ग की कार्रवाई आरम्भ हुई। सभानेत्री के भाषण के उपरान्त श्रीमती नेली सेन गुप्ता भाषण के लिए उठीं। उन्होंने कहना शुरू किया—"गवर्नमेण्ट कहती है कि भारतीय स्वातन्त्र्य-आन्दोलन ढीला पड़ता जा रहा है। लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि जब बात ऐसी ही है, तो पुलिस के यह भारी-भारी प्रदर्शन किस डर से किए जाते हैं और क्यों शान्त जनता पर लाठियाँ बरसाई जाती हैं। मैं अधिकारियों को आगाह कर देना चाहती हूँ, कि यह लड़ाई तो अब अन्त में जाकर ही समाप्त होगी, उनका दमन और अत्याचार अब कारगर न होगा।" आप इतना ही कह पाई थीं, कि वे गिरफ़्तार कर ली गईं। आपके साथ ही सभानेत्री और महिला स्वयंसेविकाओं की जत्थेदारनी श्रीमती राजरानी भी पकड़ ली गईं और पुरुषों में से २३ गोरखे वालण्टियरों समेत ३३ को गिरफ़्तार किया गया। आज भी पुलिस ने लाठी चलाई। अपने पति की अनुगामिनी श्रीमती नेली सेन गुप्ता भी उनके पाँचवें दिन ही जेल में जा बैठीं।

३री नवम्बर, १९३० ई० को देहली के अतिरिक्त ज़िला मैजिस्ट्रेट मि० पूल ने मि० सेन गुप्त को कुल मिला कर एक साल की सादी क़ैद की सज़ा सुनाई। दूसरे दिन, ४थी तारीख़ को, उन्हीं के सामने श्रीमती सेन गुप्ता और उनके साथी गिरफ़्तार शुदाओं का मुक़द्दमा शुरू हुआ। मैजिस्ट्रेट ने उन पर क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट ऐक्ट की धारा १७ (१) का अपराध लगाया। वे ग़ैर-क़ानूनी संस्था की मेम्बर क़रार दी गईं, क्योंकि इस्तग़ासे की तरफ़ से कहा गया था, कि मीटिङ्ग कॉङ्ग्रेस की ओर से की गई थी, जो ग़ैर-क़ानूनी संस्था है, और यह अभियुक्त उसमें भाग ले रहे थे। देश की वर्तमान परम्परा के अनुसार आपने अभियोग की कार्यवाही में कोई भाग नहीं लिया। क्यों नहीं लिया, इसके सम्बन्ध में अङ्गरेज़ रमणी श्रीमती सेन गुप्ता ने अङ्गरेज़ मैजिस्ट्रेट मि० पूल को उनके एक जवाब में जो झाड़ बताई, वह उनकी स्वतन्त्र मनोवृत्ति, निर्भीकता और स्पष्टवादिता की द्योतक होने से स्मरणीय रहेगी। इस्तग़ासे की दरख़्वास्त दायर हो जाने के बाद मैजिस्ट्रेट ने अभियुक्तों से एक-एक करके दरियाफ़्त किया कि क्या वे लोग कुछ कहना चाहते हैं? इसके जवाब में सब अभियुक्तों ने अपने को अपराधी स्वीकार किया। अन्य देवियाँ तो चुप रहीं, लेकिन श्रीमती सेन गुप्ता ने उत्तर में कहा:—

"मैं आपको यह सूचित कर देना चाहती हूँ कि यद्यपि मैं मङ्गलवार (३० अक्टूबर) की रात को कम्पनी बाग़ में गिरफ़्तार की गई थी, लेकिन मुझे किसी मैजिस्ट्रेट के सामने पेश नहीं किया गया। आप पहले मैजिस्ट्रेट हैं, जिन्हें मैंने कल प्रातःकाल १० बजे देखा, जब आप हवालात में मुझसे मिलने गए थे। आप या किसी भी मैजिस्ट्रेट ने यह कैसे जान लिया कि मैं सफ़ाई पेश नहीं करना चाहती? यह आपने कैसे समझ लिया कि मैं ज़मानत की दरख़्वास्त नहीं दूँगी? दूसरी बात यह कि मुझे इस जेल की (क्योंकि मुक़द्दमा

(२७वें पृष्ठ का शेषांश)

अपना माल बेच सकें और वहाँ के उद्योग तथा व्यापार को अपने हाथ में ले सकें। इसलिए इन अरबी देशों में ऊपरी उन्नति तो बहुत हुई है, उद्योग तथा व्यापार बढ़ गया है, सड़कें बनाई गई हैं, रेल निकाली गई है; पर सारी पूँजी विदेशियों की है। इन संस्थाओं से आने वाली सारी कमाई विदेशियों की जेब में जाती है। रेल, तार तथा सड़कों की जो उन्नति की गई है, वह भी विदेशी माल की बिक्री बढ़ाने की दृष्टि से की गई है! इन देशों की सब से बड़ी पेट्रोल की कम्पनी ब्रिटिश, फ़्रेञ्च तथा अमेरिका के निवासियों के हाथ में है। डेडसी से जो अनेक रासायनिक पदार्थ निकाले जाते हैं, उसका भी ठेका अङ्गरेज़ तथा अमेरिकन कम्पनियों के हाथ में है। फिर पैलेसटाइन में अमेरिका तथा इङ्गलैण्ड आदि देशों के यहूदी आ-आकर बस रहे हैं। वे अपने धन द्वारा पैलेसटाइन में आर्थिक प्रधानत्व स्थापित कर रहे हैं। इस तरह अन्तर्राष्ट्रीय सभा ने अरबी-जगत को क़ाबू में करने के लिए, तथा उसकी धन-सम्पत्ति लूटने के लिए यह महान षड्यन्त्र रचा है! इस पर भी जब इस परिषद की बैठकें होती हैं, तब वे कहते हैं कि "इस नवीन रचना से ये देश बहुत ज़बरदस्त उन्नति कर रहे हैं। फ़्रान्स तथा इङ्गलैण्ड यह परोपकार का महान कार्य बड़ी ख़ूबी से कर रहे हैं।" लूट की लूट, उस पर फिर यह न्याय का ढोंग! ठीक है "समरथ को नहिं दोष गुसाईं।"

* * *

जेल में ही हुआ था) हवालात में रखने के लिए जेलर को कोई वारण्ट नहीं दिया गया। इसलिए उन लोगों को मुझे हिरासत में रखने का कोई हक़ नहीं है।

"दूसरी उल्लेखनीय बात यह है कि इन मुक़द्दमों के सम्बन्ध में, जिस ढङ्ग से यह चलाए जाते हैं, क्या आप सम्भवतः इन्हें सार्वजनिक अदालती कार्रवाई कह कर पुकार सकते हैं? इन बातों से तो यही पता चलता है कि भारत में आकर अङ्गरेज़ लोग भिन्न ही प्रकृति के हो जाते हैं। और यह सब बातें होती हैं देहली में; जहाँ वायसराय रहते हैं, और जहाँ वह रोज़ न्याय और स्वतन्त्रता के नाम पर चलाई जाने वाली इस गवर्नमेण्ट के तौर-तरीक़े की बहुत सी बातें किया करते हैं। इन कारणों से मैं अपने मामले में कोई सफ़ाई पेश करने से इनकार करती हूँ।"

श्रीमती नेली सेन गुप्ता की इस लथाड़ पर टीका-टिप्पणी करने की आवश्यकता नहीं। यदि यही बयान किसी भारतीय ने दिया होता, तो राजनीतिक दृष्टि से उसका महत्त्व अधिक न था, लेकिन एक भारत-प्रवासिनी अङ्गरेज़ महिला के ये शब्द बहुत मूल्यवान हैं। भारतीयों के घरों में आकर रही हुई कितनी ही यूरोपियन महिलाओं में यह देखा जाता है, कि शासित जाति के एक सदस्य की पत्नी होने पर भी वे अपनी व्यर्थ की ऐंठ-अकड़ को नहीं छोड़तीं, दूसरे उनके व्यर्थाभिमान के कारण उनकी न्याय-बुद्धि सदैव कुण्ठित रहती है। वे समाज की अन्य दिशाओं में सहृदय हो सकती हैं, लेकिन उनका राजनीतिक कल्पनाकाश सदैव सन्देह और द्वेष के बादलों से घिरा रहता है।

लेकिन इस सम्बन्ध में मैडम नेली की सहृदयता शतशः प्रशंसनीय है। और आज ही क्यों, आज से दस वर्ष पूर्व भी वे इतनी ही सत्य की उपासिका, सहृदय और सौम्य थीं। बात सन् १९२१ ई० के असहयोग-काल की है। उन दिनों भी आप चुप न बैठी थीं। यह सच है कि मि० सेन गुप्त उन दिनों आज के-से मुसल्लिमा लीडर न थे, लेकिन उस आन्दोलन में भी, स्वर्गीय देशबन्धु के एक लेफ़्टिनेण्ट की हैसियत से वे, हमें याद है, तीन मास के लिए जेल गए थे। मैडम नेली को तो तब कदाचित् बङ्गाल के कुछ लोगों को छोड़ कर, कोई भी नहीं जानता था। लेकिन उन्होंने उन दिनों भी काम किया।

सन् १९२१ ई० में आप एक बार चटगाँव गई हुई थीं कि वहाँ के तब के डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट मि० एफ़० डब्ल्यू० स्ट्राँङ्ग ने आपके ख़िलाफ़ दफ़ा १४४ लगा दी? मैजिस्ट्रेट ने जो नोटिस आपके पास भेजा था, उसमें इस कार्रवाई के लिए जो कारण दिए थे, वे बड़े लचर थे। मैडम नेली ने उस नोटिस के लिए अपने उत्तर में मैजिस्ट्रेट की जो ख़बर ली है, वह उनके पूर्वोक्त गुणों, साथ ही उनके भारत-प्रेम की पूर्ण परिचायक है। अपने उत्तर में उन्होंने मैजिस्ट्रेट को लिखा था :—

"...........I do not know what your section 144 means. If this section prohibits encouraging home industry and requesting people to purchase home-made cloth in preference to foreign cloth, which as I know all the civilized world and which specially Home Government and Home people——I mean British people at Home——often support, the people who drafted the law must have been very bad.

I challenge the proof of the allegations made against me and also most emphatically declare the report as false. I am indeed shocked at the absolute demoralisation of your police and their wanton disregard for truth and fair dealing.

I went out this morning in a bazar to see if I could appeal to my fellow citizens here to sell and purchase their own country-made cloth. I created no row, no traffic was obstructed and we were peacefully prosecuting our work without interruption from any quarter...........It was the police who were disturbing the people by their frequent visits. One police officer arrested a boy, who was with me, for no reason whatsoever and when I protested against this misconduct on the part of the police and asked him to arrest me as I had brought the boy with me; the police officer threatened me and I presume, true to his words, this officer ran to you with a concocted story and came back in the evening with a notice signed by you. Is it a sin to request people openly to patronise their home industry? Is it a crime to ask the shopkeepers to exhibit country-made production to attract the notice of purchasers? Is the law in India so destructive of her industry? Are we here to prohibit from encouraging what we hold up zealously at home, or are we here under the British rule? Am I to understand that British Officers cease to be gentlemen and honorable when they come to India? I reserve the right to disobey this order when Mahatma Gandhi, the leader of the National Movement in India and the Indian National Congress order me to disobey it."

अर्थात्—"मैं नहीं जानती कि आपकी दफ़ा १४४ का क्या अर्थ है। अगर यह दफ़ा देशी उद्योग-धन्धों को उन्नत करने और जनता से यह कहे जाने को, कि वे विदेशी के मुक़ाबिले में देश का बना कपड़ा ख़रीदें, जैसा कि मैं जानती हूँ, समस्त सभ्य संसार करता है, और जिसका पक्ष ख़ासकर अङ्गरेज़ लोग और उनकी सरकार अपने देश में ग्रहण करते हैं, रोकती है, तो इस क़ानून को बनाने वाले अवश्य ही बहुत बुरे आदमी थे।

"मेरे ख़िलाफ़ जो मैं तुहमत बयान किए जाते हैं, उनके सुबूत के लिए चुनौती देती हूँ और बलपूर्वक कहती हूँ कि आपको मिली हुई रिपोर्ट ग़लत है, आपकी पुलिस के घोर नैतिक पतन और उनकी, सत्य और सद्व्यवहार के प्रति उपेक्षापूर्ण विचारहीनता पर, मुझे हार्दिक दुःख है।

"मैं आज प्रातःकाल बाज़ार में अपने सहयोगी नागरिकों से यह अपील करने गई थी, कि वे अपने देश के ही बने कपड़े बेचें और ख़रीदें। मेरे कारण कोई शोर नहीं हुआ, न रास्ता ही रुका; हम लोग बिना किसी प्रकार की बाधा के अपना काम कर रहे थे। ××××अलबत्ता पुलिस बार-बार आकर जनता के काम में अशान्ति डालती थी। एक पुलिस-अफ़सर ने अकारण ही मेरे साथ के एक लड़के को पकड़ लिया, और जब मैंने उसकी इस बेक़ायदगी के ख़िलाफ़ प्रतिवाद करते हुए उससे कहा कि तुम मुझे पकड़ो, क्योंकि लड़के को मैं अपने साथ लाई हूँ, तो उसने मुझे धमकी दी और जैसा कि उसने कहा था वैसा ही हुआ। यह पुलिस वाला भागा हुआ आपके पास पहुँचा, अपनी गढ़ी-गढ़ाई कहानी इसने आपको कह सुनाई और शाम को आपका दस्तख़ती नोटिस लेकर फिर आ धमका। जनता से खुले-आम यह कहना, कि वह अपने देश के उद्योग-धन्धों का संरक्षण करे, क्या कोई पाप है? क्या यह कोई जुर्म है, कि दूकानदारों से देश की बनी चीज़ें दूकान में सजाने के लिए कहा जाय? क्या भारत में प्रचलित क़ानून उसके उद्योग-धन्धों के लिए ऐसा विघातक है? क्या हम (अङ्गरेज़) लोग यहाँ इसीलिए आए हैं कि, अपने देश में हम जिन बातों को धड़ाके के साथ करते हैं, उनकी उन्नति का यहाँ निषेध करें? अथवा हमें भी यहाँ ब्रिटिश शासन की नीति से शासित होना है? क्या (इस सबका अर्थ) मैं यह समझूँ कि ब्रिटिश अफ़सर लोग भारत में आकर सज्जनता और भलमनसाहत को तिलाञ्जलि दे देते हैं? अभी तो नहीं, जब असहयोग-आन्दोलन और कॉङ्ग्रेस के नेता महात्मा गाँधी मुझे हुक्म देंगे, तब मैं आपकी इस आज्ञा की अवज्ञा करूँगी।"

यह तो हुई सन् १९२१ ई० के असहयोग आन्दोलन की बात; सन् १९३० में भी श्रीमती सेन गुप्ता की विचारधारा, वर्तमान शासन-प्रणाली के सम्बन्ध में, उतनी ही खरी, निष्पक्ष और सहृदयतापूर्ण है। वे एक शुद्ध भारतीय ललना की भाँति अपने पति की अनुगामिनी हैं, आन्दोलन को भी वे एक भारतीय की भाँति ही देखती हैं; अङ्गरेज़ होने का घमण्ड उन्हें छू तक नहीं गया। अपनी गिरफ़्तारी के दूसरे दिन, ३१ अक्टूबर को इन्होंने अपने पुत्रों—शिशिर और अनिल—को जो पत्र लिखा है, उसके कुछ उद्धरण देकर हम यहाँ अपने कथन की पुष्टि करते हैं। वे लिखती हैं :—

"..........I was merely addressing a meeting which had not been declared unlawful and I certainly was not given time to say anything that could probably be called sedition, we were not even shown the order. . . . It will merely show what a farce these trials and arrets are. I really think they have lost their heads completely."

अर्थात्—"मैं केवल एक सभा में व्याख्यान दे रही थी, जो ग़ैर-क़ानूनी क़रार नहीं दी गई थी, और मुझे इतना अवसर ही कहाँ दिया गया, कि मैं बोल सकती, जिसे सम्भवतः राजद्रोह कहा जा सकता; हमें ऑर्डर तक तो दिखाया नहीं गया।××××इन बातों से पता चलता है कि यह मुक़द्दमे और गिरफ़्तारियाँ महज़ एक ढकोसला हैं। सचमुच मैं तो ऐसा

(२०वें पृष्ठ का शेषांश)

रुपए वार्षिक आय का प्रदेश भी कम्पनी के नाम जागीर में लिख दिया। यह भी निश्चित हुआ कि कम्पनी का एक दूत पूना-दरबार में रहा करेगा।

विश्वास नहीं होता कि इस अदूरदर्शितापूर्ण सन्धि में नाना फड़नवीस का हाथ रहा होगा। जो नाना फड़नवीस अङ्गरेज़ों को आश्रय देने का आजीवन विरोधी रहा—जिस नाना फड़नवीस की निश्चित सम्मति थी कि "इन टोपी वालों (यूरोपियनों) के व्यवहार, चालाकी और बेईमानी से भरे होते हैं" उसने अङ्गरेज़ों को साष्टी का द्वीप "मित्रता के उपहार" में, और भड़ोच और उसके आस-पास का प्रदेश "जागीर" में दे देने वाली सन्धि का समर्थन किया होगा, इस बात की कल्पना नहीं की जा सकती! पुरन्दर की सन्धि से यह अनुमान होता है कि उस समय पेशवा-दरबार में नाना फड़नवीस का अधिक प्रभाव न था। अस्तु।

(क्रमशः)

['चाँद' के हिन्दी संस्करण से उद्धृत]

* * *

सोचती हूँ, कि इन लोगों के दिमाग़ बिलकुल फिर गए हैं।"

वर्तमान पाँचलियों से वे कैसी ऊबी हुई हैं, इसका परिचय नीचे के उद्धरणों से मिलता है :—

"I realised two days ago I should most probably be arrested but one doesn't get in the least excited or nervous but just disgusted with the idea of law and order which has now become illegal law and disorder caused by the Government."

अर्थात्—"दो दिन पूर्व मुझे ऐसा भास हुआ था, कि अवश्य ही मैं पकड़ ली जाऊँगी। लेकिन गिरफ़्तारी से किसी को किञ्चित मात्र भी जोश या घबराहट नहीं होती, बल्कि वह परेशान होता है न्याय और व्यवस्था के उस विचार से, जो आज सरकार की कार्यवाहियों के कारण अन्याय और अव्यवस्था बने हुए हैं।"

गिरफ़्तारी और जेल के लिए वे कैसी तैयार बैठी थीं, यह नीचे के वाक्य से सिद्ध होता है :—

"Don't worry about me at all. I am absolutely all right. The thought of jail when one is outside is much worse than when one is actually in it. . . . . Mum's (Mr. Sen Gupta's) judgment will be given to-day. It will probably be two years, but don't be alarmed by that or if they give me six months."

अर्थात्—"मेरी चिन्ता बिलकुल मत करना। मैं भली भाँति हूँ। जेल तो उससे बाहर रहते हुए ही हौआ जान पड़ता है, यहाँ आ जाने पर तो वह कुछ भी नहीं। तुम्हारे पिता का फ़ैसला आज सुनाया जायगा। उन्हें शायद दो वर्ष की क़ैद की सज़ा दी जायगी; लेकिन तुम उससे, या मुझे भी यदि ६ मास के लिए भेज दिया जाय, तो घबड़ाना मत।"

अब से २१ वर्ष पूर्व केम्ब्रिज में मिस नेली ग्रे (Miss Nellie Gray) और मिस्टर जे० एम० सेन गुप्त का विवाह-सम्बन्ध हुआ था। दोनों का प्रेम-सम्बन्ध आशातीत सफल हुआ है। पूर्व और पश्चिम—प्रकाश और अन्धकार—दो विभिन्न सभ्यताओं के होते हुए भी आज दोनों के बीच सन्ध्या समागम का-सा उज्ज्वल चन्द्रोदय हुआ है। हमने इस लेख के आरम्भ में श्रीमती नेली के जो वाक्य उद्धृत किए हैं, उसे उन्होंने अक्षरशः सत्य सिद्ध कर दिखाया है। दो प्राणियों में दो शरीर होते हुए भी, कैसी एक-प्राणता है, इसके सम्बन्ध में मैडम नेली की माता मिसेज़ ग्रे ने जो विचार, मि० सेन गुप्त की गत १२ अप्रैल की जेल-यात्रा के उपरान्त, उनके अलीपुर सेण्ट्रल जेल में अनशन करने के समय, लन्दन के 'डेली न्यूज़' के सम्वाददाता से प्रकट किए थे, उन्हें यहाँ उद्धृत करने का लोभ हम सम्वरण नहीं कर सकते। श्रीमती ग्रे ने कहा था :—

"I love the dear boy. I love them both. They are such a devoted couple. I never know husband and wife more fond of each other. Nellie was determined to have him, and she has stuck to him through thick and thin. She has very strong views on Anglo-Indian marriages, and holds that when an English girl marries an Indian, India must become her home in every sense of the word, and she has thrown herself wholeheartedly into all her husband's affairs.

"I have not worried because I know she was happy in her love. I cannot say anything good enough about my son-in-law, and if the term of a white man can be applied to a black man, then it applies to him. My daughter could not have a better husband."

अर्थात्—"मैं उस प्रिय युवक (श्रीयुत सेन गुप्त) को प्यार करती हूँ! मुझे दोनों ही प्यारे हैं। इस दम्पति में क्या ही सुन्दर प्रेम है। ऐसे पारस्परिक प्रेम करने वाले पति-पत्नी को मैंने कभी नहीं देखा। नेली उससे विवाह करने पर तुल गई थी, और आज वह सब प्रकार से उसकी अनुगामिनी है। "अङ्गरेज़-हिन्दुस्तानी" विवाह के सम्बन्ध में उसके विचार बहुत उच्च हैं। उसका कहना है, कि यदि कोई अङ्गरेज़ लड़की किसी भारतीय से विवाह करे, तो भारत को अक्षरशः उसे अपना देश बना लेना चाहिए। और आज वह तो अपने पति के प्रत्येक कार्य में दिलो-जान से उसकी सहगामिनी बन गई है।

"मुझे चिन्ता नहीं है, क्योंकि मैं जानती हूँ, कि नेली अपने प्रेम-सम्बन्ध में सर्वसुखी है। अपने दामाद के सम्बन्ध में तो मैं कहूँ ही क्या; उसके लिए मैं तो यह कहूँगी कि वह काली जाति का नहीं, बल्कि गोरी जाति का व्यक्ति है। मेरी लड़की को उससे अच्छा पति नहीं मिल सकता था।"

गत अप्रैल वाली सज़ा के वक्त कलकत्ते की अलीपुर जेल में श्रीयुत सेनगुप्त ने, सुभास बाबू आदि के साथ जेल-दुर्व्यवहार के विरोध में अनशन किया था; उस समय श्रीमती सेन गुप्ता जेल के फाटक पर कई घण्टों तक खड़ी रही थीं, लेकिन उन्हें अपने पति से मुलाक़ात करने की आज्ञा नहीं दी गई। उस समय उन्होंने अपनी माता को जो पत्र लिखा था, उसी के उपरान्त उनकी माता ने उपरोक्त उद्गार प्रकट किए थे। पिछले २१ वर्ष में, जब से उन्होंने अपना घर, केम्ब्रिज, छोड़ा है, वे केवल एक बार, सन् १९२३ में वहाँ गई थीं। अपने घर पर कुँवारपन में मिस नेली ग्रे को नाचने का बेहद शौक़ था; वे उन दिनों वहाँ के समाज में वे कलाविद् नर्तकी मानी जाती थीं, और आज भी केम्ब्रिज के नाचघरों में उन्हें इसलिए याद किया जाता है। लेकिन आज तो श्रीमती नेली एक अङ्गरेज़ महिला होकर भी हृदय और मस्तिष्क दोनों से भारतीय बन गई हैं; भारत उनका घर है, उसका दुःख-सुख उनका दुःख-सुख है, और आज वे उसी के लिए अपने रङ्ग और देश के लोगों के जेलख़ाने में पड़ी भारत के नाम की माला जप रही हैं। भारतीय समाज को इस सहृदय ललना से अभी अधिकाधिक आशा करनी चाहिए।

* * *

रजत-रज

[संग्रहकर्ता—श्री० लक्ष्मीनारायण जी अग्रवाल]

विफल मनोरथ होने पर भी प्रयत्न करते रहो। एक ही डुबकी लगाने से समुद्र से मोती न मिलने पर, हताश होने वाले कभी मोती नहीं पाते।

❁

हे मेरे मित्र, अपने अनुभवों का दान देकर मुझे लज्जित न कर। मुझे इन अनुभवों को पूरा मूल्य देकर प्राप्त करने की अभिलाषा है।

❁

पापों में लिप्त होने की अपेक्षा दुःखों में फँसा रहना उत्तम है।

❁

अपने विषय में दूसरों की सम्मति का अत्यधिक विचार करना अपनी सहज उन्नति में बाधा डालना है।

❁

लज्जा अत्यन्त निर्लज्ज होती है।

❁

अपनी निर्जन कुटी में, दीपक जला कर, उसके द्वार पर बैठा हुआ मैं अन्धकार में तेरी प्रतीक्षा करता हूँ।

मेरी आँख लग जाती है, तू इसी बीच में आता है और उदासीन होकर लौट जाता है।

❁

धनी दरिद्र से भी दरिद्र हैं; क्योंकि उनकी आवश्यकताएँ अधिक हैं।

❁

द्वेषाग्नि घर को जला कर बुझती है।

❁

पशुओं के हृदय में भी कोमल और रसिक भाव छिपे रहते हैं। वीणा का अलाप काले नाग को भी मस्त कर देती है।

❁

पाप और साहस में वैर है।

❁

जिस घर में आग लगती है, उसके आदमी ईश्वर को नहीं याद करते, कुएँ की ओर दौड़ते हैं।

❁

यश त्याग से मिलता है, धोखे-धड़ी से नहीं।

❁

मैले बर्तन में साफ़ पानी भी मैला हो जाता है, द्वेष से भरा हुआ हृदय पवित्र आमोद भी नहीं सह सकता।

❁

मन ही अपना मित्र है; मन ही अपना बैरी।

❁

हम सब नौका के यात्री हैं। जब तक हम यह नहीं जानते कि उस अलक्षित तट के किस स्थल पर हमारी नाव लगेगी, तब तक हम घबराते हैं।

जब हमें वह तट स्पष्ट दिखाई देने लगता है, तब हमारी घबराहट उत्सुकता में परिवर्तित हो जाती है।

❁

निराशा असम्भव को सम्भव बना देती है।

❁

ईर्ष्या कानों की पुतली होती है; विपक्षी सम्बन्ध में वह सब कुछ सुनने को तैयार रहती है।

* * *

लड़कियों की शिक्षा

[मिसेज़ जी० पी० द्विवेदी, बी० ए०]

गत चौथी दिसम्बर के भविष्य में एक लेख "लड़कियों की शिक्षा" शीर्षक छपा है। उसमें लेखक महाशय ने लड़कियों की अङ्गरेज़ी शिक्षा के विरुद्ध ख़ूब दिल के फफोले फोड़े हैं। निम्न-लिखित पंक्तियों में मेरा यह आशय नहीं है कि लेखक की आलोचना करूँ, वरन् मेरा मतलब है, कि उनका ध्यान उनकी कुछ भूलों की ओर आकर्षित कर दूँ। इस धृष्टता को मैं आशा करती हूँ कि लेखक महाशय क्षमा करेंगे।

पहली भूल तो आपने यह की है, कि आप फ़रमाते हैं—"लड़कियों को अङ्गरेज़ी शिक्षा देने का उद्देश्य यही हो सकता है, कि वे अच्छी अङ्गरेज़ी शिक्षा प्राप्त कर बड़े-बड़े सरकारी पदाधिकारियों को वरण कर सकें। इसके अतिरिक्त और कोई आशय इसके अन्तर्गत नहीं दीख पड़ता"। आपकी इस प्रकार कल्पना करना, मेरी समझ में शिक्षा का बेरहमी के साथ गला घोटना है। ज़रा विचार कीजिए कि प्रति वर्ष अङ्गरेज़ी शिक्षा-प्राप्त कितनी लड़कियों की शादी सरकारी पदाधिकारियों से होती है? ऐसे विवाह शायद उँगलियों ही पर गिने जा सकेंगे। अधिकांश ऐसे विवाह बराबरी में ही होते हैं। इसके सिवा अङ्गरेज़ी शिक्षा देने वाले माँ-बाप के तथा शिक्षा पाने वाली लड़कियों के मन की बात का भी कुछ पता आपको लगा लेना चाहिए था। मुझे जहाँ तक ज्ञात है, प्रायः सभी की यह धारणा है कि अङ्गरेज़ी शिक्षा प्राप्त करके वह (लड़कियाँ) स्वयं उच्च पदाधिकारी बन सकें। समाज-सेवा कर सकें, जिससे देश का कल्याण हो। कहने की ज़रूरत नहीं, कि देश में कितनी ऐसी अङ्गरेज़ी शिक्षित महिलाएँ हैं, जिन्होंने बड़े-बड़े पदाधिकारियों से विवाह किए हैं? सोचने की बात है कि आजकल श्रीमती सरोजिनी नायडू के समान अनेक अङ्गरेज़ी शिक्षित स्त्रियों ने स्त्री-समाज को कितना जाग्रत कर दिया है। देश के प्राङ्गण में इन महिलाओं ने कैसी हलचल मचा दी है। यदि आपके वेद-वाक्य में कुछ भी सत्यता होती तो इनमें से अधिकांश आज के दिन बड़े-बड़े लाट साहबों के महलों में सुख की नींद सो रही होतीं।

दूसरी आश्चर्य की बात यह है, कि आप अङ्गरेज़ी स्कूलों के व्यय से भी घबड़ाते हैं। वर्तमान स्थिति में उच्च शिक्षा के लिए व्यय करना ही पड़ेगा। यह बात दूसरी है कि आप लोग कुछ नई व्यवस्था करें, जिससे भविष्य में व्यय कम पड़ने लगे। यह आपका अपनी पुत्रियों के प्रति अन्याय होगा, यदि आप अधिक व्यय का बहाना करके उन्हें प्राइमरी शिक्षा से आगे न बढ़ने दें। जिनमें प्रतिभा है, जिनकी इच्छा उच्च शिक्षा प्राप्त करने की है और जिनके पास ईश्वर की कृपा से धन भी है, उन्हें अवश्य अवसर देना चाहिए। यह बात अब स्वयं-सिद्ध है कि यदि अवसर दिया जाय तो स्त्रियाँ क्या नहीं कर सकतीं। यह भी बात बिलकुल साफ़ है कि वही लड़कियाँ उच्च शिक्षा प्राप्त करने का हौसला करती हैं, जिनके यहाँ पर्याप्त धन होता है। मेरा मतलब यह नहीं, कि प्राइमरी स्कूल न खोले जावें। ऐसे स्कूलों की भी बड़ी ज़रूरत है। क्योंकि सबकी माली हालत एक सी नहीं होती। ऐसी लड़कियों की शिक्षा के लिए उन्हें प्राइमरी कक्षा तक ही पढ़ा कर सन्तोष करना होगा। हाँ, इतनी प्रार्थना ज़रूर है कि आप फावड़ा लेकर इन उच्च शिक्षा देने वाले इने-गिने स्कूलों की बुनियाद न खोदें। इस समय स्त्री-समाज के हित के लिए तथा देश-हित के लिए ऐसी संस्थाओं की बड़ी आवश्यकता है। इन्हीं से पढ़ कर निकली हुई लड़कियाँ आज बड़े-बड़े काम कर रही हैं; जिसका प्रभाव भविष्य में पढ़ने वाली बालिकाओं पर अवश्य ही पड़ेगा।

आपकी विदुषी कक्षा को छोड़ कर लड़कियों ने अङ्गरेज़ी अपनाई, आपके प्रलोभन के चकमे में न आईं। क्यों? इसका कारण अङ्गरेज़ी शिक्षा के भूत के वशीभूत होना नहीं था, बल्कि आपकी अन्याय-प्रियता की मनोवृत्ति के प्रतिवाद-रूप ही उन्हें ऐसा करना पड़ा। क्या वह नहीं समझ सकतीं कि आप लोग तो अङ्गरेज़ी शिक्षा प्राप्त कर बड़े पदों की शोभा बढ़ावें और वह केवल हिन्दी पढ़ा कर समझा दी जावें, कि बस अब तुम्हारे कार्यक्षेत्र का अन्त है, आगे पढ़ने की ज़रूरत नहीं है! महाशय, अब वह दिन लद गए, जब बच्चों की तरह स्त्रियों से भी हौआ कह कर उन्हें डरा दिया जाता था!! अब स्त्री पुरुष के समान अधिकार प्राप्त करना चाहती है और वास्तव में वह प्रत्येक कार्यक्षेत्र में अपनी पूर्ण योग्यता का परिचय दे रही है।

आपकी तीसरी धारणा भी कुछ ठीक नहीं जँचती। मेरा यही अनुरोध है कि ध्यानपूर्वक देखिए, कितनी अङ्गरेज़ी शिक्षित महिलाएँ अपनी मातृ-भाषा के महत्व को भूल गई हैं और पैतृक विचारों को तिलाञ्जलि दे दी है? केवल अनुमान से कहना कि अङ्गरेज़ी शिक्षा से यह हो जावेगा, वह हो जावेगा और प्रत्यक्ष की बात न देखना, मेरी समझ में बड़ी भूल करना है। माता की गोद से लेकर बड़े होने पर्यन्त तक पुत्रियों के हृदय पर मातृ-भाषा का ही संस्कार बराबर पड़ता रहता है। बड़े अङ्गरेज़ी शिक्षित ख़ानदानों में भी घरेलू बोल-चाल में मातृ-भाषा का ही उपयोग होता है। फिर यह कैसे सम्भव है कि दस-पाँच बरस की अङ्गरेज़ी शिक्षा उस संस्कार को समूल नष्ट कर दे। मेरा मत तो यह है कि अङ्गरेज़ी शिक्षित पुत्रियाँ अङ्गरेज़ी भाषा के दोष-गुण समझ कर अपनी मातृ-भाषा ही के गुणों पर मुग्ध होंगी और अपनी भाषा की त्रुटियों को दूर करने की योग्यता प्राप्त करेंगी।

रही स्वधर्म और पैतृक विचारों की बात, इसके बारे में मैं केवल इतना ही कहना चाहती हूँ, कि यदि आपका अभिप्राय यह है कि हम लोगों की तरह हमारी लड़कियाँ भी धार्मिक ढकोसलों की तथा पुरानी रूढ़ियों की ग़ुलाम बनी रहें, बुद्धि को कुण्ठित बनाए रक्खें, तो ऐसे स्वधर्म तथा पैतृक विचारों को दूर ही से प्रणाम है। कहने की ज़रूरत नहीं कि इन धर्म-भगवान तथा पैतृक विचारों के नाम से क्या-क्या अत्याचार नहीं होते हैं!!! इन्हीं की बदौलत आज हिन्दू-समाज जर्जरीभूत हुआ जा रहा है!! ऐसी दशा में यह बिलकुल उचित है, यदि शिक्षित स्त्रियाँ इन पोच विचारों को छोड़, सत्य-धर्म तथा बुद्धि-सङ्गत पैतृक विचारों को अपना रही हैं। यह अवगुण नहीं है। यह सराहनीय गुण है—घोर विरोध के सामने अटल साहस है, अन्धपरम्परा को एक ज़बरदस्त फटकार है!! इसमें सन्देह नहीं कि आजकल अङ्गरेज़ी पढ़ी स्त्रियाँ बहुत-कुछ इन रोगों से बची हुई हैं। शायद इसी कारण से यह लोग किसी का कुछ भी न बिगाड़ते हुए, अन्ध-विश्वासियों की अप्रसन्नता की पात्र हैं। इनके पीछे बेचारी अङ्गरेज़ी शिक्षा की भी छीछालेदर की जाती है!!!

चौथी भूल आपकी यह है कि आप सोचते हैं कि सौ वर्षों में मनुष्यों द्वारा जो हानि नहीं हुई है, वह स्त्रियों द्वारा थोड़े समय में हो जावेगी, और वह भी अङ्गरेज़ स्त्रियों के अवगुण ग्रहण करके! बस क्षमा कीजिए; ऐसी कल्पनाओं से जी छक गया! आजकल शिक्षित स्त्री-समाज पर यह भी एक मिथ्या दोषारोपण किया जाता है और अकारण ही लोगों की आँख में खटकता है!! साथ ही यह कहना सर्वथा अनुचित है कि शिक्षित स्त्रियाँ अपने हाथ से पानी तक उठा कर पीना नहीं चाहतीं। वास्तव में यह बात ऐसी नहीं है। अपनी परिस्थिति तथा अवकाश के अनुसार वह लोग अपनी गृहस्थी के सभी छोटे-बड़े काम करती हैं। इस गुण में वह एक अङ्गरेज़ महिला से एक क़दम भी पीछे नहीं हैं। यह बात दूसरी है कि किसी विशेष कारणवश वह कोई मामूली काम न कर सकती हों, तो उसके लिए यदि वह धनवान हैं तो दूसरा प्रबन्ध रहता है। हाँ, यह बात ज़रूर है कि यह लोग सब कुछ करते हुए आगे बढ़ रही हैं। मनुष्यों के समान जीवन के कार्यक्षेत्र के प्रत्येक विभाग में क़दम बढ़ा रही हैं, 'ताड़ना की अधिकारी' नहीं बनना चाहतीं; इसीलिए बड़ी अपराधिनी हैं!! इस प्रकार तो पढ़ी स्त्रियाँ उन्नति-पथ पर अग्रसर हो रही हैं, और इसे यदि पतन कहा जाय, तो सोलह आने अन्धेर है! यदि इससे यह निष्कर्ष निकाला जाय कि अङ्गरेज़ी पढ़ी स्त्रियाँ बड़ी हानि कर रही हैं या अगले सौ वर्षों में कर डालेंगी, तो ऐसी धारणा कोरी कल्पना नहीं तो और क्या है?

इसी सिलसिले में यह कहना, कि अङ्गरेज़ी पढ़ने से यहाँ की स्त्रियाँ अङ्गरेज़ महिलाओं के अवगुण ही सीखेंगी, क्योंकि यह मनुष्य-स्वभाव का नियम है। धन्य है इस नियम को!! इसी नियम के बाद मनोविज्ञान का भी दिवाला पिट जाता है!! इस नियम का समर्थन न करते हुए यदि यह कहा जाय कि वह गुण ही शीघ्र ग्रहण करेंगी तो उचित होगा। प्रत्यक्ष में भी यही देखने में आता है। शायद ही कुछ ऐसी स्त्रियाँ हों, जो अङ्गरेज़ी सभ्यता के रङ्ग में बिलकुल डूब गई हों। कुछ ईसाई स्त्रियों को छोड़, प्रायः सभी अङ्गरेज़ी शिक्षित स्त्रियों का रहन-सहन, वेष-भूषा सब हिन्दोस्तानी ही रहती है। 'साड़ी' के सामने 'साया' नहीं डट रहा है। साथ ही में यह कहना कि "उनमें अपव्यय बढ़ जावेगा, उनसे लक्ष्मी दूर भागने लगेंगी" शङ्का मात्र ही है। सफ़ाई से रहना, साफ़-सुथरे वस्त्र धारण करना, गहनों के लिए अपने पतियों की खोपड़ी न चाटना—ऐसे गुण उनमें अवश्य उत्पन्न हो जाते हैं। इनको यदि अवगुण समझा जावे तो फिर क्या ठिकाना है!! ऐसा भी कभी देखने में नहीं आता कि शिक्षित स्त्रियाँ रुपए की क़द्र न जानती हों। वह उसे उत्तम ढङ्ग से ख़र्च करती हैं। यदि किसी एक को फ़िज़ूलख़र्ची की लत हो, तो यह शिक्षा का प्रभाव नहीं है, बल्कि किसी और कारणवश मानसिक कुसंस्कार है। जितने अच्छे ढङ्ग से वह अपना घर सम्हाल सकती हैं, वह प्रशंसनीय है। जब वह अङ्गरेज़ी रङ्ग-ढङ्ग को नहीं अपना रही हैं, तो फ़िज़ूलख़र्ची से कोसों से दूर रहेंगी। ऐसी दशा में लक्ष्मी सदा ही उनकी सेवा में रहेंगी। वह स्वयं इस योग्य हो जावेंगी कि इतना धन उत्पन्न कर सकें, जिससे चार अन्य व्यक्तियों का पालन भी हो सकेगा।

आप परीक्षा-विवाह (ट्रायल मैरेज) तथा तलाक़ (डाइवोर्स) को भी हौआ समझ कर अवगुण ही बतलाते हैं। इस विषय में मेरा यही नम्र निवेदन है कि

यदि पक्षपात-रहित दृष्टि से देखिए तो विदित हो जावेगा कि यह प्रथाएँ स्वयं बुरी नहीं हैं। केवल आपके लिखने के ढङ्ग से भयानक जान पड़ती हैं। "पति की खोज में चाहे उसे अनेकों पति ही क्यों न करने पड़ें" इस प्रकार लिखना कितनी भद्दी बात है! आपको मालूम रहना चाहिए कि यह बात हिन्दू-महिला के आदर्श के सर्वथा प्रतिकूल है; और न वह इस प्रथा को इस बुरे ढङ्ग से अपनाया ही चाहती है। यह उसके हृदय की अन्तर्ध्वनि नहीं है और न हो सकती है। वह मनुष्य-समाज से न्याय चाहती है—उसकी इच्छा है कि उसे आँख मूँद कर अयोग्य वर के सुपुर्द न किया जावे। इतना अवसर उसे अवश्य मिले कि वह अपने भावी भाग्य-विधाता का आवश्यक परिचय ज़रूर जान ले। उसे देख भी ले और अपनी अनुमति दे सके। यह बातें बिना 'अनेकों पति करते हुए' सरलतापूर्वक हो सकती हैं। ऐसी अवस्था में अङ्गरेज़ी परीक्षा-विवाह की विधि की कोई ज़रूरत ही न पड़ेगी। आजकल शिक्षित स्त्रियाँ अङ्गरेज़ी प्रथा से घृणा करती हैं और अपनी इस सरल प्रथा को, जो पुरानी 'स्वयम्बर' की प्रथा से मिलती-जुलती है, पसन्द करती हैं। इस प्रकार जब पति-पत्नी में कोई अनबन की गुञ्जाइश न रहेगी तो तलाक़ का प्रश्न ही न उत्पन्न होगा। इसलिए पाश्चात्य देशों का रोग यहाँ न उत्पन्न हो सकेगा। इसके विपरीत यदि मनुष्य बुद्धि से काम न लेंगे, उपरोक्त सरल सुविधा न देंगे और तलाक़ से भी आना-कानी करेंगे, अपनी हठधर्मी पर आरूढ़ रहेंगे, तो स्त्री-समाज की दशा अवश्य ही बुरी होती चली जावेगी !!!

आपकी यह पाँचवीं भूल है कि आप कहते हैं कि अङ्गरेज़ी शिक्षा देने का आशय यह है कि हमारी लड़कियाँ अङ्गरेज़ तथा अङ्गरेज़ महिलाओं से बात कर सकें; ऐसा नहीं है। प्रत्येक शिक्षा का आशय मानसिक, चारित्रिक तथा शारीरिक उन्नति करना होता है। साथ ही में इस शिक्षा से दूसरा आशय यह भी है कि वह न केवल बातचीत ही कर सकें, बल्कि उनकी बराबरी का भी दावा कर सकें और अपने को एक तुच्छ दास समझना छोड़ दें।

यह भी स्मरण रहना चाहिए कि जब तक हिन्दी-शिक्षा के लिए पूरे साधन पर्याप्त नहीं हैं, तब तक अङ्गरेज़ी ही से काम लेना पड़ेगा। आज के दिन वर्तमान युग की सभी आवश्यक बातें अङ्गरेज़ी भाषा ही में हैं; इसलिए जब तक हमारा भाषा-भण्डार पूर्ण न हो जावे, हम अङ्गरेज़ी भाषा का पूर्ण तिरस्कार नहीं कर सकती हैं। मेरा मतलब यह नहीं है, कि अङ्गरेज़ी के सामने हम अपनी प्यारी हिन्दी को भुला देवेंगी, वरन् हमें उसकी उत्तरोत्तर उन्नति करना है। हमें आशा है कि यह काम हम अङ्गरेज़ी पढ़ते हुए भी अच्छी तरह कर सकेंगी। हमको वह स्वप्न भी प्रत्यक्ष देखने की लालसा है, जबकि हमारी 'हिन्दी' राष्ट्र-भाषा के पद पर आसीन होगी। हाँ, इतनी प्रार्थना अवश्य है, कि जब तक स्त्रियों के लिए कोई समुचित हिन्दी-शिक्षा-प्रबन्ध नहीं है, जो अङ्गरेज़ी शिक्षा के टक्कर का हो, तब तक इस थोड़ी सी अङ्गरेज़ी शिक्षा ही से स्त्री-समाज का कल्याण होने दीजिए। एक तो यों ही स्त्रियाँ समाज-रूढ़ियों की चक्की में पिसी जा रही हैं, ऊपर से उन पर आग उगली जावे, यह सर्वथा अन्याय है !!!

* * *

क्षत्राणी का साहस

[श्री० कालिकाप्रसाद जी चतुर्वेदी]

मेरे एक गुजराती मित्र उस दिन अपनी एक आँखों-देखी घटना का इस प्रकार वर्णन कर रहे थे :—

"बात काठियावाड़ की है—मैं रेल में सफ़र कर रहा था। डब्बे में हम लोग ६-७ बनिए एक ओर बैठे थे और ६-७ मुसलमान दूसरी ओर। वे मुसलमान असभ्य, बदमाश और गुण्डे मालूम देते थे। कुछ देर बाद एक स्टेशन पर एक युवती भी उसी डब्बे में सवार हो गई। वह बड़े शील से अपने को भली-भाँति पर्दे में ढके एक बेञ्च पर चुपचाप बैठ गई। स्त्री के साथ में एक नौजवान लड़का था, जिसके सर पर रङ्गीन साफ़ा और कमर में झूलने वाली तलवार उन लोगों के क्षत्री होने का परिचय दे रही थी। लड़का राजपूत होने पर भी सफ़र में कच्चा मालूम देता था, और इतने नए-नए आदमियों के बीच में सङ्कुचित और भयभीत-सा दिखाई पड़ता था। क्योंकि

फ़रियादे "बिस्मिल"

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

ये माना मुझको कर दोगे नज़रबन्द,
नज़र तो हो नहीं सकती मगर बन्द!
न देखी जायगी मेरी तरक़्क़ी,
करेंगे अब तरक़्क़ी का वह दर बन्द!
नज़र वाले नज़र करते नहीं क्यों,
हुए हैं हज़रते "बिस्मिल" नज़रबन्द!

* * *

कोई "जापान" कोई "रूस" के साथ,
और मैं आपके जुलूस के साथ!

* * *

अपने मतलब को सब यह घातें हैं,
एक मुँह है हज़ार बातें हैं!

* * *

उनसे कल इस बात पर थी बहस गर्म,
मज़हबी झगड़ों को ठण्डा कीजिए!

* * *

नहीं होने की तय मञ्ज़िल हमारी,
अलग सब से अगर है लय हमारी!

उन बदमाश गुण्डों ने जब अपने जमाव के बीच में एक असहाय अबला को पाकर उसे लक्ष्य करके आपस में फ़ोश मज़ाक़ और कहनी-अनकहनी बातें शुरू कर दी थीं—तब भी लड़के को चुप ही बैठना पड़ा था। हम लोग भी यद्यपि ६-७ थे और युवती का इस प्रकार छेड़ा जाना नापसन्द कर रहे थे, फिर भी जाति के बनिए थे और मुफ़्त में झगड़ा मोल लेकर अपनी जान-जोखिम करना बुद्धिमानी के विरुद्ध समझ चुपचाप बैठ रहे थे। बेचारी युवती अपनी इस अवस्था को देख कर और इस प्रकार अपमानित हुआ पाकर सचमुच ख़ून के घूँट पीती रही होगी, यह थोड़ी देर बाद प्रत्यक्ष हो गया था।

"केवल ज़बानी असभ्यता के आगे भी वे दुष्ट बढ़ने लगे और रमणी के लटकते हुए डुपट्टे की गाँठ उन्होंने अपने बीच में बैठे एक अधिक मोटे बदमाश की गाँठ से चुपचाप बाँध दी और पहिले से भी अधिक प्रसन्न होकर ही-ही करने लगे।

"युवती का सफ़र लम्बा न था, वे अगले स्टेशन पर उतरने लगे। लड़का तो अपनी एक छोटी सी पोटली बग़ल में दबाए खिड़की के नीचे प्लेटफ़ार्म पर आ चुका था और स्त्री के उतरने का रास्ता देख रहा था। युवती ने भी उठ के खिड़की की ओर क़दम बढ़ाया, पर वह तुरन्त ही सहम के खड़ी हो गई। यह क्या? एक असूर्यम्पश्या कुल-बधू की लाज रखने वाला उसका डुपट्टा उसके ऊपर से खसकने लगा। "क्या बात है?" उसने घूम कर बड़े आश्चर्य और शर्म से देखना चाहा।

"किन्तु उधर क्या था? एक हिन्दू कुल-ललना की गाँठ एक बदमाश मुसलमान से जुड़ रही थी। अपना यह अपमान देख कर अबला की भी आँखें जलने लगीं—आख़िर वह क्षत्राणी थी; उधर वे बदमाश ख़ूब ठहाका मार कर हँसने लगे। एक ओर हम लोग मर्द-नामधारी उदासीन भाव से यह सब तमाशा देख रहे थे।

"उस समय तक उन बदमाशों ने उसकी आँखों की चिनगारियों को नहीं देख पाया और एक गुण्डे ने मुस्करा कर कहा—अब कहाँ जाओगी, अब तो यहीं बैठो।

"नीचे से लड़के ने अधीर होकर कहा—अरे जल्दी उतरो, गाड़ी छूट रही है।

"मैं उतरूँ कैसे? पहिले ऊपर आकर इन लोगों से मेरा निपटेरा तो कर दो।"—युवती ने तुनक कर कहा।

इन थोड़े से शब्दों में अपमान के प्रति कैसी दाह थी? कैसा उलाहना था? कैसी उत्तेजना थी? किन्तु यह गँवार क्षत्री कुछ भी न समझा—उसमें अभिमन्यु की बुद्धि न थी, उसमें अभय-निर्भय या गोरा बादल के अंश न थे!

"फिर भी क्षत्राणी तो क्षत्राणी थी; उसने खीज कर एक बार अपने संरक्षक को देखा, फिर पीछे दृष्टि दौड़ाई। उसका डुपट्टा उसी हालत में था और वे बदमाश उसी भाँति खिलखिला रहे थे।

"गाड़ी ने चलने के लिए सीटी दी और रमणी ने बिजली की तरह तड़प कर सामने खड़े लड़के की कमर की तलवार खींच ली और पलक मारते-मारते में एक! दो! तीन! बदमाशों के अभी-अभी खिलखिलाने वाले सर इधर-उधर लोट कर ख़ून से खेलने लगे! सारा हँसी-मज़ाक़ बन्द हो गया, बचे हुए बदमाश सब कुछ भूल कर अपनी जान बचाने की फ़िक्र में इधर-उधर दौड़ने लगे। किन्तु रमणी के सामने कोई नहीं था। यद्यपि वह अब भी आँखों से आग बरसाती नङ्गी तलवार हाथ में लिए हँसी खेलने के लिए तैयार खड़ी थी। हम कायरों के भी बदन में इस दृश्य ने ख़ून दौड़ा दिया, हम लोग वाह-वाह करने लगे—किन्तु वह बालक अब भी भौचक्का सा जहाँ का तहाँ खड़ा था।

"गाड़ी जहाँ की तहाँ रुक गई, स्टेशन पर तहलक़ा मच गया। सब मुसाफ़िर वीराङ्गना के दर्शन करने को इकट्ठे हो गए। स्टेशन-स्टाफ़ अपनी कारगुज़ारी दिखाने लगा और पुलिस घटना की जाँच-पड़ताल करने में मशग़ूल हो गई।

"बचे हुए गुण्डे अब भी भय से काँप रहे थे। इतने आदमियों के इकट्ठे हो जाने पर उनमें कुछ साहस का सञ्चार हुआ और वे काँपते हुए युवती के चरणों में लोट गए। उन्होंने अपना क़सूर स्वीकार कर लिया। हम सब लोगों ने आगे बढ़-बढ़ कर गवाहियाँ दीं और युवती न्यायाधीश द्वारा पुरस्कृत की गई।"

* * *

कमला के पत्र

यह पुस्तक 'कमला' नामक एक शिक्षित मद्रासी महिला के द्वारा अपने पति के पास लिखे हुए पत्रों का हिन्दी-अनुवाद है। इन गम्भीर, विद्वत्तापूर्ण एवं अमूल्य पत्रों का मराठी, बँगला तथा कई अन्य भारतीय भाषाओं में बहुत पहले अनुवाद हो चुका है। पर आज तक हिन्दी-संसार को इन पत्रों के पढ़ने का सुअवसर नहीं मिला था।

इन पत्रों में कुछ को छोड़, प्रायः सभी पत्र सामाजिक प्रथाओं एवं साधारण घरेलू चर्चाओं से परिपूर्ण हैं। उन पर साधारण चर्चाओं में भी जिस मार्मिक ढङ्ग से रमणी-हृदय का अनन्त प्रणय, उसकी विश्व-व्यापी महानता, उसका उज्ज्वल पति-भाव और प्रणय-पथ में उसकी अक्षय साधना की पुनीत प्रतिमा चित्रित की गई है, उसे पढ़ते ही आँखें भर जाती हैं और हृदय-वीणा के अत्यन्त कोमल तार एक अनियन्त्रित गति से बज उठते हैं। अनुवाद बहुत सुन्दर किया गया है। मूल्य केवल ३) स्थायी ग्राहकों के लिए २।) मात्र !

घरेलू चिकित्सा

'चाँद' के प्रत्येक अङ्क में बड़े-बड़े नामी डॉक्टरों, वैद्यों और अनुभवी बड़े-बूढ़ों द्वारा लिखे गए हज़ारों अनमोल नुस्ख़े प्रकाशित हुए हैं, जिनसे सर्व-साधारण का बहुत-कुछ मङ्गल हुआ है, और जनता ने इन नुस्ख़ों की सचाई तथा उनके प्रयोग से होने वाले लाभ की मुक्त-कण्ठ से प्रशंसा की है। सब से बड़ी बात इन नुस्ख़ों में यह है कि पैसे-पाई अथवा घर के मसालों द्वारा बड़ी आसानी से तैयार होकर अजीब गुण दिखलाते हैं। इनके द्वारा आए-दिन डॉक्टरों की भेंट किए जाने वाले सैकड़ों रुपए बचाए जा सकते हैं। इस महत्वपूर्ण पुस्तक की एक प्रति प्रत्येक सद्गृहस्थ को अपने यहाँ रखनी चाहिए। स्त्रियों के लिए तो यह पुस्तक बहुत ही काम की वस्तु है। एक बार इसका अवलोकन अवश्य कीजिए। छपाई-सफ़ाई अत्युत्तम और सुन्दर। मोटे चिकने काग़ज़ पर छपी हुई पुस्तक का मूल्य लागतमात्र केवल ॥।) रक्खा गया है। स्थायी ग्राहकों से ॥-) मात्र !

शैलकुमारी

यह उपन्यास अपनी मौलिकता, मनोरञ्जकता, शिक्षा, उत्तम लेखन-शैली तथा भाषा की सरलता और लालित्य के कारण हिन्दी-संसार में विशेष स्थान प्राप्त कर चुका है। इस उपन्यास में यह दिखाया गया है कि आजकल एम० ए०, बी० ए० और एफ़० ए० की डिग्री-प्राप्त स्त्रियाँ किस प्रकार अपनी विद्या के अभिमान में अपने योग्य पति तक का अनादर कर उनसे निन्दनीय व्यवहार करती हैं, और किस प्रकार उन्हें घरेलू काम-काज से घृणा हो जाती है ! मूल्य केवल २) स्थायी ग्राहकों से १।।)

उपयोगी चिकित्सा

इस महत्वपूर्ण पुस्तक की एक प्रति प्रत्येक सद्गृहस्थ के यहाँ होनी चाहिए। इसको एक बार आद्योपान्त पढ़ लेने से फिर आपको डॉक्टरों और वैद्यों की ख़ुशामदें न करनी पड़ेंगी—आपके घर के पास तक बीमारियाँ न फटक सकेंगी। इसमें रोगों की उत्पत्ति का कारण, उसकी पूरी व्याख्या, उनसे बचने के उपाय तथा इलाज दिए गए हैं। रोगी की परिचर्या किस प्रकार करनी चाहिए, इसकी भी पूरी व्याख्या आपको मिलेगी। इसे एक बार पढ़ते ही आपकी ये सारी मुसीबतें दूर हो जायँगी। मूल्य केवल १।।)

पुनर्जीवन

यह रूस के महान् पुरुष काउण्ट लियो टॉल्सटॉय की अन्तिम कृति का हिन्दी-अनुवाद है। यह उन्हें सब से अधिक प्रिय थी। इसमें दिखाया गया है कि किस प्रकार कामान्ध पुरुष अपनी अल्पकाल की लिप्सा-शान्ति के लिए एक निर्दोष बालिका का जीवन नष्ट कर देता है; किस प्रकार पाप का उदय होने पर वह अपने आश्रयदाता के घर से निकाली जाकर अन्य अनेक लुब्ध पुरुषों की वासना-तृप्ति का साधन बनती है, और किस प्रकार अन्त में वह वेश्या-वृत्ति ग्रहण कर लेती है। फिर उसके ऊपर हत्या का झूठा अभियोग चलाया जाना, संयोगवश उसके प्रथम भ्रष्टकर्ता का भी जूरों में सम्मिलित होना, और उसका निश्चय करना कि चूँकि उसकी इस पतित दशा का एक मात्र वही उत्तरदायी है, इसलिए उसे उसका घोर प्रायश्चित्त भी करना चाहिए—ये सब दृश्य एक-एक करके मनोहारी रूप से सामने आते हैं। पढ़िए और अनुकम्पा के दो-चार आँसू बहाइए। मूल्य ४) स्थायी ग्राहकों से ३।।)

उमासुन्दरी

इस पुस्तक में पुरुष-समाज की विषय-वासना, अन्याय तथा भारतीय रमणियों के स्वार्थ-त्याग और पतिव्रत का ऐसा सुन्दर और मनोहर वर्णन किया गया है कि पढ़ते ही बनता है। सुन्दरी सुशीला का अपने पति सतीश पर अगाध प्रेम एवं विश्वास, उसके विपरीत सतीश बाबू का उमासुन्दरी नामक युवती पर मुग्ध हो जाना, उमासुन्दरी का अनुचित सम्बन्ध होते हुए भी सतीश को कुमार्ग से बचाना और उपदेश देकर उसे सन्मार्ग पर लाना आदि सुन्दर और शिक्षाप्रद घटनाओं को पढ़ कर हृदय उमड़ पड़ता है। इतना ही नहीं, इसमें हिन्दू-समाज की स्वार्थपरता, बर्बरता, काम-लोलुपता, विषय-वासना तथा रूढ़ियों से भरी अनेक कुरीतियों का हृदय-विदारक वर्णन किया गया है। पुस्तक समाज-सुधार के लिए पथ-प्रदर्शक है। छपाई-सफ़ाई सब सुन्दर है। मूल्य केवल ॥।) आने स्थायी ग्राहकों के लिए ॥-); पुस्तक दूसरी बार छप कर तैयार है।

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

एक मनोरञ्जक कहानी

एक समय किसी विद्वान और धनिक ब्राह्मण ने इस बात की घोषणा की, कि यदि कोई मुझे शास्त्रार्थ में हरा देगा तो उसे मैं अपना सारा धन दे दूँगा। उसकी स्त्री को यह बात जान कर बड़ी चिन्ता हुई। वह अपने पति से बोली—"प्रिय, तुमने यह क्या किया? मान लो, यदि तुमसे भी कोई विद्वान पण्डित तुम्हें शास्त्रार्थ में हरा दे, तो हमारी क्या गति होगी? तब तो हमें इस वृद्धावस्था में भीख माँगनी पड़ेगी!"

ब्राह्मण ने उत्तर दिया—"प्रिये, तुम व्यर्थ ही चिन्ता करती हो। क्या तुम्हें यह विश्वास है कि मैं अपनी हार कभी मानूँगा?" स्त्री की चिन्ता मिट गई।

मान लीजिए, कि वह ब्राह्मण की स्त्री मूर्खतावश सबों से यह भेद खोल दे कि हमारे पति कभी हार मानने वाले ही नहीं हैं, तो क्या उसका पति क्रुद्ध न होगा?

मि० चर्चिल, जिन्होंने कभी बेतमीज़ी नहीं की है, 'डेली हेरल्ड' के कथनानुसार, आज बेतमीज़ी कर बैठे हैं! उन्होंने इसी बात का भण्डाफोड़ कर दिया है, कि "ब्रिटिश सरकार भारत के प्रति जो कुछ भी प्रतिज्ञा करे, वह उसे औपनिवेशिक स्वराज्य, अथवा इसी प्रकार की और कोई चीज़ देने के लिए तैयार नहीं है।" उन्होंने भारतीयों को भी 'मृगतृष्णा' से बचने का आदेश दिया है। मि० चर्चिल को कितना ही दोष क्यों न दिया जाय, उन्होंने बातें सच्ची कही हैं। हमारे देशवासियों को मि० रैमज़े मैकडॉनल्ड की चिकनी-चुपड़ी बातों की अपेक्षा, मि० चर्चिल की खरी बातों पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

मि० मैकडॉनल्ड को भी मि० चर्चिल ही का दूसरा संस्करण समझिए। वे चर्चिल की बातों का कितना ही प्रतिवाद क्यों न करें, स्वयं भी उसी राह पर चल रहे हैं! आपने भारतीय प्रतिनिधियों की प्रत्येक माँग को सुहला-सुहला कर हटा दिया, मुसलमानों के लिए अलग निर्वाचन-संस्था की सिफ़ारिश कर, एक झगड़ा खड़ा कर दिया, और बर्मा के विषय में भी इसी प्रकार लीपा-पोती कर अपनी कूटनीतिज्ञता का अच्छा परिचय दिया है। शास्त्री और जयकर जैसे चतुर राजनीतिज्ञ मुँह ताकते ही रह गए! मि० चर्चिल ने गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स को एक 'हवाई वस्तु' कह कर, मि० रैमज़े मैकडॉनल्ड की उन चालबाज़ियों का सारांश मात्र हमारे सामने रख दिया है।

ब्रिटेन का कहना है, कि यदि भारतीय स्वराज्य के योग्य हो जायँगे, तो वह ख़ुशी से अपना शासन भारत पर से हटा लेगा, किन्तु इस योग्यता का निर्णय कौन करेगा? ऊपर की कहानी में, ब्राह्मण जिस प्रकार अपनी हार-जीत का निर्णय स्वयं करना चाहता है, ठीक उसी प्रकार ब्रिटिश सरकार भी भारतीयों की योग्यता का निर्णय अपने ही हाथों रखना चाहती है। तब यदि वह ब्राह्मण की स्त्री और मि० चर्चिल, उनके इस भेद को खोल ही दें, तो क्या दोष?

—'अमृत बाज़ार पत्रिका' (अङ्गरेज़ी)

* * *

दमन का दौर-दौरा

भारतवर्ष में पुलिस जो कुछ करे थोड़ा ही है। उससे आशा ही इसी बात की की जाती है! यहाँ की पुलिस को शिक्षा ही इस बात की दी जाती है। ठीक शब्दों में कहना हो तो उनके स्वभाव में जान-बूझ कर एक प्रकार की ज़हनियत—गुण्डा प्रकृति—पैदा की जाती है, जो भयङ्कर से भयङ्कर अपराधियों में पाई जाती है! यही कारण है कि पुलिस के लोग आम-तौर पर भारी से भारी अपराध कर सकते हैं। चाहे अधिकारी पुलिस की योग्यता और कर्तव्यनिष्ठा के कितने गीत गाया करें, इस बात को तो मानना ही पड़ेगा, कि यहाँ की पुलिस अपनी अविनयशीलता, असभ्यता और नृशंसता के लिए जितनी बदनाम है, उतनी शायद ही किसी देश की होगी। सरकार को अपनी इसी पुलिस का घमण्ड है, और वह इसी की शक्ति से अपनी इस निरङ्कुशता का सिक्का भारतवासियों पर बिठलाना चाहती है। हम जानते हैं कि आज गुज-रात के इन किसानों की करुण-गाथा को सुनने वाला कोई नहीं। परन्तु वे शिकायत करना ही कब चाहते हैं? उन्हें अपनी अहिंसा, त्याग और बलिदान की शक्ति पर विश्वास है—श्रद्धा है। सरकार उन्हें कुचल देना चाहती है। जहाँ कहीं भी लोग इस आत्मत्याग के के लिए उद्यत होंगे, वहीं सरकार गुजरात के रोमाञ्चकारी दृश्य उपस्थित कर देगी। परन्तु आख़िर कभी तो हमें इस मार्ग से गुज़रना ही होगा। स्वतन्त्रता का आसन इस मार्ग के उस पार है। जितनी जल्दी हम इस मार्ग से गुज़र जायँ, उतनी जल्दी हम अपने उद्देश्य पर पहुँच सकेंगे। सरकार को समझ लेना चाहिए कि कुछ देर के लिए और वह भी कुछ लोगों को, डरा-धमका कर भले ही वह शान्त कर दे, सारी क़ौम को हमेशा के लिए डण्डे के ज़ोर से दबाए रखना उसके लिए असम्भव है।

गुजरात के वीर किसानों ने समझ लिया है, कि विदेशी शासन की यन्त्रणाएँ सहते हुए तिल-तिल करके मरने की अपेक्षा, एक बार ही समस्त आपत्तियों को झेल कर उस शासन का मुक़ाबला करना ज़्यादा बेहतर है। भारत की स्वतन्त्रता की नींव गुजरात के इन वीर किसानों के रक्त से रक्खी जा रही है। गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स के स्वाँगों की इस उज्ज्वल और दिव्य त्याग के सम्मुख क्या हस्ती है?

—'पञ्जाब केसरी' (हिन्दी)

* * *

विद्यार्थियों की मनोवृत्ति

सहयोगी 'सैनिक' के इसी सप्ताह के अङ्क में हमने पढ़ा कि आगरा के कुछ विद्यार्थी श्रीमती कमला नेहरू के पास शायद उन्हें बुलाने के लिए गए थे। श्रीमती कमला नेहरू ने उन विद्यार्थियों को फटकार बताई। हमें पूरा विवरण नहीं मालूम है, परन्तु यह तो हमारा दृढ़ विश्वास है कि भारतीय विद्यार्थी निरे बातूनी हैं। वे किसी अर्थ के नहीं, वे कुछ भी कर नहीं सकते। देश ने पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त करने का निश्चय नौजवानों के बल पर किया था। नौजवानों ने एक वर्ष पूर्व ऐसा शोरोग़ुल मचा रक्खा था, कि मालूम होता था कि मानो वे आसमान को सर पर उठा लेंगे। ऐसी-ऐसी प्रतिज्ञाएँ की गईं, ऐसी-ऐसी क़समें खाई गईं कि मालूम होता था कि भारत का काया-पलट हो गया। लोग बोलते थे, तो ऐसा मालूम होता था कि गरजते हैं। एक-एक शब्द में आग बरसती थी। ऐसा मालूम होने लगा था कि विद्यार्थी, भारतीय स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ने वाले युवक, देश के बूढ़े अनुभवी सेवकों से बाज़ी मार ले जायँगे। २६ जनवरी का दिन था। आज़ादी की लड़ाई की तैयारी करने का बिगुल उसी दिन बजाया गया था। झण्डे उस दिन ख़ूब फहराए गए। गाने की ध्वनि में अजब माद-कता का अनुभव हुआ। विद्यार्थी उस दिन सभाओं में झुण्ड के झुण्ड बना कर आए थे। परन्तु उस दिन दीपक तेज़ होकर बुझने ही वाला था। उस दिन बातों का युग समाप्त हो गया। काम करने का समय आ गया। और काम करने से घबड़ाने वाले विद्यार्थी पीछे हट गए। फिर इनका पता न चला। 'इन्क़िलाब ज़िन्दाबाद' की ध्वनि करने वाले इन्क़िलाब के आरम्भ होते ही लापता हो गए। उनके हृदयों में डर था, उनमें साहस नहीं था। वे किसी भी प्रकार का बलिदान करने के लिए तैयार नहीं थे। उनमें चरित्र ही न था, वे कहते कुछ थे, और करते कुछ। वे देश-भक्ति का अभिनय कर रहे थे। उनके हृदय में आग नहीं लगी थी। ग़रीबों की आह ने, कष्ट से व्याकुल, अत्याचार-पीड़ितों के करुण-क्रन्दन ने उनके हृदय पर कुछ भी असर न किया था। वे पीछे हट गए। उनकी ओर देश आशा किए हुए देख रहा था, देश का शिर लज्जा से झुक गया। पीछे हटने वाले विद्यार्थी याद रक्खें, कि यदि वे अपना कर्तव्य भूल गए और काम सम्हालने के लिए तैयार नहीं हैं, तो उनके बिना आन्दोलन रुक न सकेगा, लड़ाई में कमज़ोरी न आवेगी। स्वतन्त्रता के महान यज्ञ का, दरिद्र-नारायण की इस पूजा का—असफल होना असम्भव है।

—'प्रताप' (हिन्दी)

* * *

फ़रियादे "बिस्मिल"

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

तङ्ग आकर उन्हीं के हो बैठे,
हम गुलामी में सबको रो बैठे!
वेद से वास्ता नहीं "बिस्मिल"
पढ़ के कॉलिज में दीन खो बैठे!

* * *

नतीजा जीने-मरने का मिला क्या,
न था दुनिया में कुछ, दुनिया में था क्या!
बजा करती है, दोनों हाथ ताली,
बनावट में मुहब्बत का मज़ा क्या!
तड़पते हैं ग़मे-उलफ़त में "बिस्मिल"
नहीं मालूम हमको हो गया क्या!

* * *

हम यह तर्क-क़ुसूर कर न सके,
दिल को दुनिया से दूर कर न सके।
सब से अकड़ा किए मगर "बिस्मिल"
मौत से कुछ ग़ुरूर कर न सके।

भविष्य

अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

एक दिन मैं घूमता घामता चण्डूख़ाने की ओर जा निकला। वहाँ का हाल सुनिए—चण्डूख़ाने में चार अफ़ीमी बैठे अफ़ीम घोल रहे थे। इनमें से दो हिन्दू थे, दो मुसलमान। अफ़ीम घोल कर चारों ने चुस्की लगाई और जब ज़रा सुरूर गठा तो बातें होने लगीं। उनमें से एक, जिनका नाम मियाँ ईदू था, यों बोले—अम्याँ सुनते हो, चीन से जङ्ग छिड़ने वाली है।

दूसरे मियाँ बकरीदी बोले—हाँ म्याँ, सुना तो हमने भी है, ख़ुदा करे यह ख़बर ग़लत निकले।

गज्जू नामक अफ़ीमी बोल उठा—जे तुमने क्या कही, ग़लत क्यों हो ?

बकरीदी—इसकी बड़ी भारी वजह है। अरे म्याँ अभी तुम लोगों को दुनिया की ख़बर तो है नहीं। कुछ पढ़े-लिखे हो तो ख़बर हो ! वही मसल है कि पढ़े न लिखे नाम मुहम्मद फ़ाज़िल। ख़ुदा बख़्शे अब्बा जान को जो हमें कुछ शुद-बुद पढ़ा गए। वही आज काम आ रहा है। वल्ला अगर इस वक़्त जैसी समझ उस वक़्त होती तो आज हम भी किसी इजलास पर डटे होते और बात-बात में डिगरी देते, किसी को जेलख़ाने भेजते किसी को काले पानी, किसी के बेत लगवाते और किसी को सीधे ख़ुदागञ्ज भेज देते।

मियाँ ईदू बोले—हमारे अब्बा जान सख़्त नामाक़ूल आदमी थे, जो हमें इल्म से क़तई महरूम रक्खा। मगर हाँ, इतनी नेकी ज़रूर कर गए कि चिनिया बेगम (अफ़ीम) से राहो-रस्म पैदा करा गए। सिर्फ़ इतनी ही बात पर हम उनके हक़ में दुआए ख़ैर किया करते हैं।

बकरीदी—अहा हा। वल्ला क्या प्यारा नाम है—चिनिया बेगम ! मैं तो इस नाम का आशिक़ हूँ, आशिक़ ! अल्लाह जानता है, कहीं इसकी रङ्गत भी सुफ़ैद होती तो दुनिया मर मिटती। वह तो बदक़िस्मती से रङ्गत स्याह हो गई, इससे ज़रा लोग बिचकते हैं।

गज्जू—हाँ, और जो कहीं ज़ायक़ा मीठा होता तो—

ईदू—ओहो ! तो फिर क्या कहना था। फिर तो कोई लड्डू, पेड़ा, बर्फ़ी, गुलाबजामन, बताशफ़ेनी को छूता तक नहीं। जब मीठे को तबीयत चलती, बस चिनिया बेगम ही याद आती।

बकरीदी—और क्या ? दोनों मज़े—मिठाई की मिठाई और सुरूर घाते में।

इतना सुनते ही शेष दोनों व्यक्ति चिल्ला उठे—वाह-वाह ! क्या बात कही है—'सुरूर घाते में !' भई कितना प्यारा कलमा है। जी चाहता है, कहने वाले का मुँह चूम लूँ।

गज्जू—घाते का लफ़्ज़ कुछ प्यारा होता ही है और ख़ासकर अफ़ीम के मामले में !

ईदू—ऐ है, यह भी बड़ी प्यारी बात कही। वाह उस्ताद। तुम भी छिपे रुस्तम निकले। क्या कही है—घाते का लफ़्ज़ अफ़ीम के मामले में और भी ज़्यादा प्यारा लगता है। वाह-वाह !

दूसरा हिन्दू मिट्ठू, जो अभी तक आँखें बन्द किए बैठा था, आँखें खोल कर बोला—भगवान जाने इस बख़्त चीन का क्या हाल होगा।

यह सुनते ही मियाँ ईदू बोले—वल्ला ख़ूब याद दिलाई ! (बकरीदी से) मियाँ वह चीन की जङ्ग का क्या ज़िक्र था ?

बकरीदी—हाँ कुछ था तो ज़रूर ! कुछ लड़ाई-भिड़ाई की बात थी।

गज्जू—तुम कह रहे थे कि चीन बड़ा अच्छा शहर है।

ईदू—अम्याँ यह नहीं, कुछ और बात थी। वल्ला—हाफ़िज़ा (स्मरण-शक्ति) इतना कमज़ोर हो गया है कि ख़ुदा की पनाह ! कल क्या खाया था, इसकी भी ख़बर किसी मरदूद ही को होगी।

बकरीदी—आप कल की बात कहते हैं। अम्याँ हमें तो इतना भी याद नहीं कि पार साल आज के दिन हम इस वक़्त क्या कर रहे थे।

गज्जू—यार, हमें अपने लड़कपन की बहुत सी बातें अब तक याद हैं। मगर आप एक महीने पहले की बात पूछें तो हर्गिज़ नहीं बता सकेंगे—हाँ, अगर साल दो साल बाद कोई पूछे तो शायद बता दें। बात जितनी ही पुरानी पड़ती जाती है उतनी ही याददास्त खुलती जाती है।

ईदू—वल्ला, यह हिसाब भी ख़ूब है। जितनी ही बात पुरानी पड़ती जाय उतनी ही याददास्त खुलती जाय।

बकरीदी—ख़ुदा की शान है। उसमें सब क़ुदरत है।

ईदू—बिल्कुल दुरुस्त है—उसमें सब क़ुदरत है।

गज्जू—उसकी क़ुदरत की बात पर मुझे एक बात याद आ गई—तीन-चार बरस की बात होगी। एक दिन हम अफ़ीम पीना भूल गए। अब मज़ा देखिए कि अफ़ीम पी नहीं, मगर सुरूर वैसा ही मौजूद ! गोया अभी अफ़ीम पी है।

बकरीदी—वाह-वाह। वाह रे तेरी क़ुदरत ! वल्ला अगर बेपिए सुरूर आने लगे तो सोने की दीवारें खड़ी हो जायँ !

गज्जू—सोने की ! हीरे की कहिए साहब। लाखों रुपए इस अफ़ीम के पीछे गँवा दिए। कुछ ठिकाना है ? अच्छा अब मज़ा देखिए कि हम ज्योंही बाहर जाने लगे तो हमारी घर वाली बोली—आज तुमने अफ़ीम नहीं पी—क्या बात है, क्या छोड़ दी ? ऐ है—बस इतना सुनना था कि सारा नशा हिरन हो गया—जम्हाइयाँ आने लगीं। जब जम्हाइयों की डाक लग गई, तब हमें याद आया कि अफ़ीम नहीं पी।

ईदू—मगर आपकी घर वाली भी बड़ी नामाक़ूल थी ऐन हत्थे पर टोक दिया। वल्ला, अगर मेरी घर वाली होती तो मुझसे जूता चल जाता। अफ़ीम के मामले में बन्दा किसी की रियायत नहीं करता।

बकरीदी—सही है, अफ़ीम के मामले में रियायत करना सख़्त नादानी है।

ईदू—अजी अफ़ीम तो दर किनार रही, एक बार हमारी चाय में चीनी कुछ कम हो गई। आप जानिए, हमें तो चाय में डबल चीनी पसन्द है। चाय पीने के बाद अगर लब न चटचटाने लगें और घण्टे भर तक मुँह मीठा न रहे तो ऐसी चीनी पर ख़ुदा की मार।

बकरीदी—अली की फिटकार !

ईदू—बस जनाब, इस चीनी के मामले में झगड़ा हो गया।

मिट्ठू पुनः पीनक से चौंक कर बोला—क्या कहा, चीनी ही के मामले में झगड़ा हो गया, आख़िर झगड़ा हुआ क्यों ? चीन बेचारे ने किसी का क्या बिगाड़ा है ?

ईदू—लाहौल विलाक़ूवत, वह चीन वाली बात फिर भी रह गई। अम्याँ बकरीदी, वह चीन वाला क़िस्सा तो पूरा कर दो !

बकरीदी—वल्ला ख़ूब याद दिलाया। मियाँ, हमने सुना है कि चीन में अफ़ीम के पहाड़ हैं।

ईदू—हमारी क़सम ? अरे मज़ाक़ करते हो। वल्ला अगर कहीं ऐसा हो तो बन्दा तो कल ही चीन का टिकट कटावे। वल्ला जहाँ अफ़ीम के पहाड़ होंगे वहाँ तो बिहिश्त ही समझना चाहिए।

बकरीदी—बिलकुल सही बात है। चीन में वाक़ई अफ़ीम के पहाड़ हैं। तभी तो लोग अफ़ीम को चिनिया बेगम कहते हैं—अफ़ीम चीन ही ने ईजाद की है।

गज्जू—हमने सुना है कि पहले जे जितने पहाड़ हैं सब अफ़ीम ही के थे—मगर फिर एक साधु की दुआ से पत्थर के हो गए। फिर चीन के पहाड़ क्यों अफ़ीम ही के बने रहे, जे बात समझ में नहीं आती।

बकरीदी—यह वाक़या मुझसे सुनो। जब फ़क़ीर की बददुआ से सब पहाड़ पत्थर के हो गए और चीन के पहाड़ भी पत्थर के हो गए तो चीन की रियाया में ग़दर फैल गया।

ईदू—वह तो ग़दर फैला ही चाहे। बिना अफ़ीम के अमन क़ायम ही नहीं रह सकता।

बकरीदी—बस जनाब, जब बादशाह को मालूम हुआ कि अफ़ीम के पहाड़ पत्थर के हो गए, इस वजह से ग़दर फैला हुआ है तो बादशाह ने इसकी वजह मालूम की कि ये पहाड़ पत्थर के क्यों हो गए। जब उसे पता लगा कि फ़क़ीर की दुआ से ऐसा हुआ है तो उसने उस फ़क़ीर की तलाश कराई।

ईदू—तलाश कराई ! वाह रे मेरे शेर। ख़ुदा उसे बिहिश्त अता करे। बड़ा अच्छा आदमी था। हाँ, तो फिर क्या हुआ ?

बकरीदी—बस जनाब, आदमी चारों तरफ़ दौड़ पड़े और उस फ़क़ीर को तलाश करके लाए।

ईदू—वाह-वाह ! वाह-वाह !! आदमी भी बड़ा खोजू होता है। ले बताइए न जाने कहाँ-कहाँ घूमे होंगे, तब वह फ़क़ीर मिला होगा।

गज्जू—आदमी सब कुछ कर सकता है। एक बार मेरी अफ़ीम की डिबिया खो गई। बस जनाब, मेरी जान निकल गई, गोया करोड़ों रुपए चले गए।

ईदू—डिबिया ख़ाली थी ?

गज्जू—अजी ख़ाली होती तो कम अफ़सोस होता, मगर उसमें पूरी एक तोला अफ़ीम थी।

बकरीदी—ऐ है। तब तो वाक़ई अफ़सोस की बात थी। अच्छा फिर ?

गज्जू—बस जनाब, मैंने तलाश शुरू की। ढूँढ़ते-ढूँढ़ते दो घण्टे हो गए। अब मैं सोचूँ कि न जाने वह डिबिया किस भाग्यवान के हाथ पड़ी होगी।

ईदू—बेशक, अफ़ीम से भरी डिबिया क्या आसानी से मिल जाती है ? जिसे मिले वह बड़ा ख़ुशनसीब है। हाँ फिर ?

गज्जू—बस साहब दो घण्टे बाद कोठरी में सन्दूक़ के नीचे मिली—चूहे घसीट ले गए थे।

बकरीदी—चूहे अफ़ीम के बड़े शायक़ (प्रेमी)

हास्यकला का चमत्कार ! हास्योपन्यासों का लकड़दादा !!

श्री० जी० पी० श्रीवास्तव

छप रहा है ! की छप रहा है !!

हास्यमयी लेखनी का अलौकिक चमत्कार !

लतखोरी लाल

छः खण्डों में

यह वही उपन्यास है, जिसके लिए हिन्दी-संसार मुद्दतों से छटपटा रहा था, जिसके कुछ अंश हिन्दी-पत्रों में निकलते ही अङ्गरेज़ी, गुजराती, उर्दू आदि भाषाओं में अनुवाद हो गए। क्योंकि इसके एक-एक शब्द में वह जादू भरा है कि एक तरफ़ हँसाते-हँसाते पेट में बल डालता है, तो दूसरी तरफ़ नौजवानी की मूर्खताओं और गुमराहियों की खिल्ली उड़ा कर उनसे बचने के लिए पाठकों को सचेत करता है। तारीफ़ है प्लाट-बन्धन की, कि कोई भी बात, जो नवयुवकों पर अपना बुरा प्रभाव डालती है, "श्रीवास्तव जी" के कटाक्ष से बचने नहीं पाई है। हँसी-हँसी में बुराइयों की सुन्दरता और सफ़ाई से धज्जियाँ उड़ा कर ज्ञान और सुधार की धारा बहा देना, कला की गोद में शिक्षा का छिपाए हुए ले चलना बस "श्रीवास्तव जी" ही की महत्वपूर्ण लेखनी का काम है। कहीं फ़ैशन और शान की छीछालेदर है, कहीं स्कूली बदकारियों पर फटकार है, कहीं वेश्यागमन का उपहास है, कहीं एक से एक रहस्यमय गुप्त लीलाओं का इतना सच्चा, स्वाभाविक और रोचक भण्डाफोड़ है कि सैकड़ों बार पढ़ने पर भी तृप्ति नहीं होती। प्रकृति की अनोखी छटा निरखनी हो तो इसे पढ़िए, हास्य का आनन्द लूटना हो तो इसे पढ़िए, कला की बहार देखनी हो तो इसे पढ़िए, स्वाभाविकता और सरसता का मज़ा लेना हो तो इसे पढ़िए, बुराइयों से बचना हो तो इसे पढ़िए, गुप्त लीलाओं का रहस्य जानना हो तो इसे पढ़िए, उत्कण्ठा और कुतूहल के समुद्र में डूबना हो तो इसे पढ़िए, भावों पर मुग्ध होना हो तो इसे पढ़िए और ज्ञान पर चकित होना हो तो इसे पढ़िए। इससे बढ़ कर हास्यमय, कौतूहलपूर्ण, आश्चर्य-जनक, रोचक, स्वाभाविक और शिक्षाप्रद उपन्यास कहीं भी ढूँढ़ने से न मिलेगा। फ़ौरन ऑर्डर भेजिए, हज़ारों ही ऑर्डर रजिस्टर हो चुके हैं। जल्दी कीजिए, वरना बाद को पछताना होगा।

छहो खण्ड एक ही पुस्तक में; मूल्य ४) मात्र ! स्थायी ग्राहकों से ३)

यह पुस्तक सुप्रसिद्ध मिस मेयो की नई करतूत है। यदि आप अपने काले कारनामों को एक विदेशी महिला के द्वारा मार्मिक एवं हृदय-विदारक शब्दों में देखना चाहते हैं, तो एक बार इसके पृष्ठों को उलटने का कष्ट कीजिए। धर्म के नाम पर आपने कौन-कौन से भयङ्कर कार्य किए हैं; इन कृत्यों के कारण समाज की क्या अवस्था हो गई है—इसका सजीव चित्र आपको इसमें दिखाई पड़ेगा। मूल्य ३); स्थायी ग्राहकों से २)

साहस और सौन्दर्य की साक्षात् प्रतिमा मेहरुन्निसा का जीवन-चरित्र स्त्रियों के लिए अनोखी वस्तु है। उसकी विपत्ति-कथा अत्यन्त रोमाञ्चकारी तथा हृदय-द्रावक है। परिस्थितियों के प्रवाह में पड़ कर किस प्रकार वह अपने पति-वियोग को भूल जाती है और जहाँगीर की बेगम बन कर नूरजहाँ के नाम से हिन्दुस्तान को आलोकित करती है—इसका वर्णन इसमें बहुत ही रोमाञ्चकारी भाषा में मिलेगा। मूल्य ॥)

☞ व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

होते हैं। निगाह पड़ भर जाय, बस फिर ले ही जायँगे। छोड़ेंगे नहीं।

मिट्ठू पीनक से चौंक कर बोला—छोड़ें क्यों? जहाँ पहाड़ खड़े हैं वहाँ क्यों छोड़ें? कुछ घाटा हुआ जाता है।

ईदू—वल्ला ख़ूब याद दिलाई। हाँ मियाँ बकरीदी, फिर क्या हुआ?

बकरीदी—काहे का क्या हुआ?

ईदू—अरे वही तुम जो कह रहे थे?

बकरीदी—क्या?

ईदू—अरे वही फ़क़ीर वाली बात!

बकरीदी—हाँ नह! हाँ तो जनाब—मैं कहाँ तक कह गया था?

ईदू—वही बादशाह फ़क़ीर को ढूँढने निकला!

बकरीदी—हाँ जनाब, बादशाह फ़क़ीर को ढूँढ़ने निकला। बस जनाब बादशाह चलते-चलते एक बयाबान जङ्गल में पहुँचा। ऐसा जङ्गल जहाँ आदमी न आदम-ज़ाद—फ़क़त ख़ुदा की ज़ात!

ईदू—सुभान तेरी क़ुदरत! हाँ फिर?

बकरीदी—बस जनाब, बादशाह ने देखा कि फ़क़ीर एक दरख़्त के साए में आँखें बन्द किए बैठा है और उसके चारों तरफ़ शेर बैठे हैं।

ईदू—शेर?

गज्जू—सचमुच के?

बकरीदी—हाँ, सचमुच के नहीं तो क्या मिट्टी के। मिट्टी के भी कहीं शेर होते हैं?

गज्जू—जे बात आप कैसे कहते हैं। लखनऊ के कुम्हार मिट्टी के ऐसे शेर बनाते हैं कि बिलकुल शेर के बच्चे मालूम होते हैं।

ईदू—अहा हा! लखनऊ के कुम्हारों की क्या बात है। ऐसे खिलौने बनाने वाले तो दुनिया के पर्दे पर नहीं हैं। विलायत वाले भी नहीं बना सकते।

बकरीदी—अजी विलायत वाले क्या ख़ाक बनाएँगे—किराए पर तो वह रहते हैं।

यह सुनते ही सब के कान खड़े हुए। ईदू मियाँ हुक़्क़े की निगाली छोड़ कर बोले—क्या कहा, किराए पर रहते हैं, यह कैसे?

बकरीदी—विलायत की सब ज़मीन तुर्कों की है, अङ्गरेज़ उसे किराए पर लिए हुए हैं। सालाना किराया देते हैं।

ईदू—ख़ुदा क़सम?

बकरीदी—ख़ुदा क़सम, मैं झूठ थोड़ा ही कहता हूँ। चाहे जिससे पूछ लीजिए, मगर हाँ, अङ्गरेज़ों के ख़ौफ़ से कोई अलानिया (प्रकट रूप में) यह बात न कहेगा। उससे ख़ुफ़िया तौर पर पूछिए—फ़ौरन बता देगा। जो न बतावे तो समझ लीजिए अङ्गरेज़ों से मिला हुआ है।

गज्जू—जे बात छिपाई क्यों जाती है?

बकरीदी—आप भी निरे चोंच ही रहे। इतना बड़ा बादशाह और किराए पर रहे। यह बात किरकिरे की है या नहीं?

गज्जू—ज़रूर है।

बकरीदी—तो बस। इसलिए छिपाते हैं कि यह बात ज़ाहिर होगी तो किरकिरी होगी। मगर मियाँ विलायत तो ऊजड़ गाँव है। न वहाँ अफ़ीम पैदा होती है, न पौण्डा, न रेवड़ी। आख़िर वहाँ कोई भलामानुस रहता कैसे होगा? अलबत्ता चाय होती है। मगर ख़ाली चाय से क्या होता है।

ईदू—जहाँ ये चारों न्यामतें हों—अफ़ीम, पौण्डा, रेवड़ी और चाय—बस उसे बिहिश्त समझना चाहिए।

बकरीदी—इसमें क्या शक है। भई हम तो चीन में जाकर रहेंगे। वहाँ अफ़ीम के पहाड़ हैं। मगर ख़ुदा जाने पौण्डा, रेवड़ी और चाय होती है या नहीं। पहले इसका पता लगा लेना चाहिए। ऐसा न हो कि बैरङ्ग लौटना पड़े। अफ़ीम का तो आराम है, जब चाहा पहाड़ से एक ढेला काट लाए। मगर पौण्डा, रेवड़ी वग़ैरह भी होना चाहिए। बिना इनके अफ़ीम का लुत्फ़ कहाँ।

ईदू—जी हाँ, यह तीनों चीज़ें तो चिनिया बेगम के ज़ेवर हैं।

इतना सुनते ही सब चिल्ला उठे। वाह-वाह! वाह! क्या कही है, चिनिया बेगम के ज़ेवर हैं। ख़ूब कही, कमाल की कही—क़लम तोड़ दिया। बल्कि क़लमदान का ही सफ़ाया कर दिया।

ईदू अकड़ कर बोले—यह शायरी है, शायरी! और मैं भला क्या ख़ाक कहूँगा—यह सब चिनिया बेगम कहला रही है।

मिट्ठू चौंक कर बोले—क्या कहा, चिनिया बेगम बुला रही हैं। कहाँ बुला रही हैं, चीन में? अजी राम भजो, वहाँ लड़ाई छिड़ी हुई है—वहाँ इस वक़्त कौन भला आदमी जायगा।

ईदू—वल्ला, ख़ूब याद दिलाई—क्यों मियाँ बकरीदी, वह चीन की जङ्ग का क़िस्सा क्या था? वह तो रह ही गया।
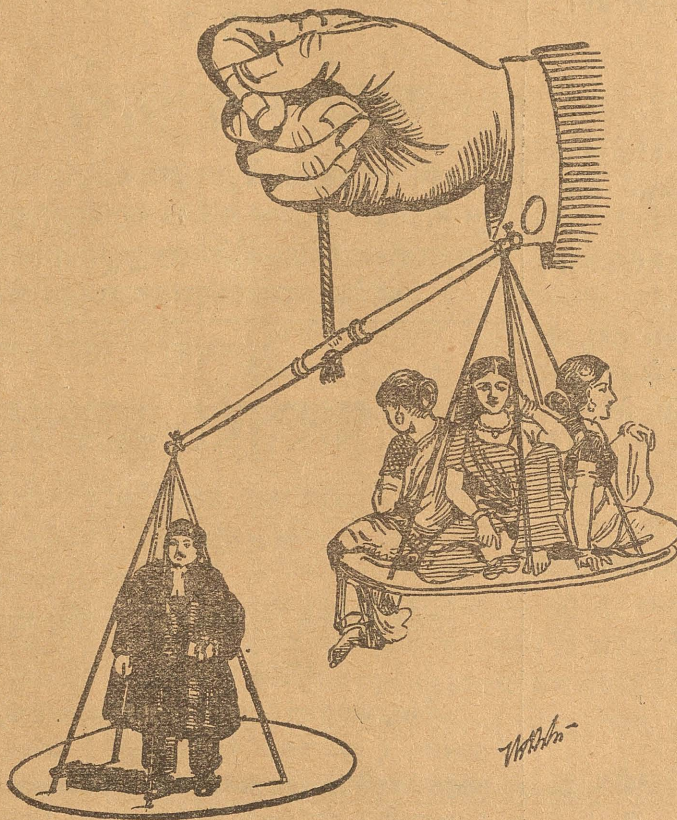
वकील बनाम वेश्या

(दोनों में समाज पर अधिक अत्याचार कौन करता है ?)

बकरीदी की आँखें बन्द हो रही थीं। अतएव वह बोला—मियाँ, इस वक़्त मत छेड़ो, इस वक़्त चिनिया बेगम की आग़ोश (गोद) में हूँ—फिर किसी दिन देखा जायगा। वह दास्तान भी सुनने लायक़ है, ज़रूर सुनाऊँगा।

ईदू मियाँ झल्ला कर बोले—बस इन्होंने तो जहाँ पी—गें हो गए। और यहाँ पेट में खलबली मची हुई है। अरे म्याँ, आदमी बैठे हुए हैं, कुछ बात करो। हाँ, वह ज़रा चीन की जङ्ग का क़िस्सा तो कह डालो—शाबाश है मेरे शेर!

बकरीदी—चीन की जङ्ग का क़िस्सा इतना ही है कि वहाँ जङ्ग छिड़ गई।

ईदू—आख़िर जङ्ग छिड़ने को वजह क्या है?

बकरीदी—अब यह न पूछिए। इसमें बड़े-बड़े राज़ (रहस्य) हैं।

गज्जू—क्या राज़ है, कुछ बताओगे भी।

बकरीदी—राज़ कुछ नहीं, राज़ यही है कि... (आँखें खोल कर) हाँ, मैं क्या कह रहा था?

ईदू—यही कह रहे थे कि चीन की जङ्ग में राज़ है, वह राज़ क्या है?

बकरीदी—हूँ, वह राज़ यही है कि चीन की अफ़ीम का महसूल अङ्गरेज़ लोग माँगते हैं, चीन इस बात पर राज़ी नहीं होता। चीन में तो अफ़ीम के पहाड़ हैं न, तो उनसे चीन को करोरहा रुपए सालाना महसूल के मिलते हैं। अब अङ्गरेज़ लोग यह कहते हैं कि उसमें से आधा हमको दो। चीन वाले राज़ी नहीं होते इसी बात पर जङ्ग छिड़ गई।

ईदू—यह बात तो बड़ी बेजा है, अङ्गरेज़ लोग आधा महसूल किस हक़ से माँगते हैं?

बकरीदी—मियाँ ज़बरदस्ती का हक़ है। अङ्गरेज़ चीन से कहते हैं कि अगर हमको आधा महसूल न मिलेगा तो हम हिन्दुस्तान में तुम्हारी अफ़ीम का बिकना बन्द कर देंगे।

ईदू—मआज़ अल्ला, यह ज़बरदस्ती। यह तो पूरी नादिरशाही है। और सुनिए, हिन्दुस्तान में अफ़ीम बिकना बन्द कर देंगे। इस अन्धेर का कोई ठिकाना है? तोबा-तोबा!

गज्जू—अच्छा अब समझ में आया। हिन्दुस्तान में अफ़ीम इसीलिए मँहगी बिकने लगी कि अङ्गरेज़ों को अफ़ीम का महसूल नहीं मिलता, जे बात है।

ईदू—और क्या, महसूल नहीं मिलता तभी तो यहाँ अफ़ीम मँहगी कर दी, उधर की कसर इधर निकालते हैं। अच्छा जो चीन महसूल देने लगे, तब तो शायद अफ़ीम सस्ती बिकने लगे।

बकरीदी—हाँ, इसमें क्या शक है।

ईदू—तब तो हम लोगों को दुआ करनी चाहिए कि चीन महसूल देने को राज़ी हो जाय या अङ्गरेज़ों से हार जायँ। तब तो अफ़ीम सस्ती हो जायगी। अल्लाह जानता है, जब से अफ़ीम मँहगी हो गई, अफ़ीम पीने का लुत्फ़ जाता रहा। अब तो महज़ दिल बहलाव रह गया है। मगर क्या, ऐसे पीने से न पीना भला है। वह मसल है—'नकटा जिए बुरे अहवाल!'

इसी समय एक मियाँ साहब आए और बकरीदी मियाँ के सामने बैठ गए। बैठते ही उन्होंने एक ज़ोर की जम्हाई ली। बकरीदी मियाँ यह देखते ही आग हो गए। बोले—ऐ है, सारा नशा काफ़ूर हो गया। इन मियाँ से हज़ार मर्तबा कहा कि नशे के वक़्त सामने बैठ कर न जम्हाया करो, मगर इनकी ऐसी नामाक़ूल आदत है कि जब जम्हाई लेंगे तब ऐन नाक के सामने—और ख़ास नशे के वक़्त। वल्ला जी चाहता है बोटियाँ नोच खाऊँ। सारा मज़ा किरकिरा हो गया। अब दो गण्डे और गलाने पड़ेंगे तब सुरूर गँठेगा। सुनते हो जी, तुम नशे के वक़्त यहाँ मत आया करो—वरना मुफ़्त में किसी दिन तकरार बढ़ जायगी। गँवार कहीं का! न मौक़ा देखे न वक़्त; आते ही भाड़ ऐसा मुँह फाड़ दिया। ऐसे आदमियों को तो यहाँ क़दम न रखने देना चाहिए। अब जो यहाँ बैठे उस पर लानत! अब घर जाकर चुस्की लगाएँगे। तोबा-तोबा—मुफ़्त में दो गण्डे की चपत लगी।

यह कह कर मियाँ बकरीदी उठ खड़े हुए, उनके साथ ही ईदू और गज्जू भी अपने-अपने घर की ओर चल दिए।

भवदीय,

—विजयानन्द (दुबे जी)

* * *

रोगी—डॉक्टर साहब! मुझे ऐसा नुस्ख़ा लिख दीजिए, जिससे मेरे ख़ून में गर्मी पैदा हो।

डॉक्टर—अच्छा, अब मैं अपनी फ़ीस का बिल भेज दूँगा।

* * *

पहली मेम साहबा—भला पुरुषों में तुम्हारा कोई हार्दिक मित्र भी है?

दूसरी मेम साहबा—था तो, मगर × × ×

पहली मेम साहबा—मगर क्या हुआ? क्या मर गया?

दूसरी मेम साहबा—नहीं, उसने शादी कर ली।

पहली मेम साहबा—किससे?

दूसरी मेम साहबा—मुझसे।

* * *

मित्र—कहिए मिस्टर, आपका लोहे वाला बॉक्स खुला, जिसकी चाभी खो गई थी; और जिसके खोलने में आप दिन भर परेशान थे?

मिस्टर—हाँ भाई, बड़ी तरकीब से उसे खुलवाया।

मित्र—क्या लोहार बुलाया था?

मिस्टर—नहीं जी, जब सब तरह से हार गया, तब मैंने कह दिया कि इसमें मेरी पूर्व-प्रेमिका के पत्र रक्खे हुए हैं। इतना सुनते ही न जाने कहाँ से मेरी बीबी में इतनी ताक़त आ गई कि उसने एक ही झटके में उसे खोल दिया।

* * *

बाप—इस दफ़े तुमने हिसाब का पर्चा कैसा किया?

लड़का—सिर्फ़ एक सवाल ग़लत है।

बाप—और कितने पूछे गए?

लड़का—दस।

बाप—बाक़ी नौ तो ठीक हैं न?

लड़का—नहीं, उन्हें तो मैंने किया ही नहीं।

* * *

बाप—तुम कहते हो कि इस साल ख़ूब मेहनत की थी, फिर कैसे फ़ेल हो गए?

लड़का—क्या करूँ, मास्टर ने इस साल भी इम्तहान में वही सवालात पूछे थे, जो पारसाल पूछे थे।

* * *

छात्र—क्यों जनाब, आप ही स्मरण-शक्ति बढ़ाने के उपाय बताने वाले प्रोफ़ेसर हैं?

प्रोफ़ेसर—हाँ भाई, मैं ही अभागा हूँ।

छात्र—अभागा कैसे?

प्रोफ़ेसर—क्या बताऊँ, एक हफ़्ता तक एक आदमी को मैंने स्मरण-शक्ति बढ़ाने की शिक्षा दी और वह कम्बख़्त चलते वक़्त मेरी फ़ीस ही देना भूल गया।

छात्र—आपको उस आदमी का नाम तो मालूम है न?

प्रोफ़ेसर—यही तो और भी अफ़सोस है कि उसका नाम मुझे याद नहीं है। तुम कैसे आए? क्या तुम भी मेरी शिक्षा से लाभ उठाना चाहते हो?

छात्र—चाहता तो था, मगर अब ज़रूरत नहीं मालूम होती।

* * *

[श्री० रमेशप्रसाद जी, बी० एस-सी०]

संसार में सब से बहुमूल्य कौन धातु है?

रेडियम संसार का सब से अधिक मूल्यवान धातु है। प्रायः ६० लाख रुपए में इसकी सिर्फ़ आधी छटाँक मिल सकती है। मूल्यवान धातुओं में इरीडियम को दूसरा स्थान प्राप्त है। 'फ़ौण्टेन पेन' की 'निब' की नोक इसी धातु की बनी होती है। इसी कारण वह जल्दी घिसती नहीं। प्रायः ४०० रुपए में इसकी आधी छटाँक मिलती है। प्लैटिनम तीसरा मूल्यवान धातु है। ३२०) रु० में यह आधी छटाँक मिलता है। सोना का चौथा नम्बर है। यह २३)-२४) रु० तोला बिकता है।

* * *

तरल हवा क्या है और वह किस काम में आती है?

हवा पर अत्यधिक दबाव और सर्दी डाल कर उसे तरल अवस्था में लाया जाता है। तरल हवा आजकल अनेक कामों में व्यवहृत होने लगी है। फल, मछली, मांस आदि विकृत होने वाले पदार्थ तरल हवा में बहुत दिनों तक अविकृतावस्था में रहते हैं, इसके द्वारा शून्य से ३०० डिग्री कम सर्दी प्राप्त की जा सकती है।

* * *

नाम ही से पुस्तक का विषय इतना स्पष्ट है कि इसकी विशेष चर्चा करना व्यर्थ है। एक-एक चुटकुला पढ़िए और हँस-हँस कर दोहरे हो जाइए—इस बात की गारएटी है। सारे चुटकुले विनोदपूर्ण और चुने हुए हैं। भोजन एवं काम की थकावट के बाद ऐसी पुस्तकें पढ़ना स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी समान आनन्द उठा सकते हैं। मूल्य १)

यह बहुत ही सुन्दर और महत्वपूर्ण सामाजिक उपन्यास है। वर्तमान वैवाहिक कुरीतियों के कारण क्या-क्या अनर्थ होते हैं; विविध परिस्थितियों में पड़ने पर मनुष्य के हृदय में किस प्रकार नाना प्रकार के भाव उदय होते हैं और वह उद्भ्रान्त सा हो जाता है—इसका जीता-जागता चित्र इस पुस्तक में खींचा गया है। भाषा सरल एवं मुहाविरेदार। मूल्य केवल २) स्थायी ग्राहकों से १॥)

समाज की चिनगारियाँ

एक अनन्त अतीत-काल से समाज के मूल में अन्ध-विश्वास, अविश्रान्त अत्याचार और कुप्रथाएँ भीषण अग्नि-ज्वालाएँ प्रज्वलित कर रही हैं और उनमें यह अभागा देश अपनी सदभिलाषाओं, अपनी सत्कामनाओं, अपनी शक्तियों, अपने धर्म और अपनी सभ्यता की आहुतियाँ दे रहा है। 'समाज की चिनगारियाँ' आपके समक्ष उसी दुर्दान्त दृश्य का एक धुँधला चित्र उपस्थित करने का प्रयास करती है। परन्तु यह धुँधला चित्र भी ऐसा दुखदायी है कि देख कर आपके नेत्र आठ-आठ आँसू बहाए बिना न रहेंगे।

पुस्तक बिलकुल मौलिक है और उसका एक-एक शब्द सत्य को साक्षी करके लिखा गया है। भाषा इसकी ऐसी सरल, बामुहाविरा, सुललित तथा करुणा की रागिनी से परिपूर्ण है कि पढ़ते ही बनती है। कहने की आवश्यकता नहीं कि पुस्तक की छपाई-सफ़ाई नेत्र-रञ्जक एवं समस्त कपड़े की जिल्द दर्शनीय हुई है; सजीव प्रोटेक्टिङ्ग कवर ने तो उसकी सुन्दरता में चार चाँद लगा दिए हैं। फिर भी मूल्य केवल प्रचार-दृष्टि से लागत मात्र ३) रक्खा गया है। स्थायी ग्राहकों से २।) रु०।

विधवा-विवाह-मीमांसा

अत्यन्त प्रतिष्ठित तथा अकाट्य प्रमाणों द्वारा लिखी हुई यह वह पुस्तक है, जो सड़े-गले विचारों को अग्नि के समान भस्म कर देती है। इस बीसवीं सदी में भी जो लोग विधवा-विवाह का नाम सुन कर धर्म की दुहाई देते हैं, उनकी आँखें खुल जायँगी। केवल एक बार के पढ़ने से कोई शङ्का शेष न रह जायगी। प्रश्नोत्तर के रूप में विधवा-विवाह के विरुद्ध दी जाने वाली असंख्य दलीलों का खण्डन बड़ी विद्वत्तापूर्वक किया गया है। कोई कैसा ही विरोधी क्यों न हो, पुस्तक को एक बार पढ़ते ही उसकी सारी युक्तियाँ भस्म हो जायँगी और वह विधवा-विवाह का कट्टर समर्थक हो जायगा।

प्रस्तुत पुस्तक में वेद, शास्त्र, स्मृतियों तथा पुराणों द्वारा विधवा-विवाह को सिद्ध करके, उसके प्रचलित न होने से जो हानियाँ हो रही हैं, समाज में जिस प्रकार जघन्य अत्याचार, व्यभिचार, भ्रूण-हत्याएँ तथा वेश्याओं की वृद्धि हो रही है, उसका बड़ा ही हृदय-विदारक वर्णन किया गया है। पढ़ते ही आँखों से आँसुओं की धारा प्रवाहित होने लगेगी एवं पश्चात्ताप और वेदना से हृदय फटने लगेगा। अस्तु। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल, रोचक तथा मुहावरेदार है; मूल्य ३)

ग्रह का फेर

यह बङ्गला के प्रसिद्ध उपन्यास का अनुवाद है। लड़के-लड़कियों के शादी-विवाह में असावधानी करने से जो भयङ्कर परिणाम होता है, उसका इसमें अच्छा दिग्दर्शन कराया गया है। इसके अतिरिक्त यह बात भी इसमें अङ्कित की गई है कि अनाथ हिन्दू-बालिकाएँ किस प्रकार ठुकराई जाती हैं और उन्हें किस प्रकार ईसाई और मुसलमान अपने चङ्गुल में फँसाते हैं। मूल्य ॥)

यह पुस्तक चौथी बार छप कर तैयार हुई है, इसीसे इसकी उपयोगिता का पता लगाया जा सकता है। इसमें वीर-रस में सने देशभक्ति-पूर्ण गानों का संग्रह है। केवल एक गाना पढ़ते ही आपका दिल फड़क उठेगा। राष्ट्रीयता की लहर आपके हृदय में उमड़ने लगेगी। यह गाने हारमोनियम पर गाने लायक़ एवं बालक-बालिकाओं को कण्ठ कराने लायक़ भी हैं। मूल्य ।)

☞ व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

Registered No. A—2085

Printed and Published by R. SAIGAL—(Editor), at the Fine Art Printing Cottage,
28, Edmonstone Road, Chandralok—Allahabad.